CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

VHP 5.3
ई० २१६
६५५

श्रीः

पी० ऐल० जौगरफी

अर्थात्

भूगोल भ्रमण भ्रांति तृतीय भाग की

भूमिका

प्रिय पाठको ! पी० ऐल० जौगरफी प्रथम भाग आपने देखा होगा वह बहुत संक्षेप में सामान्य रुचि वाले बडे २ विद्वानों के लिये लिखा गया है क्यों कि वह सामान्य लेख को ही अच्छी दृष्टि से देखते हैं। इस पर कितने ही भूगोल भ्रमण पक्षके मानने वाले पक्षपाती सज्जनों को सन्तोष न हुआ, उनके मेरे पास पत्र आये कि इसको विस्तार पूर्वक लिखो। यहां यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि तुमने विस्तार पूर्वक लिखाने वालों को पक्षपाती क्यों लिखा ? उत्तरः—प्रथम भाग में उनके सिद्धांत की ही साक्षी में ८० नम्बर दिखाये गये हैं जो उन के पढे हुये भी हैं। उनके परस्पर विरोध वा ऐसे अप्रमाण लेखों को जिनका कुछ ठिकाना नहीं ध्यान न देते और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न पढ़ते हुये विस्तार पूर्वक लिखाने की आकांक्षा की। भला यह पक्षपात नहीं तो क्या है जिन विरोधी नम्बरों को छोटे २ बालक भी समझ सकते हैं तो क्या उन को वह विद्वान नहों समझ सके क्या उन विद्वानों ने यह नहीं पढ़ा और उन का विवेचन नहीं किया ? जो पी० ऐल० जौगरफी के प्रथम भाग में स्पष्ट दिखाये गये हैं। विरोध प्रकट करने वाले नम्बर ऐसे।

नं० ५८, ३८, ५६
नं० २१, २२, १७
नं० १५, १८
नं० ३३, १८

आकर्षण शक्ति में विरोध करने वाले नंबर ऐसे।

४८, ३२, २४, २५, २६, ७८

मन गढ़न्त नंबर जिनका कुछ पता नहीं ऐसे नंबर

३७, ४०, ६२, ६३, ७२ इत्यादि। और भी जिन का जानना दुर्बीन आदि यंत्रों से असम्भव है। ये नम्बर अंगरेजी पढे विद्वानों को निपट सुगम हैं इस कारण उन को यहां नहीं लिखा है।

ऐसे २ लेख प्रथम भाग में ही दीख पड़ते हैं फिर उन को विस्तार पूर्वक कराने की आकांक्षा क्यों ? इस का यही कारण है कि जैसे कोरे घडे में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्याज रख दी जाय तो उसकी दुर्गन्धि उस में ऐसी प्रवेश कर जाती है कि चाहे फिर उस में कैसे ही सुगंधित पदार्थ कपूर चन्दनादि रक्खे जांय परन्तु उस में से प्याज की दुर्गन्धि का निकलना कष्ट साध्य है। ऐसे ही जिन को बाल्यावस्था में ही ऐसी २ बातें कि पृथ्वी घूमती है, दौड़ती हृदयाङ्कित होगई तो उन की यह वासना निकलना कष्ट साध्य है। चाहे उन को कैसी ही श्रेष्ठ सत्यार्थ उक्तियों से बताया जाय परन्तु वे उन को न समझ कर ऐसी नवीन नवीन मन घड़न्त युक्ति ढूंढते रहते हैं वा कह देते हैं कि फिर उन का आगे को निर्वाह कठिन हो जाता है ऐसे ही प्रथम भाग को समझते हुये भी इस को टाल डूल कर यह कहते हैं कि इस को विस्तार पूर्वक लिखो। अस्तु हमने द्वितीय भाग भी लिखा जिस में प्रथम भूगोल भ्रमण वादियों की स्वीकृत वार्त्ताओं से दोष वा उन की मानी हुई पुस्तकों की प्रमाणता से: लिख सब की सहनानो दिखाई है।

पश्चात् भूगोल भ्रमण वादियों की अनेक वार्त्ताओं में से ८० वार्त्ताओं को नम्बरवार दिखा उन के दोष और परस्पर विरोध के नम्बर दिखाये हैं।

तत्पश्चात् भारत के बड़े २ विद्वानों (जिन की चमत्कारी अकाट्य गणित विद्या संसार में प्रवेश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर रही है जिन की अंश मात्र शिक्षा से ही विदेशी गणितज्ञ बन रहे हैं) के वेदादि शास्त्रों की साक्षी से दिखाया है। उस में उन नामी पुरुषों की बहु सम्मति के देखने से यही सिद्ध होता है कि पृथ्वी स्थिर और ज्योतिष चक्र चर हैं। फिर ८० वार्त्ताओं में से स्थूल विरोधों को दिखाया है।

इस के पश्चात् भूगोल वाद का प्रचार बहुदेशों में कैसे हुआ इस का कारण दिखाया है। तत्पश्चात् भास्कराचार्य (जो वेदानुयायी थे) कृत सिद्धान्त शिरोमणि के अनुसार पृथ्वी का चित्र दिखाया है। इस के पश्चात् जो ज्योतिषी विद्वान पृथ्वी को केन्द्र मान कर ज्योतिष चक्र चर बताते हैं उन के चित्र दिखा कर द्वितीय भाग सम्पूर्ण किया है।

प्रिय पाठको! अंगरेज़ी पढे विद्वान तो प्रथम भाग ही के अवलोकन से भूगोल भ्रमण करती है इसमें भ्रांति समझ गये होंगे परन्तु जिनकी समझ में प्रथम भाग से न आया उनके आग्रह से द्वितीय भाग भी लिखा गया। वह दोनों भाग इस विद्या के प्रेमी विद्वानों को दिये गये और जिन्होंने मंगाये उनको विना मूल्य भेजे गये। दोनों भाग पहुंचने पर भी जो लिखते हैं कि इसका विशेष तृतीय भाग लिखो सो यह नहीं मालूम होता कि किस आन्तरिक वासना से लिखते हैं। क्योंकि अङ्गरेजी में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एंट्रेंस की डिगरी हासिल करने में जो जौगरफ़ी पढ़ाई जाती है सो प्रायः इसमें है, इसके सिवाय जो और पुस्तकों के लेख हैं वह भी समझ सकते हैं फिर एंट्रेंस से ऊंची डिगरी एफ़०, ए०, बी०,ए० एम०, ए० आदि पढ़े हुये बडे जैन विद्वान साहब दो भाग देख कर भी क्यों लिखते हैं कि इसका विशेष तृतीय भाग लिखो। यह केवल उनके पक्ष-पात का नमूना है क्योंकि वह प्रथम भाग देखने से ही समझ गये होंगे कि भूगोल भ्रमण बाद का पक्ष विरोध वा दूषणों से ग्रस्त अतीव निर्बल है क्योंकि हमारे यहां पृथिवी गोल भ्रमण करती हुई और सूर्य स्थिर नहीं माना है परन्तु उस धर्म को बिना जाने और शास्त्रों को बिना बिचारे वह धर्म की रक्षा की बे परवाही कर के और अपने को बडे विद्वान बडे पदवी धारक जैन्टिलमैन समझ कर मुख से पक्षपात को नहीं छोड़ना चाहते इसी कारण उक्त लेखों पर कोई न कोई टालम टूल करते हैं सो ऐसा करने से कभी असत्यार्थ का प्रचार और सत्यार्थ का तिरोभाव नहीं हो सकता। अन्त में सत्यवाद की जय होती है। धर्म शास्त्रों को भूले हुये भूगोल भ्रमण विद्या के पाठी जैन साहिबों के लिये अब भी पी० ऐल० जौगरफी का तृतीय भाग विशेष रूप से दिखाते हैं जिस से सर्वसाधारण पुरुष भी सुगमता पूर्वक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समझ कर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करेंगे और अपने जैन शास्त्र जो बडे विस्तार पूर्वक भू ज्योतिष चक्र को दिखाने वाले हैं, तिन को श्रद्धा पूर्वक देख अपना दृढ़ श्रद्धान कर कल्याण सुख का मार्ग सम्यक दर्शन ताहि नहीं छोडेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री

पी० एल० ज्योगरफी तृतीयभाग

अर्थात्

भूगोल भ्रमण भ्रान्ति

तीसरा भाग।

विशेष विवेचना।

नम्बर १

वादी—पृथ्वी गोल, दोनों तरफ सिरों पर चपटी नारंगी के आकार की, घूमती हुई है।

विवेचना

प्रतिवादी—पृथ्वी गोल घूमती हुई नारंगी के आकार की नहीं है क्योंकि गोलाकार पर पानी समस्थल रूप (Level) में नहीं ठहर सकता। कारण—गोलाकार में परिधि में ऊंचाई निचाई पाई जाती है। देखो चित्र संख्या १

वादी—पानी गोलाकार पर ही समस्थल रह सकता है। कारणकेन्द्र (ce nter) के सब तरफ़

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समान लम्बी रेखाओं से बनाया गया है उस में ऊंचा नीचापन नहीं है इस लिये गोल ही पर पानी समस्थल रहता है ।

प्रतिवादी—यदि गोलाकार पर पानी समस्थल रहता है-ऊंचा नीचा नहीं रहता है तो पानी में किसी जगह गढे न होने चाहियें और गढे तुम्हारे माने गये हैं।

वादी—किस जगह पर। देखो चित्र संख्या २

प्रतिवादी—देखो नं० १८-दक्षिणी उत्तरी पोलों में पृथ्वी का व्यास २६ मील कम यानी ७८०० मील माना है तो १३ मील एक तरफ़ की निचाई में गढ़ा हुआ, तब उस में पानी भरा रहना चाहिये। यदि पानी भरा माना जाय तो ७८२६ मील का व्यास (diameter) कहना चाहिये और पोलों में बर्फ वा पृथ्वी मानी जाय तो व्यास ७८२६ मील से अधिक मानना चाहिये। क्योंकि बर्फ वा पृथ्वी पानी से ऊपर रहती है।

इस कारण पृथ्वी का व्यास दक्षिणोत्तर ७८०० मील मानना असत्यार्थ ठहरा।

वादी-पृथ्वी तो गोल ही है और पानी भी गोल ही पर ठहरता है, परन्तु पृथ्वी जो घूमती है इस कारण घूमने से दोनों तरफ गढे पड़ने से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

(नक्शा समधरातल बनाने की रीति)

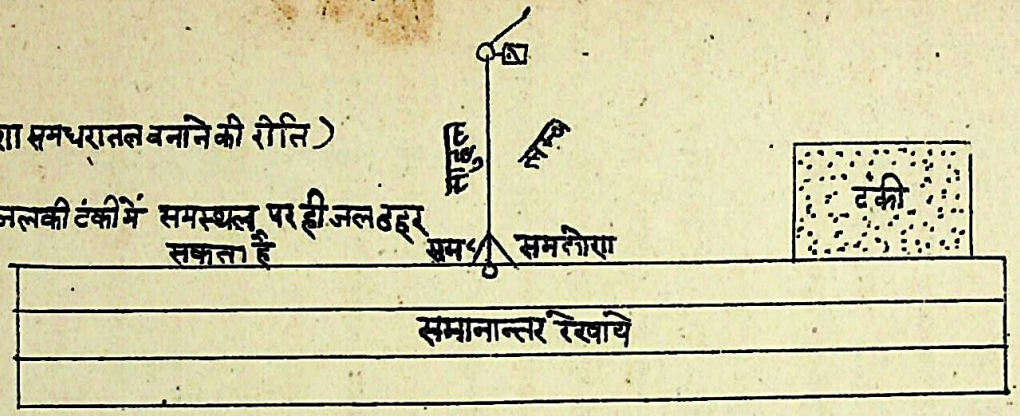

केन्द्र से समानलम्बी रेखाओं से गोलाकार बनता है

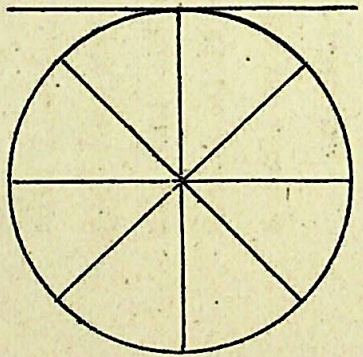

समानलम्बी रेखा होते हुये भी बीचकी रेखा ऊंची है और सब नीची हैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

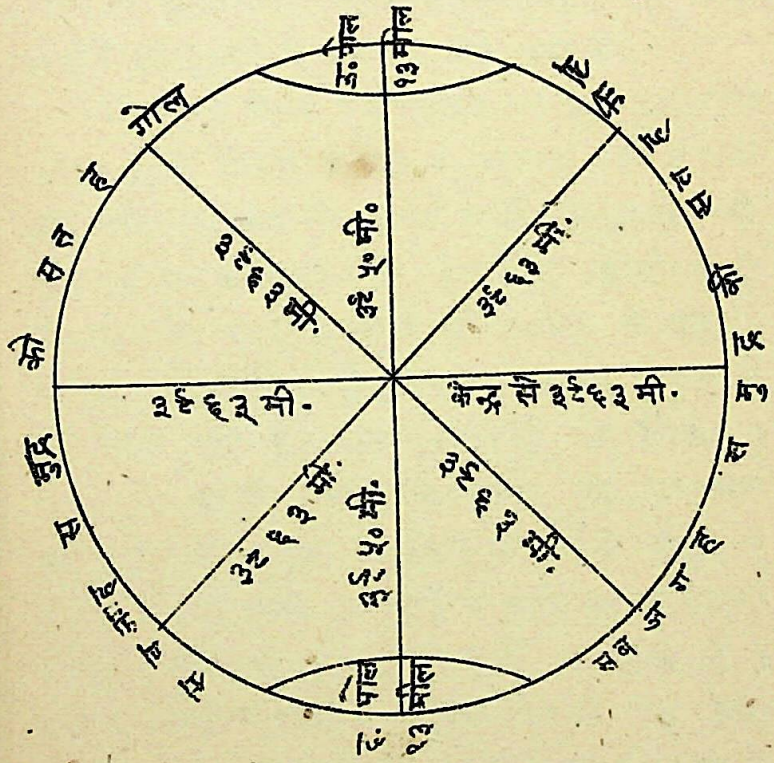

१३ मील पानी होना चाहिये क्योंकि केन्द्र की रेखा छोटी होने के कारण यहां नीचा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चपटी हो गई है तब व्यास ७८०० मील का मानना संभव है ।

उदाहरण—जैसे एक पानी का भरा लोटा घुमाया जावे तो घूमती वार उसके पानी मेंगढ़ा पड़ जाता है तैसे ही पृथ्वी में भी गढ़ा पड़ गया है ।

प्रति-यह अपने पक्ष साधन को जो उदाहरण दिया है वह विषम है पक्ष में व्यापक नहीं है क्यों कि लोटा की घूम तो ऊर्ध्व अधो है-पृथ्वी की घूम इस प्रकार मानी नहीं है । यदि ऊर्ध्व अधो ही मान ली जाय तो ऊर्ध्व और अधो के समुद्रों में गढे पड़ने चाहियें, सो तुमने किसी समुद्र के जल में गढे लिखे नहीं हैं । यदि बताये हैं तो लिखो । देखो नं० १५ में पानी गोलाकार पर समस्थल रहता है । यह कहना बाधित है इस से समुद्र के पानों में कहीं नीचे गढे नहीं हैं इसी कारण उत्तरी दक्षिणी पोलों में जो गढे लिखे हैं असम्भव है । यदि दायें वायें घूमने से पोलों में गढ़ा पड़ गये, यह भी ठीक नहीं, क्योंकि पोलों में समुद्र का पानी माना नहीं है तब लोटे की तरह उदाहरण में पानी में गढ़ा पड़ा कहना विषम उदाहरण क्यों नहीं है । यदि बिना पानी के ही गढ़ा माना जाय तो यह भी असम्भव है क्योंकि पत्थर या मिट्टी या काठ का गोला जो पृथ्वी रूप हो कैसा ही घूमता क्यों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न हो उस में गढ़ा नहीं पड़ सकता, यह प्रत्यक्ष देखा जाता है। इस कारण वादियों के संकल्प रूप मन गढ़न्त हेतु जिन से पृथ्वी को नारंगी की तरह गोल, घूमती मानना मिथ्या भ्रांति रूप है

किञ्च-यदि पृथ्वी गोलाकार घूमती होती तो कुरुक्षेत्र की भूमि जो एक गोलाकार के मध्य स्थान में है वहां से गंगा पूर्व गामिनी होकर कलकत्ते के समुद्र में ८०० मील जाकर न मिलती; तैसे ही पश्चिमगामिनी सिन्धु गंगा के विरुद्ध गोमिनी ८०० मील चल कर किरांची के समुद्र में न मिलती, यह तो घूमने पर प्रत्यक्ष दोष हैं। दूसरे गणित से महा भारी दोष आता है। कुरुक्षेत्र से कलकत्ता के समुद्र की सतह ८०० फीट नीची वादी ने मानी है। जिस से गंगा नदी का बहाव १ मील में १ फीट के क़रीब सम्भव है परन्तु पृथ्वी को गोलाकार मानने से तो कुरुक्षेत्र से कलकत्ता की भूमि ५२७०० पांच लाख सत्ताईस हजार फीट नीची होती हैं गणित से देखो: पृथ्वी का व्यास ८००० मील, परिधि २५००० मील भूगोल वादी ने मानी है। कुरुक्षेत्र से कलकत्ता ८०० मील और किरांची ८०० मील दूर है जिसकी छोटी परिधि १८०० मील हुई। जीवा कुल कम होने से १७५० मील जिसका वान ५२७०० फ़ीट के करीब होने से कलकत्ता वा किरांची

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की भूमि कुरुक्षेत्र से ५२७००० फ़ीट नीची होती है। तब इतनी नीची पृथ्वी होने से गङ्गा का, वा सिंधु का बहाव कितने वेग से बढ़ता है। इसका कुछ विचार न करके मन माना कोई लिख दिया। ऐसे बड़े २ दोषों से निश्चय होता है कि पृथिवी न गोल है न घूमती है। पृथिवी समस्थल और स्थिर है।

वादी—पृथिवी गोलाकार साफ़ खराद की सी उतरी नहीं है उसमें कई पहाड़ वा जमीन के टीले ऊंचे और कहीं समुद्र वा झील नीचे हैं। इस कारण कुरुक्षेत्र की भूमि कलकत्ते और किरांची के समुद्र से करीब ८०० फीट ऊंची है। वहां से निकली गङ्गा को पूर्व की तरफ रास्ता नीची ढाल का मिला और सिंधु को पश्चिम की तरफ नीचा मिला इस कारण वे अन्त में जहां समुद्र मिला वहां मिल गईं।

प्रति—गोलाकार घूमती में तो जिधर ढाल (नीचा) होता है उधर ऊंचा, और ऊंचा होता है उधर नीचा हो जाता है इस लिये यह हेतु प्रत्यक्ष असत्यार्थ भ्रांति रूप है।

वादी—पृथिवी घूमा करो घूमने से तो पृथिवी पर सर्व ही पदार्थ घूमते हुये भी अपना अपना कार्य करते हैं जल का स्वभाव भी नीचे ढलने का है, प्रत्यक्ष देखा जाता है। इस कारण गङ्गा सिंधु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को जहां तक ढाल (निचाई) मिला वहां तक चली गई।

प्रति—जो पृथिवी के घूमने पर भी ऊंचाई निचाई नहीं मानते हो तो ऊंचाई निचाई किसको मानते हो, जो पानी को निचाई (ढाल) पर बहता कहते हो--(देखो नं० १६) पानी सब से नीची सतह को बहता है। वह नीचा क्या है? हम तो प्रत्यक्ष देखते हैं कि गोल वस्तु में ऊपरले भाग पर एक वस्तु रखदें तो घूमने पर गिर पड़ेगी--कारण जो ऊंचा है वह नीचा हो जाता है।

वादी—गोलाकार में तो ऊंचा नीचा होता ही नहीं परन्तु पानी का ढाल जो नीचे को माना गया है वह ऊंचा नीचा गोलाकार में केन्द्र(Center) से लम्बी रेखा पर है ऊंचा जैसे पहाड़ वा टीला पृथिवी टापू और छोटी रेखा पर नीचा जैसे गढ़ा वा झील समुद्र का तल भाग। ऐसे केन्द्र की रेखाओं से ऊंचा नीचा माना गया है।

इस कारण केन्द्र से कुरुक्षेत्र भूमि की रेखा ३९६३ मील से ९०० फीट अधिक और कलकत्ता किराँची के समुद्र की रेखा केन्द्र से ३९६३ मील ही पर है इस लिये ९०० फीट समुद्रों की रेखा नीची होने के कारण गंगा सिंधु दोनों को ९०० मील में ९०० फीट ढाल मिला। वहां फी मील एक फुट के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ढाल से जा ठहरी जो प्रत्यक्ष सत्यार्थ है क्यों कि नहर या बंबों में ८ इंच का ढ़ाल फी मील दिया जाता है तब पानी सगचाल पर चलता है। शेष चार इंच में कहीं झाल कहीं पानी का बेग अधिक है, इस कारण ढाल १ मील में १ फुट ठीक है।

प्रति—कुरुक्षेत्र से इतनी नीची पहुंचने पर उन का पानी नीचे को क्यों नहीं टपक गया जैसे गोले पर ढलते २ नीचे को टपक जाता है।

वादी—अवश्य टपक जाता परन्तु पृथ्वी में एक आकर्षण शक्ति (Granilation) ऐसी है जो सर्व पदार्थों को अपनी ओर खींच लेती है। जैसे चुम्बक पत्थर लोहे को अपनी तरफ खींच लेता है। ऐसे पृथ्वी की आकर्षण से खिंचा हुआ पानी नीचे को नहीं टपकता और उस शक्ति का बल केन्द्र के पास अधिक और दूरी पर कम हो जाता है।

इस कारण आकर्षण शक्ति से पानी का खिंचाव होता है कुरुक्षेत्र की भूमि केन्द्र से अधिक दूर होने से केन्द्र के पास जो समुद्र है उस आकर्षण शक्ति के कारण पानी की ढाल नीचे को कही है। गोल पदार्थ में कुछ ऊंची नीची ढाल नहीं है।

प्रति—यदि आकर्षण शक्ति का यह स्वभाव है कि वह कुरुक्षेत्र के जल को वहां से समुद्र में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जो केन्द्र के पास है) खींच लेता है क्यों कि कुरु-क्षेत्र तो आकर्षण शक्ति के केन्द्र स्थान से ३९६३ मील ९०० फीट दूरी पर है और समुद्र ३९६३ मील दूर है वहां से वह शक्ति ९०० मील दूरी पर समुद्र की ऊपरली सतह तक खींच कर ले आई ९०० मील से ९०० फीट निचाई पर। यह आकर्षण शक्ति वादियों की यदि सत्यार्थ मानी जाय तो उन की मानी उत्तरी दक्षिणी पोल जो केन्द्र से ३९५० मील दूरी पर है उस में सर्व ओर का आया हुआ पानी भर जाना चाहिये क्यों कि पृथ्वी पर सिवाय पोलों के कोई स्थान केन्द्र के पास नहीं माना है। तब आकर्षण से खिंचे हुये पानी को कौन रोक सकता है अथवा वादी पोलों के चारों तरफ कोई ऊंची भीति या ऊंचा पहाड़ संकल्प कर के लिख देता तो पोलों में पानी न भरता और न उन के मन माने कल्पित सिद्धान्तों में शंका होती, जो कि उन्हों ने माने हैं। पृथ्वी का पूर्व पश्चिम व्यास ७९२६ मील, उत्तर दक्षिण ७९०० मील दक्षिणी उत्तरी पोल १३, १३ मील गहरी है। इत्यादि सर्व संकल्पों की साचवट बनी रहती। सो यदि पोलों में पानी भरा माना जाय तो उत्तरी दक्षिणी व्यास ३८२६ मील ठहरने से प्रतिज्ञा हानि होगी क्योंकि उत्तरी दक्षिणी व्यास ७९००मील माना है। वादीने पोलों के चारों तरफ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

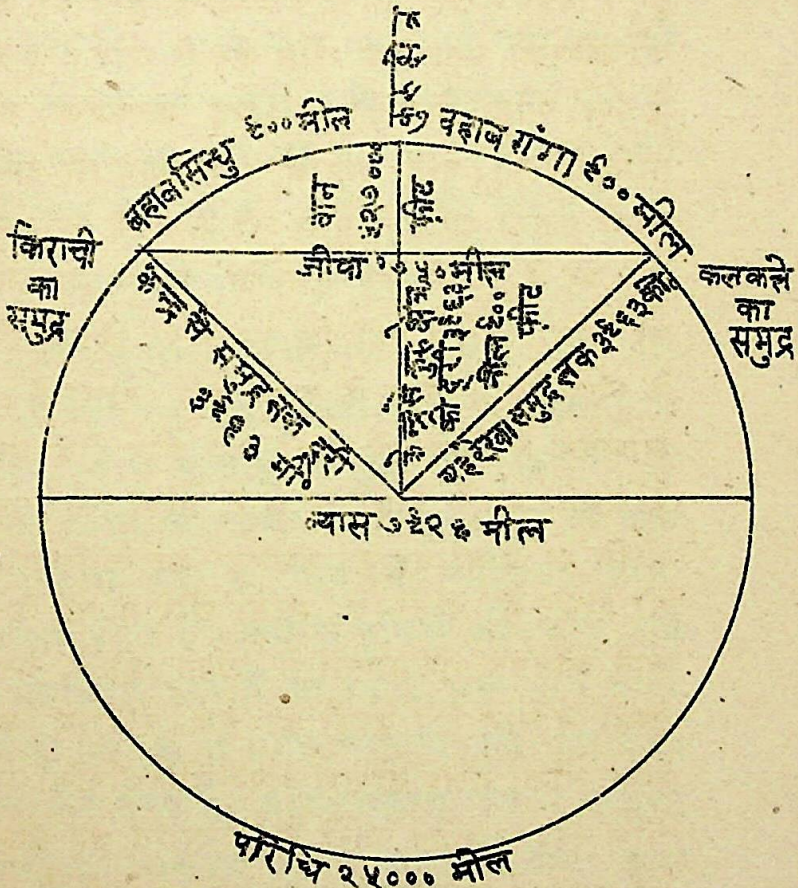

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भीत या पहाड़ माना नहीं, तब पोलोंमें पानी क्यों कोई न भरा माना जाय। यह सर्व कल्पना उक्त वाद से ज्ञात होती है कि पोलों में पानी नहीं है, न उसकी कुछ खबर है उत्तरी पोल तक कोई गया ही नहीं जिस पर भी सर्व कथनी करने को बहुज्ञानी बन कर कथन करना यह कहां तक सत्यार्थ माना जाय ? सर्व महा शंका का स्थान होने से भ्रांति रूप है।

किञ्च—पृथिवी के घूमने पर।

प्रति-भूगोल नारंगी के आकार की और घूमती नहीं है। यदि पृथिवी वादी के कथनानुसार १ मिनट में १७ मील घूमती हुई और २४ घंटे में अपनी कीली पर चक्कर करती हुई मान ली जाय तो चन्द्रमा का २८ दिन में प्रदक्षिणा करना असम्भव होता है। क्योंकि पृथिवी की चाल सूर्य की प्रदक्षिणा करने में फी मिनट १११० मील मानी है देखो नं० १३, १४। तब चन्द्रमा की प्रदक्षिणा करना कैसे संभव है। यदि आकाश खंड में चन्द्रमा पृथिवी की आकर्षण रूप शलाका से बंधा हुआ घूमता है तो २४ घंटे में पृथिवी के साथ घूम पूरी होनी चाहिये। यदि आकर्षण की शलाका से बंधा नहीं घूम रहा है तो पृथिवी की प्रदक्षिणा देना असाध्य है क्योंकि जब उस की प्रदक्षिणा में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्द्रमा पूर्व दिशा से मुड़ कर जायगा तो १४ दिन में घूम के पश्चिम पथ में आ गया तब पृथिवी १४ दिन में लाखों मील पूर्व को दौड़ी जायगी और चन्द्रमा पश्चिम को दोड़ जायग इस लिये यह चन्द्रमा बहुत काल में पृथिवी की प्रदक्षिणा नहीं दे सकता ।

वादी-तुम्हारी समझ में नहीं आता, स्कूल वा कालिजों में जा कर इस के यंत्रों को देखो तब समझ में आ जायगा ।

प्रति—स्कूल में जाकर यंत्र भी देख लिये हैं उन्हीं के देखने से तो असम्भवता दीख पड़ती है यंत्र में पृथिवी के ऊपर एक शलाका खड़ी करके चन्द्रमा का बिम्ब उस पर रख दिया है । वह शलाका पृथिवी पर दीखती नहीं है जिस पर चन्द्रमा रक्खा हो । यह सोच कर पूछा कि यह शलाका क्या है ? तब उत्तर मिला कि यह पृथिवी की आकर्षण रूप शलाका है दृष्टि नहीं पड़ती जैसे चुम्बुक की आकर्षण शक्ति दृष्टि नहीं पड़ती परन्तु लोहे के कणों के लिये शलाका रूप होती है तैसे ही पृथिवी की आकर्षण रूप शलाका पर चन्द्रमा पृथिवी के साथ घूमता है । इस से तो पृथिवी की चाल के सदृश ही चन्द्रमा की गति होनी चाहिये, वह २८ दिन में घूमता कैसे बताया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Nāria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

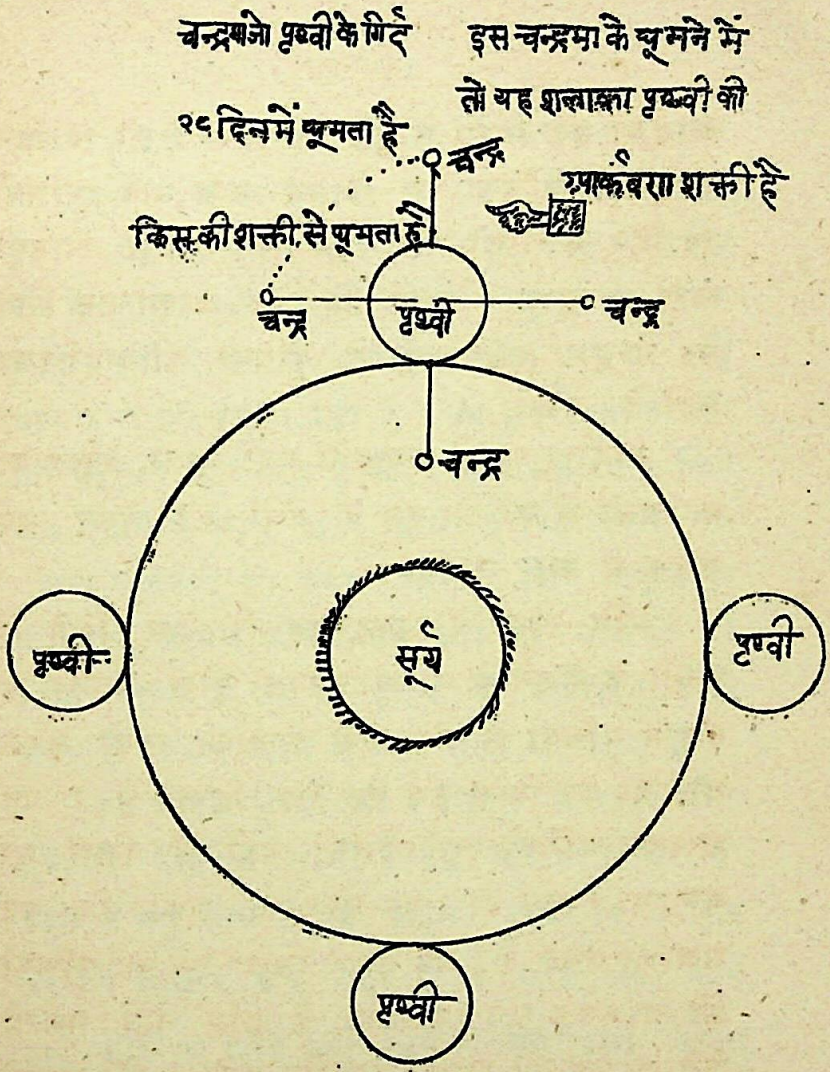

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बताया। इस के लिये दूसरे पत्र में लगाकर चन्द्रमा को दूसरी चाल पर घुमाया तब पूछा कि यंत्र क्या है ? उस का उत्तर नहीं। क्योंकि यदि आकर्षण को बतलाता तो पूर्व की भाँति चन्द्रमा की चाल नहीं बनती है उस में आकर्षण शक्ति चन्द्रमा की एक चाल को दिखा रही है। यह दूसरी चाल को जो पहिली के विरुद्ध है कैसे दिखलावे। इस लिये यंत्र देखने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि अपने मन गढ़न्त संकल्पों को स्पष्ट करने के लिये स्कूल वा कालिजों में यंत्र और नक़शे बना कर बालकों को दिखा दिखा के उन के हृदय में उत्कीरित किये जाते हैं विचार करने से महा शंका के स्थान हैं।

इस कारण पृथ्वी जो १ मिनट में १११० मील दौड़ती वादी ने मानी है उस की प्रदक्षिणा २८ दिन में कर लेता है यह कहना असम्भव है तिस पर भी निर्धार रूप नहीं है। कोई २७$\frac{1}{4}$ कोई २७$\frac{1}{3}$ कोई २८ कोई २८$\frac{1}{2}$ दिन में प्रदक्षिणा करना लिखते हैं इस से ये सब मन माने विकल्प हैं। देखो चित्र

वादी—चन्द्रमा प्रदक्षिणा देता हुआ अपनी शीघ्र चाल से पृथ्वी के साथ दौड़ता भी जाता है और प्रदक्षिणा भी कर लेता है उस की चाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बड़ी तेज़ है। इस में कुछ भ्रम नहीं है। गगन में चाहे जैसी चाल हो कोई रोक नहीं सकता है। इस से मन माने संकल्प नहीं हैं सत्यार्थ हैं।

प्रति-गगन में तेज़ चाल को रोकने वाला कोई नहीं है और चन्द्रमा की शीघ्र चाल बताई है वह भी जानी। परन्तु अपने कहे सिद्धान्त को विचारो जो निर्मूल हुआ जाता है। यदि चन्द्रमा की ऐसी तेज़ चाल है कि पूर्व मुखी पृथ्वी की चाल १११० मील १ मिनट में उस के साथ दौड़ता भी है और आप उस की प्रदक्षिणा में उस के विरुद्ध १४ दिन चल कर फिर भी उस के साथ को नदी छोड़ता तब उस की चाल १ मिनट में लाखों मील होने पर उस की छाया पड़ने से सूर्यग्रहण सर्व ग्रासी चिरस्थाई (घंटों तक होने वाला) कैसे होगा? चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण इन दोनों सिद्धान्तों का गला घुट कर अस्तव्यस्त हुआ जाता है इस से पृथ्वी की प्रदक्षिणा २८ दिन में चन्द्रमा देता है यह विचार कि ये असम्भव है। इस लिये वादी ही के मत से हेतु असत्यार्थ होने से पृथ्वी न गोल है न भ्रमण करती है। यह सिद्ध हो गया। इस कारण वादी का कहना भ्राँति रूप है।

किञ्च-चन्द्रमा की प्रदक्षिणा महाश्चर्यकारी जो असम्भव है छोटे २ विद्यार्थी जो ऐन्ट्रेंस क्लास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(Entrenee Class) तक के उन बाल बोधों के हृदय में यद्वा तद्वा छोटी २ लोंगमैन (Longman) मैन्यूअल (Manual) आदि जौंगरफी द्वारा हेतु दे देकर ऐसी उकीरित की जाती है कि उनके सम्मुख कैसा ही ज्योतिषी विद्वान पृथिवी की प्रदक्षिणा में चन्द्रमा नहीं दौड़ता है" कहै तो सुन कर प्रथम तो उस पर दृष्टि पात करना बड़ा भारी भार समझते हैं और उस से वार्तालाप करने में तो अपना गौरव ही नष्ट मानते हैं। यह व्यवस्था तो छोटे २ स्कूलों (Schools) में पढ़ने से होती है तदन्तर एफ० ए० बी० ए० आदि की डिगरी हासिल करने को जब बड़े २ विद्यालयों (Colleges) में पढ़ने भरती होते हैं तब वहां बड़े २ विद्वानों (प्रौफेसरों) की बनाई पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं उन में तो जो जो असंभव (न होने योग्य) वार्त्ता सिखाई जाती हैं। वह अपनी पूर्व वासना से असंभवता पर दृष्टि नहीं डालते, परन्तु, अपने मन माने संकल्पों से नवीन नवीन संकल्प उत्पन्न कर उन को सिद्ध करने की चेष्टा किया करते हैं। अब एक असंभव वार्त्ता का संभव होना असंभव है। वह क्या है? सुनिये।

प्रिय पाठको! ध्यान देकर पढ़ना ही श्रेयष्कर है दौड़ती पृथ्वी की चन्द्रमा का प्रदक्षिणा देना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असम्भव है। जिस को दिखा चुके हैं वह वार्ता तो छोटी सी थी क्यों कि पृथ्वी छोटी, चन्द्रमा छोटा, चाल घूम दौड़ छोटी, छोटी सी ही वार्ता, छोटा ही स्कूल जिस में छोटे दर्जे वालों को पढ़ाई गई। अब सुनिये बड़ी वार्ता देखो नं० ५६, में पहले सूर्यको स्थिर मानते थे तब तो पृथ्वी की प्रदक्षिणा देना सुगम था। अब मिस्टर सर रौबर्ट ऐस० बाल (Sir Robert. S. Ball) की रची "दी स्टोरी हैविन्स" पुस्तक में हार्सल साहब लिखते हैं कि सूर्य भी आध घंटा में १०००० मील लिरा (Lyra) की तरफ दोड़ रहा है, अब इस दौड़ में चन्द्रमा की दौड़ की तो असम्भवता पृथ्वी की प्रदक्षिणा में देना पिष्टपेषण है परन्तु पृथ्वी दौड़ कर प्रदक्षिणा ३६५$\frac{१}{४}$ दिन में कर ले यह सम्भवित हो सकती है ? कदापि नहीं। बुद्धिमान आप उन की दौड़ों की चालों को समझ लेंगे।

पृथ्वी की चाल १ मिनट में १११० मील सूर्य की चाल १ मिनट में ३३३$\frac{१}{३}$ मील, ऐसी अत्यन्त वेग की चाल से प्रदक्षिणा के समय विरुद्ध दो चाल १८२$\frac{१}{२}$ दिन की कैसे संभव हो सकती है। असंभव कहना भी एक सत्य में तुच्छ है। इस कारण उक्त वार्त्ता भ्रांति रूप है। इस से भी अधिक एक भ्रांति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूप वार्त्ता है उस का पाठक गण भली भांति विचार करेंगे। वह क्या है ? वह यह है कि सूर्य की आकर्षण से बंधी पृथ्वी और पृथ्वी की आकर्षण से बंधा चन्द्रमा यदि मान भी लिया जाय क्योंकि सूर्य और पृथ्वी एक बड़े पिंड हैं। इन की आकर्षण शक्ति से घूमते होंय। यदि गणित से देखा जाय तो देखो नं० २० में आकर्षण शक्ति को सूर्य से ८३००००० मील दूरी पर आकर्षण की शक्ति अति न्यून होने से पृथ्वी को नहीं घुमा सक्ती। परन्तु इस मन गढ़न्त को 'दुर्जन संतोष न्याय' कर स्वीकार भी करी जाय। परन्तु विचार शील पाठको देखो नं० ५८, ५९ जो सूर्य से २७८९०००००० दो अरब अठत्तर करोड़ ९० लाख मील दूरी पर नैपच्यून सितारा जिस पर आकर्षण शक्ति का सूक्ष्म नाम मात्र ही गणित से जोर रहता है। न वहां वायुमंडल ही माना है। यह वायुमण्डल और आकर्षण पृथ्वी आदि घुमाने में और पक्ष साधन में भूगोल भ्रमण वादियों ने बड़े प्रबल हेतु माने हैं। उन दोनों का वहां जोर नहीं फिर वह नैपच्यून सितारा ६०१२७॥ दिन में उस सूर्य की प्रदक्षिणा देता है और वह सूर्य स्थिर नहीं। आध घंटे में १०००० मील लिरा की तरफ दौड़ रहा है देखो नं० ५६। उस सूर्य की प्रदक्षिणा (चारों तरफ घूमना) उक्त दिनमें क्या किसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकार संभव है ? कदापि नहीं । महा भ्रम रूप होने से भ्रांति रूप है ।

जब ऐसी ऐसी भ्रान्ति रूप वार्त्ता जिन पुस्तकों में मन गढ़न्त हैं उन पर कैसे विश्वास किया जाय कि यह श्रद्धा के योग्य हैं । यह गणित से वा विवेचन करने से भ्रान्ति रूप दृष्टि होती है ।

यहां उदाहरण में यह वार्ता दिखाई है । ऐसी ऐसी अनेक वार्ता भूगोल भ्रमण वादियों की रचित पुस्तकों में मिलेंगी क्योंकि भूगोल भ्रमण वादियों ने सर्वज्ञ तो माना ही नहीं । जो जो जिस के कयास में आया वह २ मन गढ़न्त लिख दिया । तब बिना सर्वज्ञ के जो परोक्ष पदार्थ इन्द्रियगम्य नहीं वह कैसे सत्यार्थ माने जायं इसी कारण वह भ्रान्ति रूप हैं । किंच

वादी-पृथ्वी नारङ्गी की भांति गोल घूमती हुई है ।

प्रति-यदि पृथ्वी गोल, पूर्व को घूमती हुई वादी के कथनानुसार होती तो सदैव पूर्वी हवा चलती, ध्वजा पश्चिम को उड़ती, पक्षी कभी अपने घोंसलों पर न आते, और सभी पश्चिम को जाते ।

वादी—पृथ्वी के घूमने से सब बातें होतीं परन्तु पृथ्वी के ऊपर ४५ मील ऊंचे तक वायुमण्डल (वायु [illegible] मुद्र)(Atmosphere) है वह पृथ्वी के ऊपर आकाशी पदार्थों को पृथ्वी के साथ ही घुमाता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस कारण ४५ मील ऊंचे तक के पदार्थ पृथ्वी के साथ ही घूमते रहते हैं इस लिये उक्त दोष जो कहे हैं वह नहीं बन सकते।

प्रति—यह मन गढ़न्त संकल्प रूप वायु मंडल का हेतु पक्ष का साधन करने वाला नहीं है क्योंकि जिस वायु मण्डल को हेतु बनाया उस का स्वभाव बल तथा चाल कोई नियत रूप नहीं है। केवल अपनी पक्ष साधन को असत रूप कल्पना करली है। सोई दिखाते हैं। प्रथम तो पृथ्वी के ऊपर वायु का स्वभाव है कि वह आकाश में सर्वत्र सूक्ष्म रूप से रहती है। और जब किसी दूसरे पदार्थ का सम्बन्ध पाती है तब बादर (स्थूल) रूप होकर बहने लगती है वा मनुष्यादि के दौड़ने से वा दौड़ने वाली गाड़ी में बैठने वाले के सन्मुख से टकराने लगती है। यह सर्व जन प्रसिद्ध है, सो ऐसे स्वभाव वाली वायु घूमती हुई वा दौड़ती हुई १ मिनट में ११९० मील पृथ्वी पर तिष्ठते आदमी को नहीं टकराती है-इस लिये वायु का स्वभाव देखने से पृथ्वी के साथ पदार्थों का घूमना वायु मण्डल असत् संकल्प है और बल का भी नियतपना असम्भव ही है। क्योंकि तोप का गोला जो बड़ा भारी बड़े बल से चलता हुआ जो १५ मील पर जाकर निशान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तोडेगा ऐसे बलवान गोले को तो वह (वायु मंडल) महाबल धारी पृथ्वी के साथ पूर्व को घुमाले जाता है। यदि न लेजाय तो निशाने को कैसे तोडे। और आक का फफूंदा जो कि किञ्चित वायु के बल से उड जाय। पश्चिम जाते हुए ऐसे फफूंदे को वायु मंडल पूर्व दिशा में ले जाने को एक अंगुल मात्र भी समर्थ नहीं। भला ऐसे अनियत बल वाले वायु मंडल का संकल्प किस बुद्धिमान के हृदय में प्रवेश कर सकता है और वायु मण्डल की चाल पदार्थों को पूर्व की ओर ले जाने के कारण पूर्व को मानी है। यदि उसकी वायु पूर्व को जाती है और पृथ्वी से ४५ मील ऊंचे तक के पदार्थों को साथ ले जाती है तो पूर्व को जाने वाली रेल का धुंआं पश्चिम को और पश्चिम को जाने वाली रेल का पूर्व को और उत्तर जाने वाली (रेल) का दक्षिण को और दक्षिण जाने वाली रेल का उत्तर को क्यों जाता है। वायु मण्डल के बल से पूर्व को क्यों नहीं गया-इस कारण वायु मण्डल के बल का भी नियतपना नहीं है। इससे यही निरधार होता है कि वायु मण्डल वायु रूप है किन्तु वह पूर्व को नहीं जाता और न उसके साथ पदार्थ जाते हैं वह वायु जो आकाश स्थित सूक्ष्म रूप होती है पदार्थों के सम्बंध से जहां जैसा संयोग मिलता है तैसे ही सम्बन्ध से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

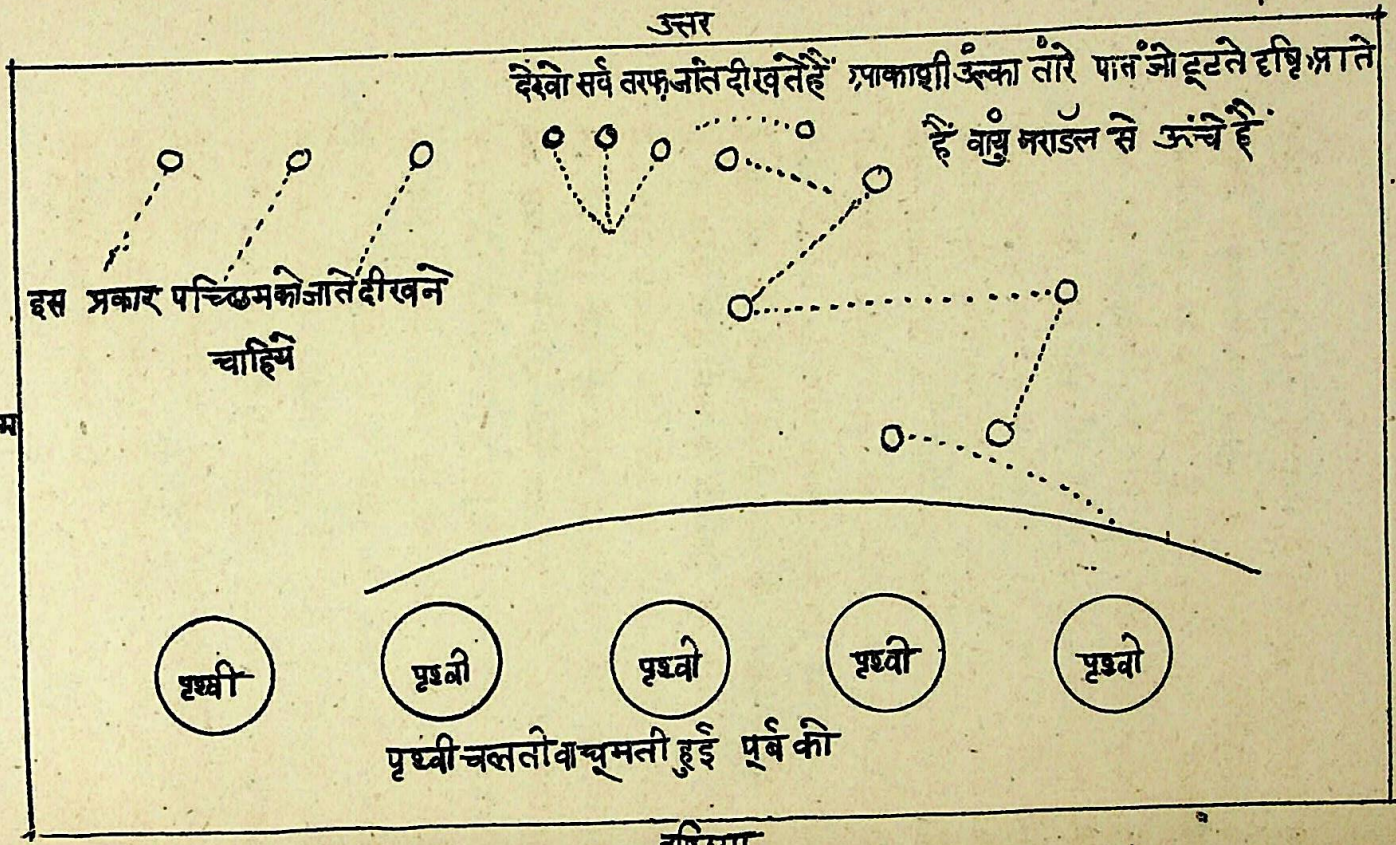

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

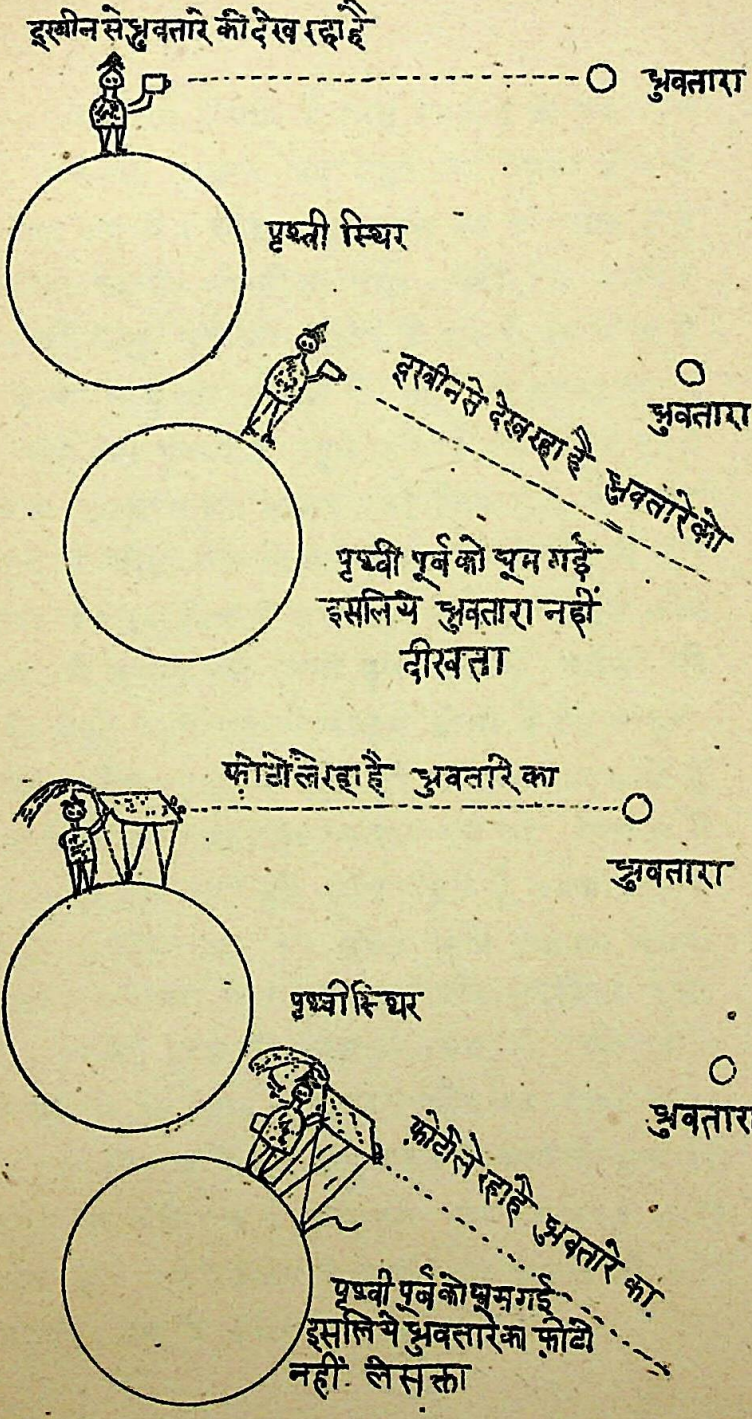

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उधर को चलने लगती है वायु मण्डल के पूर्व जाने की कल्पना असत्य महाशङ्का का स्थान होने से भ्रान्ति रूप है। और वायुमण्डल का ४५ मील ऊंचे तक का कहना भी ठीक नहीं। क्यों कि ४५ मील तक की वायु पूर्व को जाती है इस से ४५ मील से ऊंचे पर वायु का संचार है नहीं तो उल्का जाति के तारे जो पृथ्वी से बहुत ऊंचाई पर हैं वह टूटते हुये एक प्रकाश रूप कतार को लिये हुये भूमि पर पड़ते हैं और सर्व दिशाओं को जाते दीखते हैं। देखो नं० १८ चित्र में। परन्तु सर्व भू के पूर्व और घूमने से पश्चिम को जाते हुये दीखने चाहिये सो दृष्टि नहीं पड़ते इस में मालूम होता है कि वायुका संचार जैसा वहां है वैसा ही आकाश खण्ड में हैं इस लिये जैसा वायु का संचार उन को मिलता है उधर ही को जाते हुये दृष्टि पड़ते हैं इसका कारण वायु मण्डल का ४५ मील ऊँचे तक का कहना असत्य रूप मन गढ़न्त विना समझे पुरुषोंका माना है। यदि सत्यार्थ होता तो इस के ऊंचाई के कथन में फेर फार न होता। और वह देखो नं ३१ में २०० मील ऊंचे तक वायु मण्डल कहा है इत्यादि और भी ऊंचे तक वायुमण्डल माना है याते असत रूप है। इसी कथन से पृथ्वी का घूमना भी नहीं बनता। इस से भ्राँति रूप है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किंच-भूगोल भ्रमण वादियों ने बडे प्रयास से पृथ्वी को गोल और भ्रमण करती साधन के लिये बडे बडे तेज दूरदर्शी यंत्र (Teles cope) वा फोटोग्राफ (Foto grafrh) आदि यंत्र प्रगट किये और यह भी कहा कि पहले ज़माने में ऐसे यंत्र नहीं थे इस कारण पुरातन ज्योतिषी पृथ्वी सितारे तारे आदिकों का ज्ञान न कर सके। अब हम ने बडे २ यंत्र ईजाद किये हैं इस से हम पृथ्वी आकाश का हाल अच्छी तरह कह सकते हैं। ऐसे पुरुष पूर्व बडे २ ऋषि दिव्यज्ञान वालों का तिरस्कार कर आप महंत बन यह यंत्र प्रगट किये। इन से भी पृथ्वी को गोल घूमती हुई का साधन न कर सके प्रत्युत साधन की जगह पक्ष के गले पर कृपाण चलाया और अजा-कृपानी न्याय को चरितार्थ किया। 'अजाकृपानी' न्याय क्या है? एक घातक बकरी के मारने को कृपान (छुरी) ढूंढ रहा था उस बकरी ने अपने खुरों से पृथ्वी में गडे कृपान को निकाल दिया। उस घातक ने उस कृपाण को हाथ में ले बकरी (अजा) का घात कर दिया। इसी भांति भूगोल भ्रमण वादियों ने भी यह दूरबीन, फोटो, आकाशी जहाज़ जो बडे २ यंत्र पृथ्वी को भ्रमण करती हुई और गोलाकार सिद्ध करने को प्रगट किये हैं, उन्हीं यंत्रों द्वारा पृथ्वी का स्थिरपना सिद्ध होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब दूर्बीन का हाल सुनिये । हार्सल साहब के समय की बडी दूरदर्शी दूर्बीन जो बड़ी कीमती बहुत दूर के देखने वाली है । इस के समान दूसरी वर्त्तमान में दूर्बीन नहीं है । उस के रखने के लिये एक मकान गोल टपदार फिरता हुआ जिस की छत में खिड़की लगी हुई है बना है (देखो नं० ६८) जिस की प्रशंसा बडे पश्चिमी विद्वानों ने लिखी है तिस पर भी देखने वाले के नेत्र दूर्बीन के नीचे शीशे में केन्द्र (Center) रूप स्थिर और उस के ऊपर का शीशा दूर्बीन में स्थिर, जिस के स्थिर के प्रमाण करने को मकान के टप की खिड़की स्थिर, जिस के द्वारा ध्रुव सितारे को देखते हैं और सितारे की रोशनी दुर्बीन के ऊपर के शीशे में प्रवेश करके नीचे के शीशे में देखने वाले के नेत्र की पुतली केन्द्र स्थान बन कर परिधि पर सितारे को दृष्टि करती है । और तब देखने वाला सर्व प्रकार से स्थिर रूप में तारे को देखता है तो उस की दूरी आदि का ज्ञान कर सक्ता है । यदि पृथिवी घूम जाय तो देखने वाले मनुष्य के नेत्र की पुतली जो केन्द्र में है वह तारे को उस वक्त में जिस डिगरी (Digree) पर देखता है वह सैकिन्डों ही में बहुत दूर हो जायगा क्योंकि वह परिधि पर है । जिस में पृथ्वी तो फी सैकिंड करीब १५०० फीट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घूम जाती मानी है तब उस देखने वाले की पुतली सितारे को कैसे देख सकती है उस कारण वह दूरदर्शी यंत्र स्थिर रूप पृथ्वी पर ही अपना कार्य कर सकता है। एक बिन्दू मात्र हटने से कार्य साधन में असमर्थ है तब १५०० फीट पृथ्वी के घूमने से कार्य कदापि नहीं कर सकता। इस कारण दूरदर्शी यंत्र जो पृथ्वी गोल, भ्रमण सिद्ध करने को साधन बनाया था वह प्रत्युत असाधन होकर स्थिर पृथ्वी का ही साधन करता है तैसे ही फोटोग्राफ भी स्थिर हो कर पदार्थ की तस्वीर लेता है इस लिये पृथ्वी घूमने पर सितारे की तस्वीर नहीं ले सक्ता दोनों साधन समान होते हुए स्थिर पृथ्वी का साधन करते हैं तैसे ही आकाश में वायुयान में स्थित पुरुष कह रहा है कि पृथ्वी स्थिर है भैंस गाय चल रही हैं। नदी का पानी बह रहा है। वृक्ष पहाड़ स्थिर हैं। जो पदार्थ चल रहे हैं उन को चलता कह रहा है और जो स्थिर है उन को स्थिर कह रहे हैं। यदि पृथ्वी चलती होती तो पृथ्वी को चलती कहता। इस से वायुयान भी यही सिद्ध करता है कि पृथिवी स्थिर है ऐसे ही जो बड़े भारी यंत्र हैं वह भी पथिवी को स्थिर ही सिद्ध करते हैं। देखो चित्र।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किञ्च-सूर्य तारा स्थिर है तैसे हीध्रुवतारा भी स्थिर है। देखो नं० ४४। यह कहना बाधित है क्योंकि पृथिवी नारंगी के आकार गोल घूमती हुई है तो ध्रुव और सूर्य दोनों कैसे स्थिर हो सकते हैं क्योंकि सूर्य तो पृथिवी के घूमने के कारण प्रति दिन पच्छिम को जाता दीखता है तैसे ही ध्रुवतारा भी दीखना चाहिये सो दीखता नहीं वह एक ही स्थान पर स्थिर दीखता है। यदि यह कहैं कि सूर्य ८ करोड़ ३० लाख मील दूरी पर है। वह ध्रुव तारा असंख्य मील दूरी पर है इस से एक जगह ही दीखता है अथवा सूर्य तौ पूर्व दिशा में स्थिर पृथ्वी के घूमने से पश्चिम की तरफ जाता दीखता है तैसे ध्रुव तारा नहीं है ध्रुव तारा तो एक पृथ्वी के बीचाबीच उर्ध जो आश्रम में उत्तर की तरफ बड़ी दूरी पर है ताते सर्व पृथिवी वालों को एक स्थान पर दीखता है यह कहना भी सन्तोषदायक नहीं है क्योंकि पृथिवी एक समस्थल थाली के आकार घूमती होती तो सर्व पृथिवी निवासियों के ध्रुव तारा एक स्थान पर दीखना संभव है।

पृथिवी तो नारंगी के समान घूमती मानी है तिस पर भी २३॥, २३॥ डिगरी तिरछी घूमती मानी है। देखो नं० २७ में। फिर तिरछी घूमती पृथिवी पर सितारा कितनी ही दूर पर क्यों न हो एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थान पर स्थिर नहीं दीख सकता और पृथिवी की तिरछी घूम यहां तक है कि ६ महीने में उल्टी दक्षिणी ओर से उत्तरी दिशा को हो जाती है। इसी कारण उत्तरी दक्षिणी पोलों में ६, ६ महीने की रात्रि मानी है ऐसी तिरछी घूमने से ध्रुव तारा सारी रात्रि एक स्थान पर दीखता है इस से यह निराधार होता है कि पृथिवी घूमती नहीं है जैसे ध्रुव तारा स्थिर है वैसे पृथिवी भी स्थिर है। अचला जिस का नाम सदैव से सार्थक है। पृथिवी तिरछी घूमती हुई पर पृथिवी निवासियों को ध्रुव-तारा एक स्थान पर दीखता हुआ असम्भव भ्रान्ति रूप है। किञ्च

वादी—ध्रुवतारा पृथ्वी से असंख्य मील दूरी पर है इस कारण स्थिर दीखता है।

प्रति—यह कहना भी बाधित है क्योंकि ध्रुव-तारे की प्रदक्षिणा में जो सितारे घूमते हैं वह भी अधिक दूर हैं वह कैसे घूमते दिखाई देते हैं वह भी घूमते न दीखने चाहियें उनको वादी ने न घूमते कैसे न कहे वह तो प्रत्यक्ष घूमते दीख रहे हैं इसीसे मालूम होता है कि ध्रुवतारा असंख्य मील दूर नहीं है जैसे उसकी प्रदक्षिणा में और तारे घूमते दीखते हैं। तैसे वह स्थिर दीखता है तबतो उससे पृथ्वी का स्थिरपना सपुष्ट होता है। वादी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने केवल पृथ्वी को घुमाने के हेतु ध्रुवतारे को दूरी पर बताया था यदि दूरी पर न बतावै तो पृथ्वी स्थिर हुई जाती है सो ऐसे मन गढ़न्त हेतुओं से पृथ्वी घूमती न होकर अचला ही रहेगी।

किञ्च—जो ध्रुवतारा असंख्य मील दूर होने पर एक स्थान पर दीखता है यहां एक प्रश्न आश्चर्य कारी होता है कि ध्रुवतारा सूर्य का परवार (सोलर सस्टम) में है या नहीं यदि है तो सूर्य जो आध घंटे में लिरा की तरफ १०००० दस हजार मील दौड़ा जा रहा देखो नं० ५६ वह भी दौड़ेगा फिर उसका ध्रुव नाम कहना और एक स्थान पर स्थिर बताना भ्राँति है। यदि वह स्थिर नहीं है तो सूर्य के साथ पृथ्वी जो सूर्य के परिवार में है उस के साथ दौड़ती जायगी फिर उस ध्रुवतारे का पृथ्वी से एक स्थान से दीखना असंभव है यानी भ्रान्ति रूप है।

किञ्च—यदि पृथ्वी गोलाकार घूमती होती तो नाव पर बैठे हम उससे उछल ने में १ सैकिंड में १८$\frac{1}{2}$ मील पश्चिम की तरफ हट जाते, जहां से उछले थे। क्योंकि पृथ्वी की चाल देखो नं० १३ प्रदक्षिणा में फी सैकिण्ड १८॥ मील की है सो ऐसा होता नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वादी-वाह-आपने अभी वायुमण्डल वा आकर्षण शक्ति को नहीं जाना है वही तो आपको नाव से हट कर १८॥ मील नहीं गिरने देते वे सब पदार्थों को पृथिवी के साथ रखते हैं वह दोनों विद्या आप सीख लो।

प्रति—वादी साहब अपने जिन हेतुओं का बहाना कर के पक्ष का साधन किया है उन को हम नहीं सीखते। यह विद्या आप ही को फली भूत रहे हम ऐसी असत् रूप मन गढ़न्त विद्या को सीख विद्वान होना नहीं चाहते क्यों कि जिन विद्याओं से आप पक्ष का साधन कर रहे हो वह किसी विद्वान तो क्या बाल गोपाल के भी अनुभव में नहीं आ सकती। जिन का असत पना दिखा चुके हैं वा और भी अवसर पा कर दिखावेंगे। देखिये चलती हुई नाव जो गंगा में पूर्व की ओर चल रही है उस की चाल पृथिवी के समान तेज भी नहीं है किन्तु १५ फीट फी सैकिंड उस के पश्चिम किनारे पर से जब हम उछलते हैं तो नाव १ सैकिंड में १५ फीट आगे चली जाती है और हम गंगा जी में डूब जाते हैं वहां पर तुम्हारी दोनों विद्या (वायुमण्डल वा आकर्षण) कुछ काम नहीं देती क्या वहां पर वायुमण्डल नहीं है या कि आकर्षण नहीं है जो हम को मन्द गति वाली नाव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के साथ नहीं ले जाती और पृथिवी के साथ सम्पूर्ण पदार्थों को (एक सैकिंड में १८॥ मील) तेज जाने पर भी साथ रखती है कैसी बड़ी भ्रांति है ि. सी की समझ में आ जायगी। यदि हमारे साथ तुम भी इस क्रिया को करो तो तुम भी डूबते हो क्या तुम्हारे सिद्ध करी हुई विद्या तुम्हें एक छोटी सी गङ्गा नदी के डूबने से नहीं बचाती तो बड़े २ महासागरों से कैसे बचावेगी।

नाव के चलने के कारण हट कर गङ्गा में गिरते हैं पृथिवी एक सैकिंड में १८॥ मील दौड़ती है तिस पर भी हम उछलने पर वहां के वहां ही गिरते हैं सो क्या वायु मंडल और आकर्षण हम को एक सैकिंड में १५ फीट भी नाव के साथ पूर्व को न ले जायंगे। वह दोनों विद्या आप की ऐसी दया रहित हो जांयगी कि हमको गङ्गा में डुबा देगी। हम गङ्गा में गोते खाते हुये यही कहते हैं कि यह विद्यायें तुम्हीं को सफल होंय। हम पर आप की सङ्गति से इन विद्याओं का असर न पड़ना ही भला था नहीं तो उछल कर गङ्गा में डुबकी खाते। धन्य है आपकी दोनों विद्या रूपी देवियों को जो अपने सेवकों के (बड़े २ पदार्थ तोप के गोले आदि जो पश्चिम को फी मिनट १५ मील जावे) उनको वा अन्य पदार्थों को जो कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृथिवी से ४५ वा ७५। वा २०० मील ऊंचे तक के हैं सबको पृथिवी के साथ १ मिनट में १८॥ मील ले जाते हैं और जो उपासना न करें उन्हें डुबा देती हैं। वादी साहब यह देवी नहीं है किन्तु केवल पृथिवी के घुमाने चलानेके लिये दो विद्याओं के नाम से असत् रूप मन गढ़न्त संकल्प करी हुई राक्षसी निज पक्ष के नष्ट करने वाली है इससे पक्ष का सिद्ध होना असम्भव है।

वादी—जो ऐसी बड़ी विद्या जिनका थाह पाना दुःसाध्य है उनको तुम न मानते हुए बिना श्रद्धा के कारण ही तो गङ्गा में डूबते हो।

प्रति—जिन के चरित्र को दिखा चुके हैं उन का कार्य असत् रूप है। ऐसी विद्याओं का श्रद्धान आपको ही फलीभूत होय। हम ही क्या संसार भर इन दोनों युक्तियों से सुख रूप नाव से हट कर डूब रहा है। इस से इस पृथिवी को अचला अनुभव करते हुये पक्षपात से चला बना रहा है। विचार करने से पृथिवी सर्वतो भाव से अचला है और वायुमंडल वा आकर्षण शक्ति का संकल्प मिथ्या भ्रांति रूप है।

किञ्च—

प्रति—यदि पृथिवी घूमती चलती होती तो भूमि स्थित जीवों को चलती दीखती परन्तु न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किसी को चलती दीखती है न किसी के अनुभव में आती है सूर्य चन्द्रादि चलते हैं सो प्रत्यक्ष दृष्टि पड़ते हैं।

वादी—नहीं साहब पृथिवी चलती है परन्तु उस पर स्थित जीवों को नहीं दीखती यह उन की भ्रान्ति है (एक तरह की भूल है) जैसे एक पृथिवी को चलती स्थिर देखते हैं और असंख्यात तारों को चलते देखते हैं यदि एक पृथिवी को चलती मानने से असंख्यात तारों का भ्रमण मिट जाय तो कितनी सुगम बात हो जाय और है भी यों ही कि पृथिवी चलती घूमती है और तारागण सूर्यादि स्थिर हैं लोगों को इस से उल्टा ज्ञान है यह उन का भ्रम है जैसे चलती नाव में बैठे हुये पुरुषों को उल्टा ज्ञान हो जाता है वह अपने को स्थिर मानते हैं और नाव से भिन्न पदार्थों को चलता मान लेते हैं ऐसे भ्रम को छोड़ के पृथिवी को चलती घूमती मानना प्रमाण भूत है जो कि हमने मानी है।

प्रति—ये कहना ठीक है कि चलती नाव को स्थिर मानना भ्रान्ति है परन्तु नाव में बैठे हुए पुरुषों की भ्रांति दूर करने के अनेक उपाय हैं। प्रथम तो किनारे वालों को ही नाव चलती दीखती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है वे उन की भ्रान्ति मिटा सकते हैं।

वादी—किनारे वाले भ्रांति अवश्य दूर कर सकते हैं क्योंकि नाव से भिन्न हैं इस प्रकार पृथिवी से भिन्न पुरुष भी पृथिवी के भ्रम को मिटा सकते हैं परन्तु पृथ्वी से भिन्न पुरुष दीखते नहीं हैं।

प्रति—यह माना कि हम पृथिवी पर बैठे हुये पृथिवी के घूमने की भ्रांति दूर नहीं कर सकते हैं किन्तु पृथिवी से भिन्न तिष्ठ कर तो कर सकते हैं।

वादी—हाँ पृथिवी से भिन्न तिष्ठते भ्रम दूर कर सकते हैं।

प्रति—भिन्न कर सकते हैं तो पृथिवी से भिन्न आकाश में तिष्ठते वायुयान (हवाई जहाज़) में स्थित पुरुष ऊपर से कह सकते हैं कि नाव चल रही है वृक्ष स्थिर हैं। जो जीव चल रहे हैं उन को चलता और जो स्थिर हैं उन को देखते हुये नाव वालों की भ्रांति दूर कर सकते हैं यदि तुम्हें विश्वास न हो तो स्वयं वायुयान में बैठ कर देख लो और भ्रांति दूर कर लो इस प्रकार चलती नाव की भ्रांति मिटाने का उपाय बता दिया परन्तु पृथिवी में तो यह भ्रम है ही नहीं क्योंकि वायुयान में बैठा पुरुष प्रत्यक्ष कर रहा है कि पृथिवी स्थिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है वृक्षादि स्थिर हैं नाव चल रही है यह वायुयान में बैठ कर देखने की वार्ता प्रत्यक्ष दृष्टि गोचर है फिर पृथिवी स्थिर है इस वार्ता को भ्रम रूप और पृथिवी को चलती क्यों बताते हो।

वादी--तुमने जो वायुयान को पृथिवी से भिन्न बताया था वह भिन्न नहीं है पृथिवी का ही अंग है। जैसे पृथिवी घूमती है तैसे ही आकाश अथवा वायुयान स्थित पुरुष जो पृथिवी के साथ घूमता चलता हुआ है पृथिवी की भ्रांति को दूर नहीं कर सकता है। क्योंकि वह पृथिवी से अभिन्न है।

प्रति—भला आकाश और वायुयान जो पृथ्वी से प्रत्यक्ष प्रमाण से भिन्न है लक्षण से भिन्न स्वभाव से भिन्न जिनको अभिन्न बताना कितना पक्षपात है यदि वायुयान स्थित पुरुष और आकाश अभिन्न है तो कोई भी पदार्थ भिन्न न रहेगा और तुम्हारे माने हुये मङ्गल आदि तारों पर तिष्ठते पुरुष भी भिन्न न ठहरेंगे क्यों कि वह भी तारा आकाश में वायुयान की ज्यों है। जब आकाश स्थित तारे भी पृथ्वी से भिन्न नहीं हैं तब आकाश मंडल के तारे सब ही पृथ्वी रूप हैं तब तुम्हारा यह कथन बाधित होगा कि पृथ्वी चर है और सूर्यादि ध्रुव तारे स्थिर हैं तब तुम पक्ष का साधन कैसे कर सकते हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस लिये आकाश और आकाश स्थित वायुयान पृथ्वी से भिन्न है और वायुयान स्थित पुरुष जो है वह पृथिवी वा वृक्ष स्थिर को स्थिर और पृथिवी के ऊपर चलते हुये मनुष्य, पशु, नदी का जल, चलती को चलती बता रहा है सो निस्सन्देह सत्यार्थ है।

वादी—आकाश स्थित पदार्थ वा आकाश पृथिवी से भिन्न नहीं है जैसे आकाश और तारे परन्तु आकश में ४५ मील ऊपर ताईं वायुमंडल है उस के कारण नीचे के पदार्थ तो पृथिवी से अभिन्न हैं क्यों कि वायुमण्डल एक पृथिवी का अंग माना गया है उस के ऊपर आकाश वा तारे पृथिवी से भिन्न प्रत्यक्ष हैं ही।

प्रति—वायुमण्डल जो पृथिवी का एक अंग मन माने संकल्प से पक्ष साधन को बताया वह प्रत्यक्ष भिन्न है। आकाश वा वायुयान को अभिन्न कैसे कहते हो और वह क्या वस्तु है?

वादी—वायुमंडल एक पवन का समुद्र है।

प्रति—वायुमंडल पवन का कोई भी कार्य नहीं करता है न सूक्ष्म रूप से सर्व पृथिवी के ऊपर आकाश में व्याप्त है वह सूक्ष्म पवन तो सर्व पृथिवी के ऊपर आकाश में अपना कार्य करती है और वही स्थूल रूप हो कर पुरुष के दौड़ने से टकराती है अपने करने का कार्य करती रहती है फिर तुमने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो एक वायु का समुद्र बताया सो ऐसा कोई कार्य वायु में नहीं दीखता है जिस से आकाश और वायुयान अभिन्न समझे जांय ताते वायुमंडल को वायु का घेरा बताना असत्यार्थ है किसी भू भ्रमण किताब में नहीं लिखा है। यदि लिखा है तो बताओ जो बताया भी है वह देखो नं० १२ में चार प्रकार की पवन बताई है उन चारों प्रकार की में पृथिवी पर तोप आदि के गोलों को पश्चिम से पूर्व लेजाने का बल नहीं दिखाया है तब वायुमंडल को वायु रूप बताना क्यों भ्रान्ति रूप नहीं है।

वादी—वायु मंडल के कार्य दीखते हैं क्या ? पृथिवीका घूमना चलना उस के साथ पदार्थों का चलना होता है इस से इस का कारण कोई होगा बिना कारण कोई कार्य नहीं होता है इस लिये विद्वानों ने इस को सत्यार्थ माना है। वायुमंडल के नाम से विख्यात है और वायुरूप कहा जाता है परन्तु यह एक पृथिवी का अंग है।

प्रतिवादी—प्रिय सभ्य जन देखा आपने भूगोल भ्रमण करती है इस का साधन जिस पर विवाद हो रहा है कि पृथिवी स्थिर है वा घूमती है इस को तो आप भूल गये। आप अपनी मन मानी गढ़न्त को ही कि पृथिवी घूमती है साध्य बनाया और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन गढ़न्त को ही साधन कर वायुमंडल का कार्य दिखाने लगे कि पृथिवी घूमती है उस के साथ पदार्थ घूमते हैं उन पदार्थों को घुमाने वाला कोई कारण अवश्य होगा ऐसा अनुमान कर उस का साधन भी मन गढ़न्त वायुमंडल को बना दिया। जब इतना पक्षपात अपने पक्ष साधन में है तब कैसे तत्व निर्णय हो सकता है? जब वायु मंडल को वायु का एक घेरा मन गढ़न्त बनाया। और उस में पवन के गुण न होने से जब पक्ष में दोष दीखने लगा तब उस को आप मन के संकल्प से विचार कहने लगे कि वायुमण्डल वायु का स्वरूप न सही यह पृथिवी का एक अंग है।

वायुमण्डल को तुम ने पृथ्वी का अंग रूप माना सो अंग अंगी भाव तो जब होता है जब आधाराधेय सम्बन्ध रूप हो जितने पृथ्वी के अंग हैं उन में आधाराधेय संबंध होता है जैसे पृथ्वी है आधार जिस का ऐसे पहाड़ और पहाड़ हैं आधार जिस का ऐसे वृक्ष पृथ्वी के अंग माने जाते हैं और पुरुष है आधार जिस का ऐसे शिर के बाल ये सब अंग अंगी भाव माने जाते हैं और जिन के बीच में आकाश का व्यवधान (अंतर) पड़ गया वह अंग अंगी नहीं माने जाते जैसे पुरुष के बालों से भिन्न आकाश का पड़ा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है व्यवधान जिस में ऐसी मक्खी वा पक्षी पुरुष के अंग नहीं माने जाते तैसे आकाश व्यवधान बीच है जिस के ऐसे वायुयान तारे आदि पृथिवी के अंग कैसे माने जांयगे और भिन्न कैसे न माने जांयगे व्यर्थ अपने पक्ष के साधन के लिये जो एक वायुमण्डल का संकल्प करना है वह असत्यार्थ है न वायुमण्डल वायु रूप है न पृथ्वी का कोई अंग है केवल पक्ष साधन को एक कपोल कल्पित प्रलापमात्र है जब पृथ्वी के चलने घूमने से पदार्थ उस के ऊपर नहीं ठहर सकते तब इस महा दोष के हटाने को केवल वायुमण्डल का संकल्प है सो ऐसे असत्यार्थ संकल्पों से पृथ्वी के घूमने चलने की पक्ष को सिद्ध करने के साधन नहीं होते वास्तव में जो पदार्थ में गुण होता है वह प्रगट हो जाता है इस लिये पृथ्वी का घूमना चलता कहना ठीक नहीं है भ्रांति रूप है।

वादी--बड़े बड़े विद्वानों ने बड़ी बड़ी पुस्तकों में वायुमण्डल माना है हम इस को इष्ट क्यों न करें।

प्रति—जो पृथ्वी को चलती घूमती बता रहे हैं उन ही को तो आप बड़े विद्वान् मानते हो उन ही पुरुषों ने वायुमण्डल का प्रतिपादन किया है सो ठीक है यदि वह वायुमण्डल का संकल्प नहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करते तो पृथ्वी को जो स्थिर है उस को चलती घूमती कैसे करते बिना ऐसे किये पक्ष का खंडन होता इस कारण इस वायुमण्डल का संकल्प कर उस को तीन तरह माना प्रथम तो वायुरूप सो वायु के स्वभावादि में तो मिला नहीं क्योंकि वायु एक पूर्व दिशा में ही घुमाने वाले स्वभाव को ही नहीं रखती है वा चलने दौड़ने में टकराय सो भी नहीं तब इस को छोड़ दूसरी बार पृथ्वी का अंग माना वह भी आधार आधेय संबंध बिना वायु मण्डल पृथ्वी का अङ्ग नहीं बना फिर तीसरी बार कहा कि कार्य को देख कारण का अनुमान कर वायु मण्डल का अस्तित्व माना जाता है सो सपक्ष वालों में बन गया परन्तु इस में कार्य जो पृथ्वी घूमना और आकाश वर्ती पदार्थों को उस के साथ घुमाना यह था सो वह अपना मन माना था उसी के दृढ़ करने को कारण रूप मन माना वायुमण्डल संकल्प कर लिया यह तीसरा तुम्हारा संकल्प तुम्हारे ही पक्ष वालों को इष्ट है पक्षपात रहित पुरुषों को इष्ट नहीं हुआ ऐसे ऐसे संकल्पों से विचार शील पुरुषों को आप का गुप्त रहस्य भी मालूम हो गया कि तुम ने अपनी पक्षसाधन के लिये ही ऐसे हेतु संकल्प किये हैं ऐसे और भी आकर्षण आदि ये सब मन गढ़न्त हैं । सत्यार्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं। ऐसे हेतुओं से पृथिवी का घूमना चलना सिद्ध नहीं होता। इस कारण पृथिवी न गोल है न चलती दौड़ती है न घूमती। पृथिवी सत्यार्थपने स्थिर है इस के नाम भी स्थिरा अचला बडे बडे महात्मा ज्ञानी निस्प्रेहियों ने कहे हैं वह सार्थक हैं।

नम्बर २ का विवेचन।

वादी—जहाज़ को जब दूर से देखते हैं तो पहले मस्तूल का ऊपरी भाग दीखता है क्योंकि बीच में बिना किसी की आड़ आये ऊपरी भाग नहीं दीख सकता है इस से पृथ्वी की गोलाई ही आड़ साबित होती है इस से पृथ्वी गोल है।

प्रति—पृथ्वी गोलाकार सिद्ध करने में जहाज़ के मस्तूल का पहले दीखना हेतु दिया सो जान्या परन्तु इस में यह चमत्कारी प्रश्न पैदा होता है कि वह पृथ्वी की आड़ कितनी ऊंची है और मस्तूल कितना ऊंचा है। यदि पृथिवी की आड़ इतनी ऊंची है कि जो मस्तूल की ऊंचाई के समान है तब तो पृथिवी के गोल होने का हेतु ठीक है यदि पृथिवी की आड़ की ऊंचाई थोड़ी और मस्तूल की ऊंचाई अधिक है तो हेतु बाधित है (ठीक नहीं हैं) क्योंकि जब पृथिवी की आड़

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मस्तूल के बराबर ऊंचाई की नहीं है। तब पृथिवी की आड़ कैसे मस्तूल को छिपा सकती है। इस से पृथिवी गोलाकार में उस (पृथिवी) की ऊंचाई कितनी और मस्तूल की ऊंचाई कितनी है। प्रथम इस का विवेचन करना परमावश्यक है। यह सत्यार्थ अकाट्य स्वयं सिद्धि जो गणित विद्या उस से देखने योग्य है जिस से प्रश्न करने का अवकाश ही न रहे वही गणित दिखाई जाती है।

गोलाकार पृथ्वी में आड़ वह होती है जोकि छोटी परिधि के दोनों किनारे पर रेखा खींचा जाय जिसको जीवा (chord) कहते हैं। उसके ऊपर मध्य भाग में परिधि तक की ऊंचाई है वही आड़ है जिसकी बान बासर (High of the aroh) कहते हैं उसी बान की ऊंचाई के लिये गणित दिखाई जाती है।

विवाद में आई पृथ्वी जो गोल एक फल के आकार की है इसके सर्व ओर परिधि है इसका कोई भाग काटा जाय उसमें भी किञ्चित परिधि रहेगी उसकी ढाल की निचाई वह समझी जायगी जो कि कटे भाग की मुटाई है उसको बान कहते हैं और किञ्चित परिधि को धनुष (Aroh) और कटे भाग की लम्बाई को जीवा कहते हैं। सब फल की मुटाई को व्यास (Diameter) और सम्पूर्ण फल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की वृत्ति को पूर्ण परिधि (Circomfrence) समझ लेनी चाहिये। यहां बान निकालने का गणित सूत्र ऐसा—

व्या व्यास योगान्तर घातमूलं व्यासदलं हतः शरस्यात्

भावार्थ—जीवा और व्यास के जोड़ को उन के अन्तर से गुणा कर के गुणनफल के वर्गमूल को व्यास में से घटा कर उस का आधा करने से बान निकलता है।

उदाहरण जिस की जीवा ६ है और व्यास १० है तो दोनों का जोड़ १६ हुआ और अन्तर चार हुआ। इन दोनों का गुणनफल ६४ हुआ इस का वर्गमूल ८ हुआ १० व्यास में से घटाया तो दो शेष रहा और २ का आधा १ हुआ यही बान निकला। ऐसे ही सर्वत्र बान निकालो।

यही बान मात्र किंचित् परिधि में ढाल कहो चाहे निचाई कहो चाहे पृथिवी की ऊंचाई की आड़ कहो सर्व एक ही वार्त्ता है।

गोलाकार क्षेत्र में बान निकालने की दूसरी सुगम रीति जो स्कूलों में पढ़ाई जाती है गोल क्षेत्र में त्रिभुज देखना चाहिये जिस की नाप को बालक सुगम रीति से समझ सकते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब गोलाकार क्षेत्र में व्यास १० मील है तब देखो जीवा ६ मील को वहां त्रिभुज बनाओ जैसा कि चित्र में दिखाया है (भावार्थ) जिस का व्यास १० मील है और जीवा ६ मील है उस का बान १ मील होगा। १० मील व्यास में ५ मील केन्द्र की सर्व रेखायें हैं जीवा ६ मील के अर्ध भाग में ३ मील है जो व्यास की रेखा से दोनों तरफ है तब त्रिभुज में एक रेखा केन्द्र से परिधि तक ५ मील अब बिना जानी रेखा ४ मील सिद्ध हुई वह केन्द्र की रेखा ५ मील में से घटाने से १ मील है।

अब भूगोल भ्रमण वादियों की मानी हुई पृथ्वी व्यास ७८२६ मील, परिधि २५०० मील, गोल, जिस का ऊपरला भाग काट सम भूमि करने में कटे भाग की चुटाई को बान या सर भी कहते हैं। यह नकशे में दी हुई ऊंचाई गणित से सिद्ध होती है। इसे देखो जो कि जहाज के मस्तूल देखने में पृथिवी की ऊंचाई है वही बान है और पृथिवी की परिधि की ऊंचाई काटी जाती है वही बान है।

अथवा पानी के बहाव में जो ढाल है वही बान है। यह गणित इन सर्व उक्त बाद में कार्य करती हैं इस कारण इस को सत्यार्थ भूत समझ कर लिखा है। देखो इस का नकशा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोल की किंचित परिधि (धनुष)	जीवा (डोरी)	बान (शर-ढाल)
१ मील साधिक	१ मील साधिक	६ इंच करीब
२ ,, ,,	२ ,,	१ फीट ,,
४ ,, ,,	४ ,,	३ ,, ,,
६ ,, ,,	६ ,,	६ ,, ,,
८ ,, ,,	८ ,,	११ ,, ,,
१० ,, ,,	१० ,,	२१ ,, ,,
२४ ,, ,,	२४ ,,	१०० ,, ,,
१७९ ,, ,,	१७८ ,,	१ मील ,,
२५४ ,, ,,	२५३ ,,	२ ,, ,,
३११ ,, ,,	३१० ,,	३ ,, ,,
३५५ ,, ,,	३५४ ,,	४ ,, ,,
४०१ ,, ,,	४०० ,,	५ ,, ,,
५६६ ,, ,,	५६५ ,,	१० ,, ,,
७९८ ,, ,,	७९७ ,,	२० ,, ,,
९०० ,, ,,	८९६ ,,	२६ ,, ,,
१७८६ ,, ,,	१७६९ ,,	१०० ,, ,,
७६०० ,, ,,	६४०० ,,	१६०० ,, ,,
९४०० ,, ,,	७४०० ,,	२४८० ,, ,,
१०८०० ,, ,,	७८०० ,,	३१११ ,, ,,
१२५०० ,, ,,	७९२६ ,,	३९६३ ,, ,,

इस गणित से आप को निश्चय हो गया होगा कि जब अधिक से अधिक ८ मील की दूरी तक जहाज़ दीखता है तब ११ फीट पृथ्वी की ऊंचाई आड़ में आती है तब तो जहाज़ का तल भाग दीखना चाहिये क्योंकि देखने वाले समुद्र की पार ६ फीट ऊंची है। देखने वाला लेट कर नहीं देखता है खड़ा होकर देखता है। तब उस देखने वाले की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आंख समुद्र की सतह (Level) से ११ फीट ऊंची हुई तब देखने वाले को प्रथम जहाज़ के ऊपर भाग का तल दीखना चाहिये। जब पृथ्वी की ऊंचाई की आड़ ११ फीट है तब मस्तूल की ऊंचाई ६०, १०० फीट ऊंची प्रथम दीखती है वह सर्व ऊंचाई किसकी आड़ से छिप गई इस से पृथ्वी की ऊंचाई की आड़ बता कर पृथ्वी को गोल बताना और बिना गणित के उसका नक़शा वा यंत्र दिखाकर बालकों को समझा देना महाशङ्का का स्थान है।

वादी—समुद्र के किनारे पर चल कर देखलो प्रत्यक्ष पहले मस्तूल ही दीखता है।

प्रति—यह माना कि मस्तूल पहले और तल भाग पीछे दीखता है। परन्तु यह पृथ्वी गोल होने का कारण नहीं है क्योंकि गणित से बाधित है इसमें कारणान्तर और है।

वादी वह क्या है।

प्रति—वह यह है कि समुद्र से सदैव भाप उठा करती है। वह नीचे स्थूल है और ऊपर छिन्न भिन्न होकर सूक्ष्म रूप हो जाती है। इस कारण नीचे स्थूल होने से दृष्टि विषय में प्रति बन्धक हो कर जहाज़ के नीचे भाग को नहीं देखने देती है। और ऊपर सूक्ष्मरूप होने से प्रतिबंधक नहीं होती इस से ऊपर का भाग दीखता है। उष्णादि कारण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In.Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

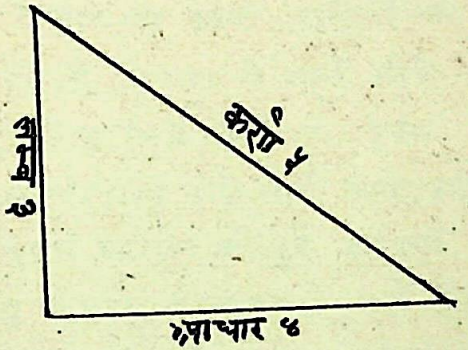

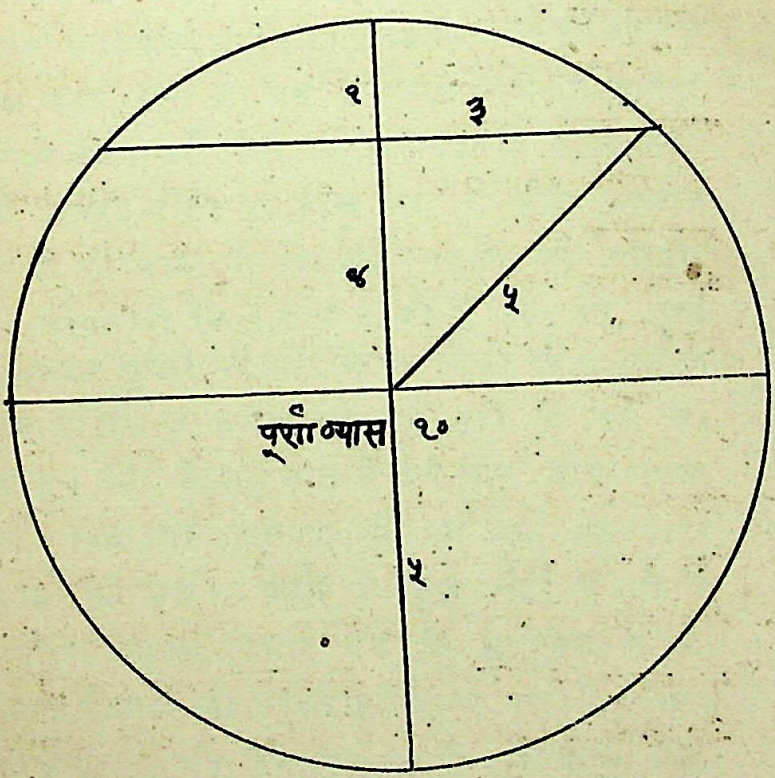

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

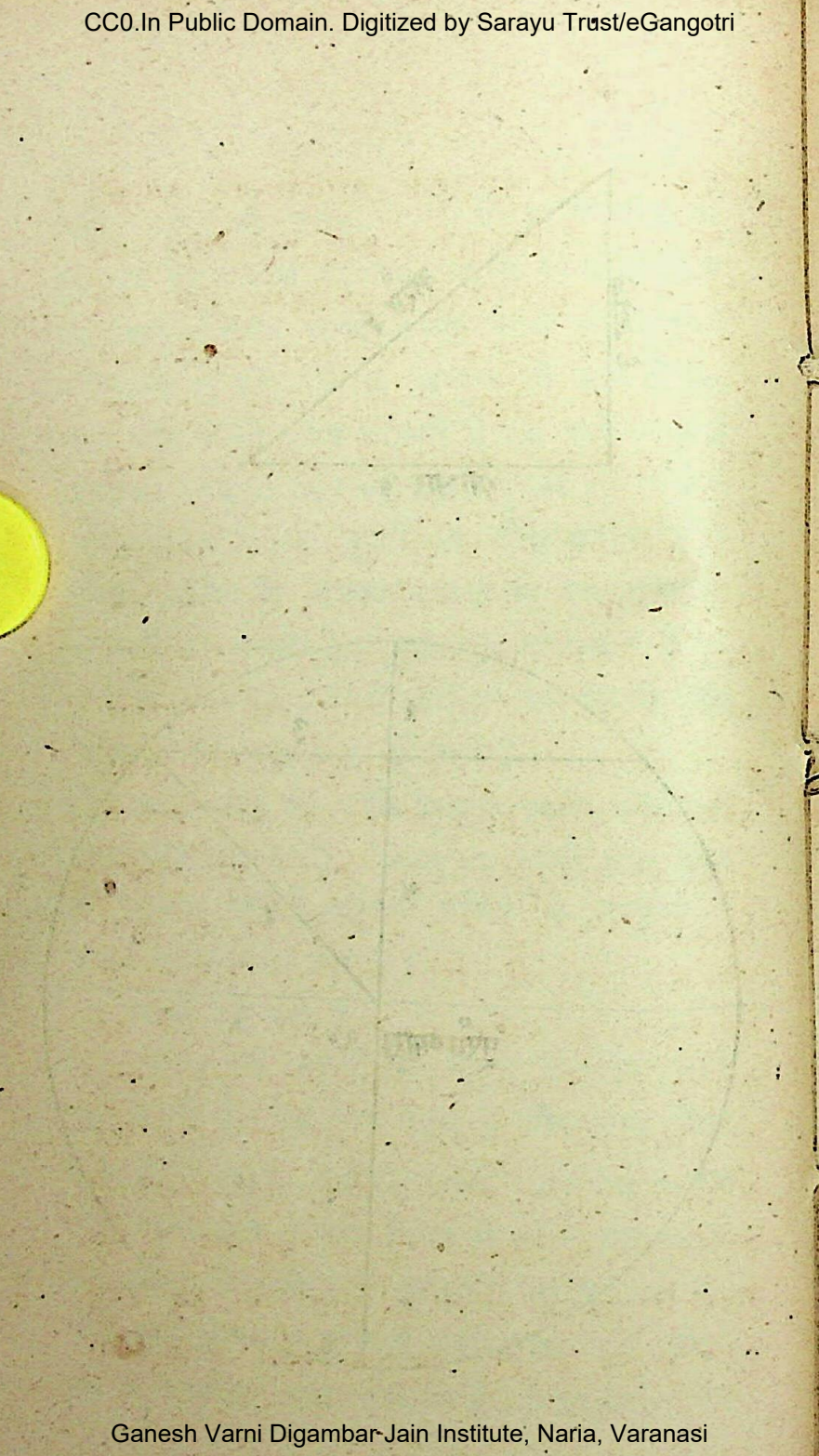

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से समुद्र से भाप का उठना वादियों को स्वीकृत हैं वह कहते हैं कि भाप के कतरे नीचे मोटे बडे और ऊपर छिन्न भिन्न होते हुये सूक्ष्म होते चले जाते हैं अथवा वायु नीचे भारी ऊपर हलकी होती है। यह वार्ता स्वीकृत की हुई वादियों की क्या अपने हेतु के घात करने वाली नहीं है ? किन्तु है ही ।

वादी—इसी हेतु के पुष्ट करने के लिये उदाहरण निमित्त अपने बड़े बडे विद्यार्थियों को एक बडे स्कूल में प्रोफेसर साहब वा हेडमास्टर (Head master) एक लम्प जला कर उस के आगे एक गोलाकार पृथ्वी की तसवीर को रख कर उस की छाया कमरे की अंधेरी भींति पर डाल कर ५ फीट उनमान पृथ्वी की छाया पर एक एक जहाज की तसवीर की छाया जो कि ५ इंच ऊंची है उस को घुमा घुमा कर पृथ्वी की परिधि पर दिखा रहे थे जहाज जब परिधि पर चलता था तब दूरी से उस का मस्तूल और निकट आने से तल भाग दीख पड़ता था। विद्यार्थी आनन्द में आ कर हेडमास्टर साहब की प्रशंसा करने से मुख नहीं मोड़ते थे क्योंकि इन का विचार उन के हृदयस्थ न था केवल किताब की घोखी हुई वार्ता का हेतु स्पष्ट करते थे उस को देख कर एक विचार शील बोला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कि मास्टर साहब आप ने अच्छा बालकों का खेल दिखाया ।

हेडमास्टर साहब (तेजी से) क्या साहब, खेल है या पदार्थ विद्या है?

विचार शील— साहब बालकों का खेल है । यदि पदार्थ विद्या होती तो जिस पृथ्वी का व्यास ७८२६ मील है वह ५ फीट की और उस पर जहाज ५ इंच यानी बारहवें हिस्से दिखाना क्या गणित से बाधित नहीं है । जहाज ५ इंच का दिखाया था सो क्या जहाज ६६० मील की ऊंचाई का होता है । यदि जहाज जो करीब ४० फीट ऊंचा होता है पृथिवी पर सरसों के दाने की बराबर दिखाते तब आपकी पदर्थ विद्या की शिक्षा जान पड़ती बिना गणित के चाहे जैसा दिखा कर अपने पक्ष को पुष्ट कर लेना इस से पक्ष पुष्ठ नहीं होता किन्तु शंका का ठिकाना होता है । देखो चित्र में । ग देखने वाला क जहाज को अधिक से अधिक ८ मील से देख रहा है उस में ख समुद्र की सतह गणित से ११ फीट पृथिवी की ऊंचाई है और जहाज भी समुद्र की सतह से ११ फीट ऊंचा है तब देखने वाले को जहाज का ऊपरला तल भाग दीखना चाहिये। मस्तूल घ ६०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फीट वा १०० फीट ऊंचा दिखाकर पृथिवी को गोल बताना भ्रांति है मस्तूल के ऊपर का भाग दीखने का कारण वायु की नीचे मुटाई और उपर हलकाई है। सो दिखा चुके हैं ।

किंच—पृथ्वी को गोलाकार बनाने में पहले जहाज़ को मस्तूल दिखाया जाता है क्यों कि पृथ्वी की गोलाई की आड़ में छिपा रहता है यह मस्तूल की ऊंचाई का दीखना गणित से बाधित दिखा चुके हैं कि पृथिवी की ऊंचाई मस्तूल के बराबर नहीं है इस में पृथिवी गोल नहीं है। भाप या वायु के कारण जो नीचे मोटी और ऊपर हल्की होती है मस्तूल का ऊपरी भाग पहले दिखाई देता है क्यों कि ऊपर २ नेत्र के विषय का प्रति बन्धक भाप या वायु सूक्ष्म है उस ही का उदाहरण दूसरा दिखाया जाता है। जिस के विचार करने से स्पष्ट ज्ञात हो जायगा कि भाप या वायु ही नियमित कारण है पृथिवी की गोलाई की ऊंचाई का कारण नहीं है। जब हम खडे हो कर किसी ही दिशा को देखते हैं तब पृथिवी से लाखों मील ऊंचे तारे जिन का सम्बन्ध पृथिवी से नहीं है ऐसे ऊपर वाले स्पष्ट दिखाई देते हैं और नीचे वाले यद्यपि पृथ्वी ऊंचे हैं तो भी ऊपर वाले तारों से कम दिखाई देते हैं। धुंधले से दीखते हैं वा नहीं भी दीखते हैं इस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से यही प्रतीत होता है कि पृथिवी की आड़ में तो नीचे वाले तारे हैं नहीं। ऊपर हैं। फिर नीचे वाले तारों के धुंधले दिखाई देने वा न देने का कारण पृथिवी की आड़ तो रही नहीं, कोई दूसरा ही कारण है सो वह स्पष्ट भी होता है कि भाप है जिस तरफ भाप या वायु या भाप के समूह बादल आदि हैं उधर कम तारे दृष्टि पड़ते हैं और किसी कारण से जब भाप आदि की मुटाई घट जाती है तो नीचे वाले तारे भी साफ दृष्टि पड़ते हैं इस से नेत्र के देखने में पृथिवी की ऊंचाई बाधक नहीं है किन्तु भाप आदि हैं। इस का कारण गणित बाधित प्रत्यक्ष दृष्टि बाधित जो पृथिवी की ऊंचाई की आड़ बता कर पृथिवी को गोल बताना भ्रम जनक है।

किंच—उक्त कही हुई वार्त्ता से स्पष्ट होती है। ७, ८ मील की दूरी पर ऊंचे २ वृक्ष देखने से वहां भी भाप या दूसरा कारण मृत्तिका के रेणु जो कि नीचे मोटे और ऊपर सूक्ष्म और पतले होते हैं जो धमाले की सूर्य से आई हुई रोशनी में दिखाई देते हैं। ऊपर हल्के और सूक्ष्म और नीचे भारी और मोटे होते हैं यह हेतु प्रत्यक्ष सर्व जन प्रसिद्ध हैं। इस से भाप रजादि कारण ऊंचे २ वृक्षों के देखने में श्रेष्ठ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देखो नक़शा

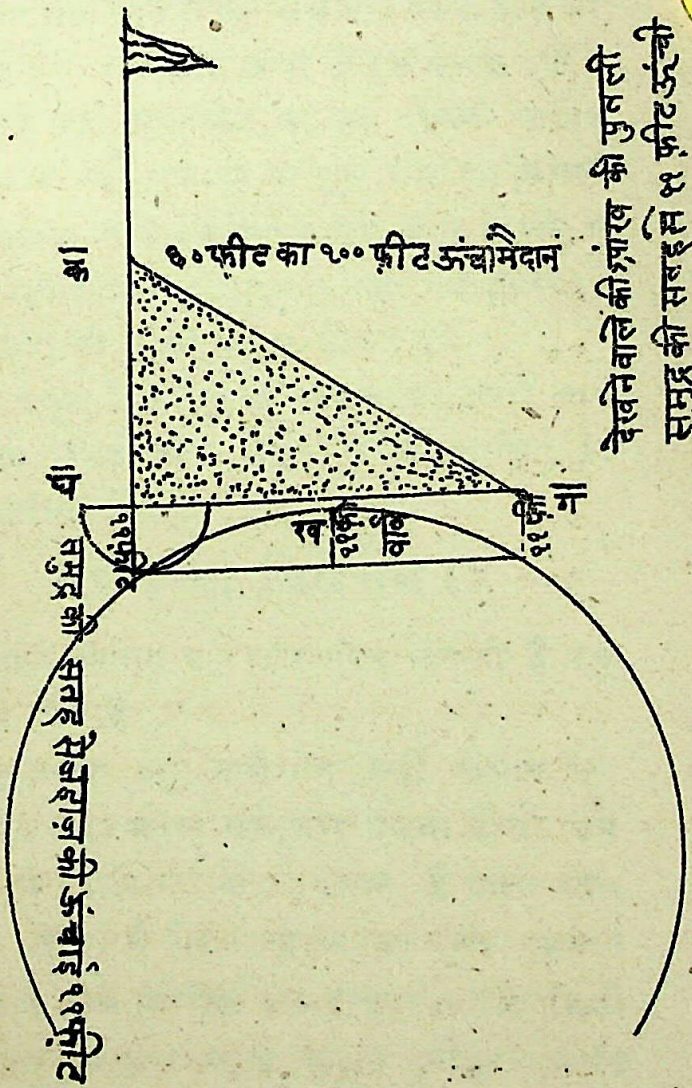

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हेतु हैं पृथ्वी की उंचाई की आड़ बता कर पृथिवी को गोल बताना असम्भव है क्योंकि वृक्ष की ६० या १०० फीट ऊंचे ८ मील की दूरी पर से गणित से ज्ञात हुई ११ फीट पृथिवी की आड़ और देखने वाले की आंख पृथिवी से ५ फीट ऊंची है इस कारण वृक्ष ६ फीट नीचे का भाग छोड़ कर कुछ दीखना चाहिये सो दीखता नहीं वृक्ष ६० या १०० फीट की ऊंचाई वाला दीखता नहीं इस कारण वृक्ष के न दीखने में गोल पृथिवी की आड़ कारण न ठहर कर दूसरा ही कारण खोजती है सो कारण दिखा चुके।

यह समुद्र में जहाज़ के मस्तूल का ऊपरी भाग दिखा कर पृथिवी गोल बताना गणित बाधित वा प्रत्यक्ष बाधित है।

नं० ३ का विवेचन।

हमारी निगाह सर्व ओर गोल देखती है इस से पृथ्वी गोल है।

शङ्का—यह हेतु समीचीन नहीं क्योंकि एक स्थान पर खड़ा मनुष्य सर्व ओर देखता है तो उस के नेत्र का विषय सर्व ओर समान है इससे गोल दिखाई देता है जैसे केन्द्र के सब ओर समान रेखाओं के होने से गोल क्षेत्र होता है। यदि किसी बड़े मैदान सम धरातल में त्रिकुटा चौकुटा आदि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कितने ही कूटा वाला चबूतरा ऐसा बनाया जाय जो नेत्रके विषय में अधिक बड़ा हो उसके मध्य भाग में मनुष्य खड़ा होकर देखे तो सर्व ओर मनुष्य के नेत्र का विषय समान होने से वह गोल ही दिखाई देगा। यद्यपि वह आकार में त्रिकूटे, चौकूडे आदि अनेकाकार हैं तदपि उसे देखने वाले के नेत्र विषय से अधिक दूर होने के कारण उसके कोण न दीख कर गोल ही दृष्टि पड़ेंगे। ऐसे उक्त हेत्वाभाव से पृथ्वी को गोल मान लेना क्या शङ्का का स्थान नहीं है नहीं अवश्य ही है।

किञ्च—सब तरफ गोल दीखने में ऊपर आकाश और नीचे पृथ्विी है तीसरी चीज़ है नहीं इस से दोनों मिले जिसको क्षितिज कहते हैं वह गोल ही दीखने चाहिये क्योंकि नेत्र का विषय सर्व ओर समान है इस हेतु से पृथ्वी को गोल बताना भ्रांति है।

किञ्च—सब ओर नीचा गोल दीखता है यह कहना हेतु नहीं किन्तु बिना विचारे बालकों का खेल है क्योंकि किसी स्थल में पृथिवी को ऊंचा कहीं नीचा कहकर गोल बताना भ्रमरूप हैं। आप से पूछा जाता है कि जब सब तरफ से नीचा दिखाई देता है तब हरद्वार की तरफ से नहर आई उधर ऊंचा और कानपुर की तरफ गई वह नीचा यह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह त्रिकूटा और चौकूटा चबूतरा २५ मील भुजावाले हैं। केन्द्रसे देखनेवाले का नेत्र विषय १० मील है। वह चबूतरों को गोल ही देखता है इसलिये पृथ्वी किसी प्रकार की हो यदि नेत्र विषय से अधिक होगी तो गोल ही दिखाई देगी। इस कारण नेत्र का विषय ही गोल है। पृथ्वी गोल नहीं है।

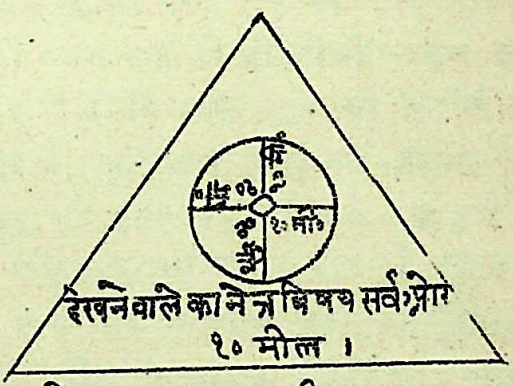

देखनेवाले का नेत्र विषय सर्वत्र १० मील।

त्रिकूटा चबूतरा २५ मील भुजा वाला

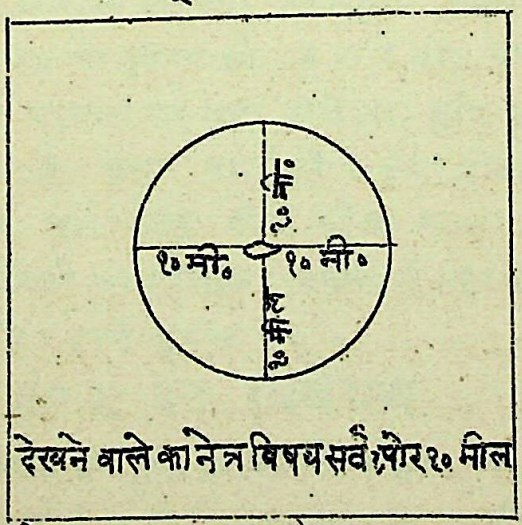

देखनेवाले का नेत्र विषय सर्वत्र १० मील

चौकूटा चबूतरा २५ मील भुजा वाला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वहां ही आजाते हैं। इस से पृथिवी गोल है।

प्रति-यह हेतु मन माना संकल्पित है क्योंकि वादियों के गोलाकार पृथिवी पर सीधे जहाज चलने के कारण ठीक नहीं है। सीधे चलने की क ख ग घ चार गति हैं वह चारों ही ठीक नहीं हैं।

क १—सूर्य के सम्मुख को सीधा मान कर जहाज़ का सीधा चलना ठीक नहीं क्योंकि पृथिवी २३½ डिग्री टेढी घूमती मानी है तब सूर्य दक्षिणायन उत्तरायन दृष्टि पड़ता है इस के सम्मुख सीधा चलना ठीक नहीं बनता और पोलों में सूर्य सारे दिन छः महीना तक घूमता माना है तब उस की घूम के समान चलता है सीधा चलता नहीं परन्तु गोलाकार सर्व दिशाओं में घूमना जैसे थाली के किनारे पर गोल घूमने के समान होने से सीधा सीधा चलना नहीं होता। तैसे ही सर्व पृथिवी पर मध्य रेखा जो पूर्व से पच्छिमी है उस पर सीधा चलना नहीं हो सकता है क्योंकि पूर्व पच्छिमी मध्य रेखा पर समुद्र है नहीं जिस के मार्ग से जहाज़ को सीधा खेते हुये चले जांय और जहां के तहां आजायं अथवा जब पृथिवी तिरछी होकर न घूमे तब पृथिवी पर सूर्य के सम्मुख चलने से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीधा चलना सम्भव है सो है नहीं। वादी ने पृथिवी तिरछी घूमती मानी है इस लिये हेतु भ्रांति रूप है।

ख-कुतूबुनुमा को रख के सीधा चलना माने सो भी ठीक नहीं प्रतीति से वाधित है। इसकी सुई के पास चुम्बुक पत्थर की एक डली रखदी जाय तो सुई उत्तर दिशा को छोड़ देती है तो समुद्र में तो अनेक चुम्बुक पत्थर के पहाड़ों का सङ्गम होता है। इस कारण कुतुबुनुमा के भरोसे पर सीधा चलना भ्रांति रूप है।

ग-यदि ध्रुवतारे को देखते हुये सीधा जाना कहै क्योंकि ध्रुवतारा सदैव उत्तर में ही रहता है उसको उत्तर मान सीधे जा सकते हैं। यह कहना भी बिना विचारे है। पृथिवी गोल तिरछी घूमती में ध्रुव को उत्तर में कहना असम्भव है क्योंकि भू स्थित पुरुषों की कोई दिशा नियत नहीं है।

घूमते पुरुष को सब ही दिशा एक है देखो नं० ११ के विवेचन में। आकाशी एक लकीर ही दिशा है वह घूमने से सर्व ओर एक ही है। तब कैसे पृथिवी स्थित पुरुष निश्चित कर सकते हैं कि ध्रुव उत्तर में ही है जैसे सूर्य पूर्व ही में है। ऐसे मानते हुए क्यों भ्रम के जाल में फंस रहे हैं क्योंकि पूर्व से पश्चिम को गमन करते सूर्य को स्थिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का संकेत वादी जो कर रहे हैं वह ध्रुवतारे को पृथ्वी के सम्मुख शलाका से बंधा हुआ एक स्थिर देखते हुये उसमें स्थिर बुद्धि छोड़ पृथ्वी के साथ घूमता क्यों नहीं मानते अथवा भ्रम छोड़ पृथ्वी को स्थिर सूर्य को चर मानने में सत्यार्थ पद पर क्यों नहीं पग धारण करते जब ध्रुव का स्थिरपना सशङ्कित है तब उसको उत्तर मान कर सीधा गमन करना भी शङ्का का स्थान है। यदि ध्रुवतारे को देख कर ही सीधा गमन करना इष्ट है तो रात्रि में ही गमन होगा जब दिन में ध्रुव न दृष्टि पडेगा तब जहाज़ को खड़ा कर लिया जायगा-यदि ऐसे किसी ने यात्रा करी होय तो कहो इस कारण यह हेतु बाधित है। ऐसे २ हेतुओं से सीधा गमन मानने वाले वादियों के संकल्प असम्भव हैं। तब जहां से चले वहां आ जाने में पृथ्वी को गोलाकार कहना सत्यार्थ नहीं है।

जब गोले पर सर्व दिशा समान रूप हैं तब गोलाकार भ्रमण कर भी जहां से चले वहां आने की सम्भावना है जैसे समस्थल थाली पर चिउंटी गोल घूमने से वहां की वहीं आजाती है।

इस कथन से जो कोई पृथ्वी को बड़ी स्थिर समधरातल मान उसके ऊपर छोटे से सूर्य को चिउंटी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की जो गोल भ्रमण करता माने तो जहां का तहां आजाना सम्भव प्रतीत होता है।

घ-यदि कोई कहे कि हम समकोण (Right angle) बनाते हुये पृथ्वी पर चल कर वहां के वहीं आजायंगे यह कहना बिना विचारे बालकों का ख्याल है अन्त में बिगाड़ना पड़ता है। तुम तो जिस पृथ्वी पर समकोण बनाकर चलने का उद्यम कर रहे हो। वह एक मिनट में ५७ मील करीब घूमती है सो भी सीधी नहीं २३॥ डिगरी झुकी हुई तिरछी घूमती है और उसी समय सूर्य की प्रदक्षिणा में ११२० मील दौड़ती भी है यह पृथ्वी की उक्त वार्त्ता स्मरण रखकर चलिये कैसे उस पर समकोण बना कर जहां से चल कर वहीं आजाने का साहस करते हो यह भ्रांति रूप असम्भव है भला कहीं वहां का वहां आजाना सत्यार्थ हो सकता है जहां पृथिवी किसी दिशा को घूमती है किसी दिशा को प्रदक्षिण देती है तिस पर भी तिरछी घूमती और ही दिशा को समकोण बना कर सीधा चल यात्रा करने से जहाँ के तहां ही आने का हेतु बना कर क्यों लोगों को भ्रम में डालते हो। इस से तो यही प्रतीत होता है कि नारंगी के आकार गोल पृथिवी भ्रमण करती पर समकोण तो बनता नहीं गोल चलने ही को समकोण मान स्थिर पृथ्वी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थाली के समान समधरातल पर गोलाकार घूम कर वहां के वहां ही आजाना हो सकता है।

इस से यही निरधार हो सकता है कि पृथ्वी गोले के आकार तिरछी घूमती पर चले जहां से वहां नहीं आ सकते जिस से पृथिवी गोले के आकार ठहरे। इस कारण पृथिवी को गोले के आकार मानना एक भ्रांति है। सत्यार्थ भावार्थ तो यह है कि स्थिर पृथिवी पर गोलाकार घूम कर जहाँ के तहां आजाते हैं। परन्तु पृथिवी गोलाकार घूमती है इस पक्षपात से वादी अनेक मन गढ़न्त रचना को कहते हैं गोलाकार पर समकोण बन जाता है पृथिवी किसी दिशा को तिरछी घूमती है किसी दिशा को प्रदक्षिणा में दौड़ती है ऐसी भू पर भी सीधा चल कर जहां के तहां आजाते हैं विवेचन करने से ऐसे बेजोड़ असंभव रूप जाने जाते हैं तातै भ्रांति रूप है।

नम्बर ५ का विवेचन।

वादी—चन्द्र ग्रहण समय पृथ्वी की छाया गोल पड़ती है इस से पृथ्वी गोल है।

मति—पृथ्वी को गोल का संकल्प कर पहले ही पक्ष बनालिया फिर उस की पक्ष को हेतु बना कर आप ही मन माने लड्डू खाकर पक्ष को साधन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर लिया इस से हेतु को पक्ष वा हेतु दोनों रूप होने से दोनों ही शङ्का के स्थान हुये । अभी तो चन्द्र ग्रहण पृथ्वी की आड़ से होता है यही सशंकित है तब पृथ्वी की छाया गोल पड़ना क्यों न सशंकित हो । क्योंकि पृथ्वी गोलाकार विवादापन्न है । दोनों पक्ष और हेतु मन माने घर जाने करने से पक्ष का साधन नहीं हो सकता ।

भावार्थ—पृथ्वी की आड़ से चन्द्र ग्रहण कहना और पृथ्वी जो आड़ रूप हुई उस को गोल कहना और उस ही को हेतु बना कर पृथ्वी गोल की पक्ष साधन करना यह वार्ता पक्षपातियों के मन को आनन्दित करती है । मध्यस्थ पुरुषों को तो खेद ही का कारण है क्योंकि दोनों पक्ष वा हेतु अपने मन माने हैं ।

स्मरण रक्खो कि सूर्य की प्रदक्षिणा पृथ्वी करती है तैसे ही पृथ्वी की प्रदक्षिणा चन्द्रमा करता है यह नितान्त भ्रम है— सूर्य को स्थिर मान कर तो पृथ्वी प्रदक्षिणा दे भी सकती है । परन्तु पृथ्वी १ सैकिंड में १८॥ मील वा १ मिनट में ११९० मील वा १ दिन में १५८८४०० मील और १४ दिन में २२३७७६०० मील सूर्य की प्रदक्षिणा में चलती है तब चन्द्रमा २८ दिन में कैसे प्रदक्षिणा कर सकता है । चन्द्रमा जिस दिन पृथिवी के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पच्छिमी किनारे से चला तो उस के साथ उस को भी चलना ही पडेगा क्योंकि उस को पृथिवी की प्रदक्षिणा देनी है। तब १ दिन में १५८८४०० मील उस के पच्छिमी किनारे से चला। ऐसे २ चलते २ चौदह दिन में पृथिवी के पच्छिमी किनारे २२३७७६०० मील के भाग से पूर्वी किनारे के भाग पर आ गया तब क्या हुआ। पृथिवी तो पूर्व को घूमी तथा चली और चन्द्रमा ने पच्छिम की ओर आकाश में गमन आरम्भ किया १४ दिन तक पच्छिम की ओर गमन करने को चला तब पृथिवी तो पूर्व को जारही है और चन्द्रमा उस की प्रदक्षिणा की फिक्र में पच्छिम को चला। भला पृथिवी तो एक दिन में पूर्व को १५८८४०० मील चली। चन्द्रमा को प्रदक्षिणा भी देनी है और पृथिवी के साथ भी रहना है। पृथिवी पूर्व को जा रही है और चन्द्रमा पच्छिम को। भला इस विरुद्ध चाल में चन्द्रमा की तेज़ चाल कितनी लाखों मील वर्गित संवर्ग आकाश में होनी चाहिये। पृथिवी की परिधि पर १ दिन में १५३३८१ मील चन्द्रमा चलता है।

भावार्थ—परिधि के २८वें भाग में ५४७८ मील चल रहा है और पृथिवी एक दिन में १५८८४०० मील चल रही है जब १४ दिन में २२३००८०८ मील

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का अंतर हुआ तब क्या चन्द्रमा पृथिवी के साथ चल सकता है क्योंकि इसी प्रकार चन्द्रमा को १ वर्ष में पृथिवी की १३ बार प्रदक्षिणा देनी है तब आकाश खंड में चन्द्रमा की प्रदक्षिणा किस रीति से पूरी हो सकती है। कदापि नहीं। यदि कहो कि प्रदक्षिणा तो हो सकती है परन्तु चन्द्रमा का गमन मिनटों में लाखों मील होगा तिस पर भी चन्द्रमा का प्रदक्षिणा देना संभावित नहीं है।

वादी—ऐसा ही मान लिया कि उस की चाल मिनटों में लाखों मील की है तो क्या हानि आकाश में क्या कमी।

प्रति—आकाश में तो कमी नहीं है चाहे जितनी तेज़ चाल हो जाओ परन्तु चन्द्र ग्रहण में पृथिवी की छाया घंटों तक पड़नी और सर्व पृथिवी की गोल छाया चन्द्रमा पर ठहरनी दोनों ही असम्भव हो जायं और ग्रहण सर्व ग्रासी तथा बहुत काल तक पड़ता ही है इस लिये चन्द्रमा का प्रदक्षिणा देना और ग्रहण का पड़ना महा शङ्का का स्थान है।

वादी—पृथ्वी की आकर्षण से बंधा चन्द्रमा उसकी प्रदक्षिणा देता है। पृथ्वी सूर्य की आकर्षण से बंधी हुई उसकी प्रदक्षिणा देती है इस में चाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कितनी ही बढ़ जाय कुछ हानि नहीं। अपनी २ आकर्षण से कार्य हो रहा है कोई किसी का बाधक नहीं है इस कारण ग्रहण पड़ना और बहुत काल तक तथा सर्व ग्रासी होना इस में कोई दोष नहीं आता है।

प्रति—यह कहा सो जाना परन्तु जब सूर्य की आकर्षण से बंधी हुई पृथिवी और पृथिवी की आकर्षण से बंधा चन्द्रमा मान लिया जाय तो यह बड़ा दोष आता है कि पृथिवी २४ घंटे में अपनी घूम पूर्ण करती है उस से बंधा चन्द्रमा भी २४ घंटे में पृथिवी की प्रदक्षिणा करेगा सो माना नहीं पृथिवी की प्रदक्षिणा करना २८ दिन में माना है और सूर्य की आकर्षण से बंधी हुई पृथिवी ३६५। दिन में प्रदक्षिणा करती है तैसे ही चन्द्रमा भी उसकी आकर्षण से बंधा ३६५। दिन में प्रदक्षिणा करेगा सो माना नहीं। चन्द्रमा तो १३ वार ही पृथिवी के साथ सूर्य की प्रदक्षिणा में रहता है ऐसे ही पृथिवी की आकर्षण से बंधे हुये चन्द्रमा को मानना शङ्का का स्थान है और स्कूलों में विद्यार्थियों को इसकी प्रतीत के लिये चन्द्र घुमाने का यंत्र भी दिखा देते हैं बीच में सूर्य स्थानी लम्प जला कर चारों तरफ पृथिवी को गोलाकार बना घुमाते हैं जिस पृथिवी में एक शलाका लोहे की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लगा कर उस पर चन्द्रमा को जोड देते हैं जब कोई प्रश्न करे यह शलाका क्या है तब यही उत्तर मिलता है कि यह शलाका पृथिवी की आकर्षण शक्ति के स्थानी है। तिस पीछे यह पूछा जाता है कि एक कल चन्द्रमा के घूमने की लग रही है वह क्या है तब उस का उत्तर नहीं मिलता क्योंकि आकर्षण को बतावै सो पहले ही आकर्षण शक्ति स्थानी शलाका कह चुका इस कारण मौन ही ग्रहण करना पड़ता है यह नं० १ में दिखा चुके हैं। इस से पक्ष साधन को ये वार्ता मन गढ़न्त बनाई है जिस से पक्ष का साधन यथार्थ नहीं होता है। ऐसे भ्रम रूप यंत्रों से और बिना विचारे संकल्पों से जो ग्रहण पड़ती बार गोल छाया चन्द्रमा पर पड़ती कह कर पृथ्वी को गोल बताना महा शङ्का का स्थान होने से भ्राँति रूप है।

नं० ६ का विवेचन

वादी—जितना ऊंचा चढ़ते हैं उतना ही अधिक दीख पड़ता है इस से पृथ्वी गोल है।

प्रति—यह गोल होने का हेतु सत्यार्थ नहीं है क्योंकि समधरातल पर भी ऊंचे चढ़ने से अधिक दिखाई देता है इस में यही कारण है जो नं० २ में दिखा चुके हैं कि नेत्र का विषय गोल है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूसरा कारण यह है कि जो नीचे पृथ्वी के पास वायु के कण अन्य पदार्थों के योग से भारी और ऊपर ऊपर हलके होते हैं और पृथिवी पर पृथिवी की रज नीचे भारी और ऊपर हल्की उड़ती रहती है और पृथिवी में गर्मी के योग से निकली जो भाप उस के क़तरे नीचे मोटे ऊपर छिन्न भिन्न हुये छोटे यह प्रत्यक्ष दृष्टि पड़ते हैं वह नीचे स्थान में नेत्र के विषय को रोकते हैं इस लिये दृष्टि दूर के पदार्थों को ग्रहण नहीं करती। ऊपर चढ़ने से प्रति बन्धक घटते जाते हैं इस से दूरी के पदार्थ ग्रहण किये जाते हैं ऐसी अवस्था देखने की सम धरातल पर भी देखी जाती है इस से यह हेतु विपक्ष साधन करने से विरुद्ध वा अनेकाँतिक हेत्वा भास है और पृथिवी को गोलाकार साधन करने में असमर्थ है।

किञ्च—और यह बात किसी दिन अबर होता है वा कोहरा पड़ता है तब दूरी के पदार्थ नीचे भाग पर नहीं दीखते इस में अधिक न दीखने के कारण भाप, ओस, कोहरा अबर हैं वह सम धरातल पर भी होते हैं इस कारण उक्त हेतु से पृथिवी को गोल मानना भ्रम है।

भावार्थ—भाप ओस कुहरा अबर यह सब नीचे भाग पर मोटे और ऊपर पतले होते हैं इस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से नीचे भाग में दृष्टि विषय को रोकते हैं और ऊपर के भाग में नहीं रोकते हैं इस हेतु से पृथिवी धरातल में ऊपर चढ़ते भी अधिक दीख पड़ता है यातें पृथिवी के गोलाकार बनाने में यह हेतु भ्राँति रूप है ।

नम्बर ७ का विवेचन ।

वादी—तारे सब गोल हैं और पृथिवी भी एक तारा है इस से यह पृथिवी भी गोल है ।

प्रति—इस हेतु से गोल बताना बाधित है क्योंकि पदार्थ नेत्र से दूर होने पर गोल ही दृष्टि पड़ते हैं ।

कारण—देखने की पुतली गोलाकार एक विन्दु समान है (स्वयं गोल है) निकटवर्ती पदार्थ अनेकाकार दीखते हैं क्योंकि गोल पुतली अपने विषय के भीतर निकट पदार्थ को सर्वाङ्ग ग्रहण करती है वहाँ तक तो सर्वाकार दीखता है पीछे पदार्थ जितना २ दूर होता है उतना विषय दूर होने से डिगरी के बाहर पदार्थ हो जाता है तब उस के अनेकाकार को छोड़ कर गोलाकार पुतली गोलाकार ही ग्रहण कर लेती है जिस पर भी पदार्थ अधिक दूर होता है तब सूक्ष्म २ गोलाकार ग्रहण करती रहती है पश्चात् विषय के बाह्य होने पर ग्रहण नहीं करती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस कारण दूरी पर नेत्र इन्द्रिय का विषय ही गोल मानना प्रमाण भूत है।

उदाहरण—जैसे बालक चौकोर वा पुरुषाकार पतंग उड़ाते हैं वह दूरी पर आसमान में एक विन्दुवत गोलाकार ही दीखती है अथवा कौमिटस (Comats) जाति के सितारे अनेकाकार तुमने माने हैं। देखो नं ४७, ४८ में वह दूरी पर होते हुये गोलाकार दृष्टि पड़ते हैं। इस लिये यह कहना कि तारे गोल दीखते हैं तैसे ही पृथिवी तारा होने से गोल है यह बताना महा भ्रांति सूचक है।

किंच तारे तो पृथिवी वाले मनुष्यों को दीखते हैं इस लिये उन को गोल कहना संभवित है। परन्तु दूसरे चन्द्र वा तारों पर विना जाये पृथिवी को बिना देखे सितारा बताना फिर उसमें गोलाकार का संकल्प करना—यह संकल्प भ्रम रूप है। पृथ्वी को गोलाकार बनाने के लिये जो अनेकाकार तारे आप के स्वीकृत हैं इस से स्ववचन घात कर तारों को गोलाकार बना कर पृथिवी को गोलाकार बताना महा भांति है।

नं० ८ का विवेचन।

दक्षिणोत्तर सफर करने में नये २ तारे दीखते हैं इस से पृथिवी गोल है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शंका-यह हेतु बाधित है क्यों कि पृथिवी गोलाकार है उस के चारों तरफ तारे सितारे हैं, फिर दक्षिण उत्तर सफर करने में तारे नये २ कहते हैं सो क्या पूर्व पश्चिम वा और किसी दिशा को गमन करने से नये २ तारे न दृष्टि पड़ेंगे। बड़ा आश्चर्य जनक हेतु है जिस से पृथिवी गोल बनाई है। प्रिय पाठको ! जब पुरुष गमन करेगा तब अगले तारे दृष्टि वाले पास आकर पीछे को जांयगे और सम्मुख नये २ दृष्टि पड़ेंगे। चाहे पृथिवी गोलाकार हो या समधरातल हो। चलने वाले सफर करने में ज्यों २ वह आगे को चलेगा त्यों २ नये २ तारे दीख पड़ेंगे। न मालूम क्यों ऐसा हेतु देकर पृथिवी को गोल बनाया है जो महा शङ्का का स्थान है।

नं ९ का विवेचन

वादी—कुछ एक भाग में दिन और कुछ एक भाग में रात्रि होती है याते पृथिवी गोल है।

भावार्थ—अमरीका में दिन और हिन्दुस्तान में रात्रि होती है। ऐसी पृथिवी गोलाकार घूमती हुई २४ घंटे में १२ घंटे का दिन और १२ घंटे की रात्रि बनाती है और सूर्य जो एक बहुत बड़ा पिण्ड पृथिवी से १३ लाख गुना है उस की प्रदक्षिणा देती हुई ३६५। दिन रात्रि में १ वर्ष पूरा कर लेती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृथिवी १ छोटी सी उस का व्यास ७८२६ मील, २५००० मील परिधिवाली सूर्य एक स्थिर पिण्ड जो केन्द्र में है उस की प्रदक्षिणा करती है और जो पृथिवी हम ने गोलाकार घूमती हुई मानी है उस का हेतु बड़ा प्रबल और प्रत्यक्ष यह है कि गोलाकार पृथिवी के दो भाग करते हैं तब एक अमरीका की तरफ का अर्द्ध भाग दूसरा हिन्दुस्तान की तरफ का अर्द्ध भाग—जब वह पृथिवी गोल रूप घूमती है तब अमरीका की तरफ का अर्द्ध भाग सूर्य के सन्मुख आता है जब सूर्य की क्रान्ति पड़ने से १२ घंटे का दिन होता है। फिर घूमती है तब अमरीका के अर्द्ध भाग में १२ घंटे की रात्रि और हिन्दुस्तान की तरफ के अर्द्ध भाग में १२ घन्टे का दिन हो जाता है ऐसे २४ घंटे में घूमती हुई पृथिवी १२ घंटे का दिन और १२ घंटे की रात्रि सदैव करती रहती है जिस को १ दिन रात्रि २४ घंटे का कहते हैं इस हेतु से हम पृथिवी को गोलाकार घूमती हुई मानते हैं।

प्रति—यह सर्व आप का कथन विवेचन किये स्वबचन घातक तुम्हारी प्रतिज्ञा की हानि आदि दोषों का स्थान है इसका विवेचन करना 'मध्यस्थ पुरुषों का परमावश्यकीय कार्य है। प्रिय पाठको !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वादी ने माना २४ घंटे को एक दिन राव और ३६५। दिन रात्रि का एक वर्ष।

भावार्थ—८७६६ घंटे का एक वर्ष यह सर्व प्रतिज्ञा भङ्ग होती है क्योंकि जब सूर्य एक बड़ा पिंड जो पृथ्वी से तेरह लाख गुना माना है सो प्रथम तो इस बडे पने ही में भ्रांति हैं। देखो नं० ५३। पृथिवी से सूर्य तेरह लाख गुना। दूसरे विद्वान ने देखो नं० ५४ पन्द्रह लाख गुना माना है-अब दोनों परस्पर ही विरुद्ध होने से किस का बचन प्रमाण और किस का अप्रमाण माना जाय! उस का फर्क (अन्तर) मध्यस्थ पुरुष गणित से स्वयं बिचार कर लेंगे और यहां भी दिखाते हैं।

पृथ्वी से सूर्य का बड़ा पना दो प्रकार है।

१—व्यास से (२) क्षेत्र से

१—व्यास से तो कह नहीं सकते क्योंकि वादी ने व्यास तो सूर्य का ८६७००० मील कह दिया है इस कारण साधिक १०८ गुना हुआ।

२—क्षेत्र में पृथ्वी का साधिक उन्नीस करोड़ १८००००००० वर्ग मील क्षेत्र है तब क्षेत्रफल से १३ लाख गुने से २४७००००००००००० वर्ग मील १५ लाख गुने में २८५०००००००००००० वर्ग मील दोनों में गणित से ३ नील ८० खर्व ३८००००००००००० वर्ग मील क्षेत्र का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्तर पड़ता है। ऐसे फर्क वाले गणितज्ञों के मन गढ़न्त सङ्कल्प से कहे हुये कथन को कैसे गणित जानने वाले स्वीकार कर सकते हैं जो गणित में १०, २० मील का भी फर्क होय तो उस गणित को अप्रमाण मानते हैं तब तो जहां ३ नील ८० खर्ब ३८०००००० ००००, वर्ग मील का फर्क गणित से है तब इसको कौनसा गणितज्ञ सत्यार्थ मान कर इस की प्रतीति कर सकता है इस कारण सत्यार्थ नहीं भ्राँति रूप मन गढ़न्त है।

यातो गणित अप्रमाण होने से सूर्य के बडेपन में अत्यन्त भ्रांति है। इससे यही प्रमाणित किया जाता है कि सूर्य पृथ्वी से बहुतछोटा है क्रांति अधिक धरने से दूर तिष्ठता हुआ भी छोटा ही दिखाई देता है और बडे २ पूर्व विद्वानों ने छोटा माना है और इस के छोटे होने से और भ्रमण करने से ही २४ घण्टे का रात्रि दिन सम्भव होता है यदि वादी के प्रसन्न करने को बड़ा मान भी लिया जाय तो फिर भी दोष क्योंकि बडे मटके समान जो सूर्य बड़ी क्रांति वाला उसके सम्मुख एक छोटी सरसों के सदृश पृथ्वी घूमती रहती है तो उसके ऊपर सूर्य का प्रकाश सर्व पर होना चाहिये। क्योंकि जब उस बडे मटके प्रकाशवान का प्रकाश सरसों को घेर रहा है। तब उस पर उसके अर्द्ध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

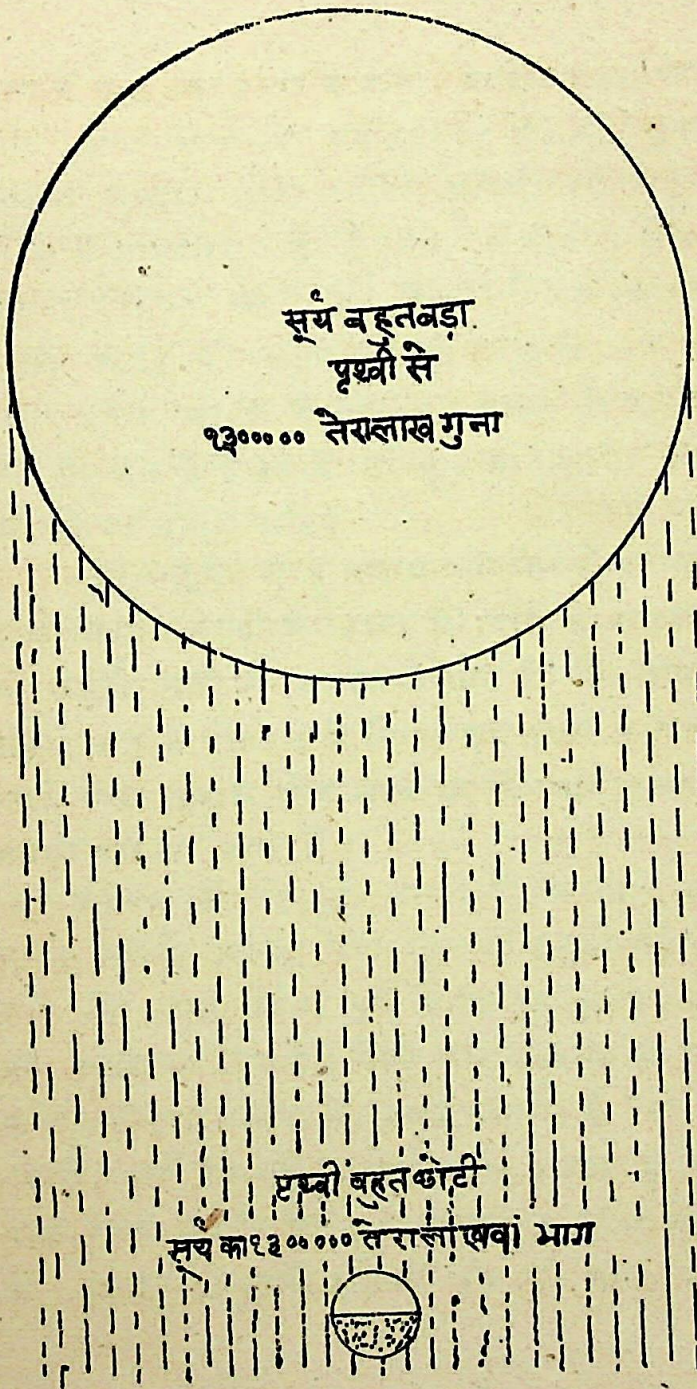

चित्र ११

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाग में पूर्ण प्रकाश तो न होगा क्योंकि उस पर अर्द्ध भाग की छाया पड़ रही है तब भी कुछ धुंधला प्रकाश रहेगा। जैसा पृथिवी पर अर्द्ध रात्रि में अंधकार होता है वैसा न होगा। और नं० ७१ में देखो सर रौबर्ट लिखते हैं कि रकाबी (गोल पिंड) की छाया सूर्य की तरफ ले जाने से कम होती जाती है और अंत मेंनष्ट हो जाती है। इस लेख के देखने से तो सूर्य का प्रकाश सर्व पृथिवी पर होना चाहिये।

वादी—सूर्य अपने प्रकाश की डिगरी बनाता हुआ छोटी २ सरसों के बराबर जो चीजें हैं उन पर भी अर्द्ध भाग में प्रकाश डालता है और छाया अर्द्ध भाग में होती है ये नियम रूप वार्ता है ताते आधे पर प्रकाश और आधे पर अंधकार मानना हमभी स्वीकार करते हैं।

प्रति—यह तो हम मानते हैं कि आधे पर छाया पडेगी परन्तु छाया बहुत ही हल्की पडेगी क्यों कि ऊपर दिखा चुके हैं कि सूर्य का प्रकाश सब तरफ पड़ रहा है। जैसी अंधेरी रात्रि की सी अंधेरी छाया रात्रि में देखी जाती है वैसी न पडेगी। क्यों कि तुम ने स्वयं नं ७१ में कहा है कि गोल पिण्ड सूर्य के ज्यों २ पास जायगा त्यों २ पिंड की छाया नष्ट होती जायगी और एक गोल पिंड

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेकर तुम सूर्य की तरफ चढ़ाओ तो उसकी छाया घटती जायगी यह प्रत्यक्ष हेतु कर के दृष्टि गोचर कर लो तब अर्द्ध भाग पर घोर अंधेरी रात्रि की सी छाया पड़ना—असम्भव क्यों नहीं है ? किंतु है ही यदि तुम्हारे प्रसन्न करने को ऐसा असम्भव को सम्भव मान भी लिया जाय तब तो तुम को अर्द्ध भाग पर प्रकाश उसी समय अर्द्ध भाग पर अंधकार मानना ही पड़ेगा और इन दोनों का एक ही समय है। दो नहीं हैं। रहा पृथिवी का अर्द्ध भाग शेष जो १२५०० साढे बारह हजार मील परिधि का है वह पृथिवी १२ घंटे ही में घूम कर जिस भाग में प्रकाश था उस भाग में अंधेरा और जिस भाग में अंधेरा था उस भाग में प्रकाश कर लेती है ऐसे पृथिवी घूमने से १२ घंटे में दिन और उन्हीं १२ घन्टों में रात्रि सर्वत्र पृथिवी पर हो जाती है क्यों कि उन का एक ही समय है कोई स्थान पृथ्वी में ऐसा शेष नहीं रहा जहां दिन रात्रि नहीं होती।

भला ऐसी अवस्था में दिन रात्रि १२ घंटे में दोनों पूर्ण हो गये तब २४ घंटे की प्रतिज्ञा कहां रही जिसे आप भिन्न २ काल दिन के १२ घंटे जुदे और रात्रि के १२ घंटे जुदे मान रहे हो। वह दिन और रात्रि होने की क्रिया का समय जुदा २ नहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है एक ही है जिस पृथ्वी पर कहीं प्रकाश (दिन) होता है उसी समय पृथ्वी पर कहीं छाया होती है यह दिन रात्रि के होने में एक ही समय दोनों क्रिया सम्भवती हैं। ऐसा नहीं जो काल पृथ्वी पर दिन (प्रकाश) का है उस से जुदा दूसरा काल रात्रि (अंधकार) का है क्योंकि जिस समय पृथ्वी एक १ घंटे में पूर्व को १०३७ मील घूमती है तब हिन्दुस्तान के अर्द्ध भाग में अपने ही ऊपर रात्रि करती है। उसी समय अपने ही ऊपर अमरीका के अर्द्ध भाग में दिन करती है दोनों का होना एक ही पृथ्वी पर एक ही समय है। पृथ्वी घूमने पर प्रकाश करने का जुदा एक घंटा और अंधकार करने का जुदा एक ऐसे दो घंटे भिन्न नहीं होते इस लिये एक ही घंटे में और एक ही पृथिवी पर दो क्रियायें होती हैं।

इस कारण १२ घंटे में दिन रात्रि दोनों तुम्हारे पृथिवी छोटी सी घूमने से होती है ताते तुम्हारी मानी हुई प्रतिज्ञा सर्व भंग होती है न दिन २४ घंटे का न वर्ष ८७६६ घंटे या ३६५। दिन का ठहरता है याते छोटी सी पृथिवी गोल घूमती हुई, सूर्य बड़ा स्थिर यह सर्व मन गढ़न्त संकल्प आप के भ्राँति रूप है। ठीक नहीं। इस कारण तुम ने जो कहा कि जब अमरीका के अर्द्ध भाग में १२ घंटे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का दिन तब हिन्दुस्तान के अर्द्ध भाग में १२ घंटे की रात्रि होती है इस हेतु से पृथिवी घूमती हुई और गोलाकार बताई है सो तुम्हारा कहा हुआ हेतु स्पष्ट नहीं है। भ्रांति का उत्पादक है तुम्हारे ही सिद्धान्त से बाधित है तब इस हेतु से आप दूसरे को कैसे संतुष्ट कर सकते हैं। कदापि नहीं।

वादी—१२ घंटे का दिन और १२ घंटे की रात्रि होती है यह निर्विवाद सत्यार्थ है जिस को घड़ी प्रत्यक्ष बता रही है।

प्रति—यह सत्य बात है और हम भी इस को मानते हैं परन्तु तुम्हारे छोटी पृथिवी घूमती हुई और बड़ा सूर्य स्थिर मानने में बाधा आती है सो दिखा चुके हैं। जो पृथिवी बड़ी स्थिर, और सूर्य छोटा घूमता हुआ मानते हैं उन के २४ घंटे की दिन रात्रि सम्भव है क्यों कि स्थिर पृथिवी के ऊपर सूर्य एक गैस के हन्डे के समान २४ घंटे चलता हुआ घूमता है तब उस का प्रकाश जहां पड़ता है वहां आगे २ उजाला और जहां प्रकाश नहीं पड़ता है वहां पीछे २ अंधेरा होता है। हण्डे का प्रकाश एक मर्याद रूप है तैसे ही सूर्य का प्रकाश भी मर्याद रूप है। यहाँ तक प्रकाश कर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घूमता रहता है यह वार्ता सत्यार्थ है क्योंकि जितने प्रकाश वान पदार्थ हैं उन का प्रकाश एक मर्यादं लिये ही होता है इस कारण २४ घंटे का एक दिन रात्रि और ३६५$\frac{१}{४}$ दिन रात्रि का १ वर्ष उक्त कहने वालों के बनता है इस को हम भी अभ्रान्ति स्वीकार करते हैं वह तुमने छोटी सी पृथ्वी वा बड़ा सूर्य बता कर माना नहीं ताते तुम्हारा हेतु भ्रांति रूप दिखा चुके हैं ।

नोट—बिना जैन शास्त्रों के देखे यह प्रश्न जैन समाज में कितने ही व्यक्तियों के प्रायः आते हैं उनको बडे खेद के साथ लिखा जाता है कि वह जैन शास्त्रों को तो पढ़ते नहीं और भूगोल भ्रमण वादियों के कथन से परिचित नहीं। तब बिना समझे ऐसे प्रश्न को लिख दिया करते हैं।

किञ्च इस जैने समाज में कितने ही जैन शास्त्रों को न समझकर भोले कुछ बाल अवस्था में टूटी फूटी भूगोल भ्रमण विद्या पढ़ कर उस के पक्षपाती बनकर जैनशास्त्रों से अनभिज्ञ शङ्का करने लगते हैं सन गढंत कर कहते हैं भरत क्षेत्र में दिन तब विदेहों में रात्रि जैनशास्त्रों में कही है। सो वर्त्तमान में प्रत्यक्ष है कि भारत जो हिन्दुस्तान के अर्द्ध भाग में दिन तब अमरीका के अर्द्ध भाग में रात्रि होती है तब अम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रीका में विदेह क्षेत्र सम्भव होता है जब वहां २० तीर्थंकर सदैव होने चाहिये सो अमरीका में १ भी तीर्थंकर नहीं इसकारण जैनशास्त्रों में गपोड़े लिखे हैं कुछ ठिकाना नहीं। ऐसे कहने वाले जैन शास्त्रों को जानते नहीं व्यर्थ मन गढ़न्त असत्य वार्त्ताओं से जैन शास्त्रों को कलङ्क लगाते हैं वह स्वयं कलङ्कित होते हैं। जैन शास्त्रों में तो भरत क्षेत्र में दिन तब विदेहों में भी दिन, भरत क्षेत्र में रात्रि तब विदेहों में भी रात्रि पाई जाती है अथवा कोई असत्य मन गढ़न्त संकल्प से सुमेरु पर्वत की आड़ से ही रात्रि मानते हैं। यह सब बिना शास्त्र के जाने व्यवस्था होती है। यदि शास्त्र जानते होते तो ऐसे असत्यार्थ मन गढ़न्त सङ्कल्प न करते। "अब गई सो गई अब राख रही को" इस न्याय कर जानने की इच्छा है तो विवेचन सहित त्रैलोक्य सार, सिद्धांत सार, त्रैलोक्य प्रज्ञप्ति श्लोक वार्तिक आदि ग्रन्थ जिनके लाखों श्लोकों में भूज्योतिष चक्र का वर्णन किया है उनको विवेचन पूर्वक देख और भूगोल भ्रमण वादियों के कथन को जो कह चुके हैं पूर्णतया देखो तब सत्यासत्य का निर्णय हो जायगा बिना विचारे सत्यार्थ वाद जो जैन शास्त्र हैं उसमें भ्रांति करना व्यर्थ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नम्बर १० का विवेचन।

पृथ्वी को गोलाकार बनाकर भ्रमण कराने में वादियों की बड़ी भारी युक्ति यह है कि नहर या बम्बा नाले जितने कुछ निकाले जाते हैं उनमें बडे २ इंजिनियर बडे २ विद्वान कहते हैं कि हमको १ मील में ८ इञ्च ढाल देना पड़ता है इस कारण पृथिवी गोल है।

शंका—इस युक्ति से पृथिवी गोल नहीं किंतु समधरातल ठहरती है और यह युक्ति पृथिवी के गोलाकार, होने को असम्भव कहती है विचार का स्थान है पृथिवी गोलाकार होते हुये १ मील में ८ इञ्च का ढाल है तब गोल पृथिवी जो २५ हाजर मील परिधि वाली है उस पर ६२५० मील नहर गमन करेगी तब पृथ्वी के अर्द्ध भाग पर पहुंचेगी तब वहां तक निचाई ५०००० पचास हजार इंच नीची हुई जिस के ४१६६$\frac{२}{३}$ फीट अर्थात् पूरी १ मील भी नीची नहीं हुई और अर्द्ध व्यास तक नीची मानी गई है ४००० मील फिर ऐसी पृथ्वी पर १ मील में ८ इञ्च का ढाल बताना गणित से कितना बाधित है जो ४००० मील पृथ्वी के अर्द्ध व्यास तक पृथ्वी नीची मानी गई है। इस की इञ्च २५३४४०००० होती हैं। फी मील ८ इञ्च के हिसाब से पृथ्वी की परिधि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२६७२०००० मील होती है फिर २५००० मील परिधि वाली पृथ्वी अनुमान कर १ मील में ८ इञ्च का ढाल बताना अत्यन्त भ्रांति रूप है।

किंच—पृथ्वी २५००० मील परिधिवाली मानी। १ मील काट कर (Level) सम बनाई जाय तो पृथ्वी में २५००० पहल हो जांयगे। जब पानी का बहाव पहलों पर कठिन रीति में होगा। यदि पूर्व हिन्दुस्तान के अर्द्ध भाग की तरफ नीचा होने से नदी बह भी जायगी परन्तु अमरीका के अर्द्ध भाग की नदी पूर्व गामिनी पूर्व में ऊंचा होने से उन का बहना असम्भव है याते पृथ्वी काटना या खोदना १ मील में ८ इञ्च बाधित भ्रान्ति रूप है।

किंच—यह नदी नहर के पानी के बहाव की भ्रांति रूप दिखाई अब रेल की पटरी बिछाने में १ मील में ८ इञ्च का ढाल या पृथ्वी का काट कर सम (Level) बनाने में अत्यन्त भ्रांति है सो सुनिये रेल कालका से कलकत्ता गई तब नीचे को गई यह तो माना जाता है परन्तु पृथ्वी का ढाल १ मील में ८ इञ्च के देने से अधिक नीची होगी लाभ क्या हुआ और कलकत्ते से कालका रेल जायगी। १ मील में ८ इंच के ढाल काटतेकाटते १००० मील ताईं ८००० इंच काटी गई सोई ८००० इंच पृथ्वी कालका की ऊंची है तब वहां स्टेशन समधरातल बनेगा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

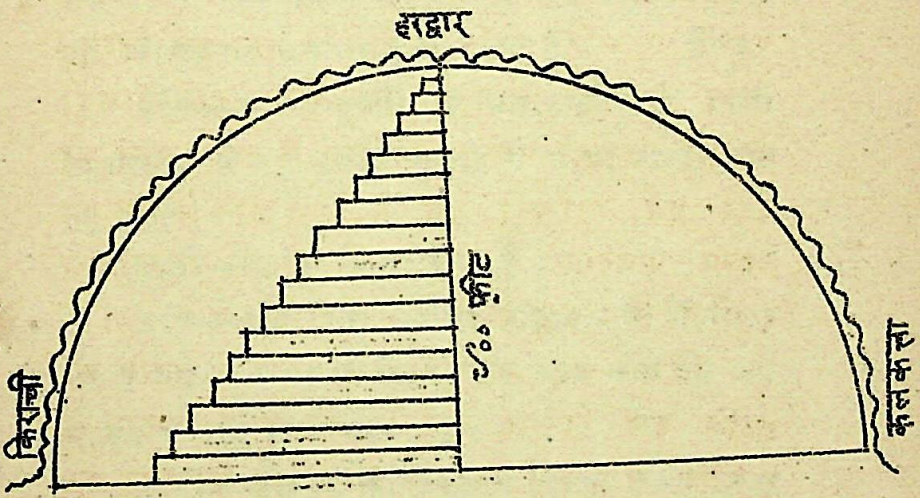

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और कलकत्ता जानेवाली रेल का स्टेशन १६००० इंच नीचा बनेगा क्यों कि ८००० इंच पृथ्वी नीची और ८००० इंच काटी गई ८००० इंच नीचा बने सो स्टेशन ऊंचे नीचे कहीं नहीं हैं। याते नहर का बहाव और रेल की पटरी १ मील में ८ इंच का ढाल काटना वा कम करना अप्रमाण है इस हेतु से पृथ्वी को गोलाकार बताना भ्राँति रूप है। किंच

प्रति—प्रश्न—पृथ्वी से जब जहाँ कहीं पानी निकलता है वह स्थान पृथ्वी में ऊंचा माना गया या नहीं ?

वादी—ऊंचा माना गया है।

प्रति—जब वह स्थान गोलाकार में ऊंचा माना गया तब पानी किधर को जाय क्यों कि उस स्थान से सर्व ओर नीचा है ?

वादी—जिधर को निचाव (ढाल) मिले उधर को जाय।

प्रति—पृथ्वी में जहां पानी निकलता है वहां से सर्व ओर नीचा है तब किधर जाय ?

वादी—जिधर को समुद्र का जल जो पृथ्वी से नीचा है उधर को जाय और उधर ही को पृथ्वी में निचाई है।

प्रति—यह तो माना परन्तु ऐसे नदियों का बहाव दीखता नहीं अफ्रीका में नाइजर नदी से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुद्र तो दक्षिण की ओर है जहां वह मिली है और नदी का बहाव शुरू में उत्तर को है।

वादी—यह तुम्हारा कहना भ्रम रूप है वहां पानी का निचास मिला जहां नदी का पानी सतह सम करने को रुक गया यदि निचास का धरातल सम कर के पानी अधिक होता जाता तो जिधर समुद्र होता उधर चल कर अन्त में समुद्र ही में मिल जाता।

प्रति—अब आप की उक्त वार्त्ताओं से विवेचन का समय है कि तुम्हारे कथन से यह नदी नहर नाले १ मील में ८ इञ्च के ढाल से बहते हैं वह पृथिवी को गोलाकार घूमती हुई का साधन करते हैं वा स्थिर समधरातल का साधन करते हैं।

विवेचन—जब पृथिवी गोलाकार मानी जाय तब तो पानी जहाँ से निकलता है सर्व ओर को बहना चाहिये क्यों कि पृथिवी के वह ऊर्ध्व भाग पर है। वहाँ से पृथ्वी सर्व ओर नीची है। पानी बहता है सो वह सर्व ओर बहता नहीं इस से पृथ्वी गोलाकार तो ठहरी नहीं और जिधर समुद्र जो आप का कथन है कि जो पृथिवी में नीचा होता है उधर समुद्र में मिल जाता है तब विवेचन करो कि पृथ्वी समधरातल हुई। कारण—कहीं समधरातल पृथ्वी ऊंची है वहां से पानी नीची तरफ को ढला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहां तक उस को निचाई मिली यदि किसी गढे में जा पड़ा तो अपनी सतह सम कर चल कर अंत में समुद्र में जा मिला है यह प्रत्यक्ष सर्व जन प्रसिद्ध वार्त्ता है।

इस कारण यही निर्धारित हुआ कि समधरातल पर ऊंचा कहीं नीचा है वह पानी उस पर ऊंचे से नीचे को चली जाती है पृथ्वी गोलाकार नहीं है और पानी बहने में जहाँ गढ़ा पाता है वहां अपनी लेविल सतह पूरी कर के आगे को बहता है यह वार्त्ता भी समधरातल पृथ्वी पर ही बनती है क्यों कि गोलाकार में तो ज्यों २ पानी बह कर बढेगा त्यों २ उस की गुलाईका गढ़ा बढ़ता ही जायगा जिस में (Level) सम कर सक्ता ही नहीं।

अधिक क्या लिखें इस एक मील में ८ इञ्च के ढाल मानने से विवेचन किये पृथ्वी स्थिर समधरातल ही निर्विवाद ठहरती है और गोलाकार घूमती मानने में बडे दोष आ पडते हैं याते उक्त आप का कहो हेतु गोलाकार घूमती न साधन कर स्थिर समधरातल ही साधन करता है। ऐसे हेतु भ्रांति रूप स्वपक्ष घातक ही हैं।

यहां तक १ नम्बर में पृथिवी गोल भ्रमण करती है और ८ नम्बर गोल होने के हेतु जो भूगोल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भ्रमणवादियों ने कहे जिन का विवेचन कर इन को भ्रांति दिखा पी० एल० जौगरफी का तृतीय भाग का प्रथम खण्ड पूर्ण किया इस के आगे दूसरे तीसरे खण्ड में नम्बर ८० में ७० बाकी रहे जिन का विवेचन कर तदन्तर चौथे खण्ड में पृथिवी स्थिर के २० नम्बर में समीचीन हेतुओं से पुष्ट कर के चार खण्ड रूप तृतीय भाग पूर्ण किया जायगा। यह चार खण्ड रूप जो तृतीय भाग वह अति सुगम रूप सर्व साधारण के विवेचन करने योग्य है।

नं०११ का विवेचन।

वादी-सूर्य उदय होकर दीखता है उधर पूर्व दिशा है पीछे पच्छिम, दाहिने दक्षिण, बायें उत्तर होते हैं। जगत भर में इस तरह दिशाओं का व्यवहार होता है।

प्रति—यह कहना ठीक नहीं है क्योंकि तुमने दक्षिणी उत्तरी पालों पर निरंतर २४ घंटे सूर्य दिखता माना है वहां उस देश वाले किधर पूर्व मान कर उत्तरी ध्रुवतारे को मानते हैं। प्रथम तो उस देश वालों को ध्रुवतारा बताना ही असंभव है क्योंकि वहां निरंतर सूर्य उदय रहने के कारण उस के प्रकाश से वह लोग ध्रुव को नहीं देख सकते जब नहीं देख सकते हैंतब उन का कहना भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असत्य है उन को तो सब ओर पूर्व ही पूर्व दीखता है ।

वादी—वहाँ आबादी न होने से दिशाओं का व्यवहार ही नहीं है ।

प्रति—दिशाओं के व्यवहार बिना किसी का कोई कार्य ज्योतिष चक्र का नहीं चल सकता इससे व्यवहार सब देशों में है । यदि नहीं है तो ध्रुव को उत्तर में कहना बाधित है । इस कारण सूर्य की ओर पूर्व मानने से दिशाओं का नियतपना नहीं बनता है ताते दिशा एक आकाशी लेन को ही मानना ठीक है ।

किंच—प्रश्न-ध्रुवतारा सर्व पृथ्वी निवासियों को उत्तर ही में क्यों दीखता है

वादी—वह बहुत दूरी पर है इस लिये उत्तर में दीखता है ।

प्रति—यदि तुम दूरी पर तिष्ठते हुये को स्थिर का कारण कहते हो तो उस की प्रदक्षिणा देते हुये सात तारे वह स्थिर क्यों नहीं दीखते वह तो प्रदक्षिणा देने में ध्रुवतारे से भी अधिक दूर संभव होते हैं ।

दूरी का हेतु देना तुम्हारा प्रलाप मात्र है क्यों कि पृथ्वी घूमती है तब ८३० लाख मील दूरी पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिष्ठता स्थिर सूर्य पूर्व से पच्छिम को नित प्रति जाता दीखता है इसी तरह ध्रुवतारा चाहे जितनी दूर क्यों न हो अवश्य किसी दूसरी दिशा को जाता दीखना चाहिये परन्तु यह एक जगह पर ही दीखता है इस से यही निरधार होता है कि पृथ्वी स्थिर है। और ध्रुवतारा भी स्थिर है इस लिये सब जगह से दीखता है यदि पृथिवी घूमती होती तो उस ध्रुवतारे की व्यवस्था सूर्य की सी दीख पड़ती।

किंच—जब सूर्य स्थिर है तब घूमती हुई पृथिवी में उस के उदय के समय पूर्व मानना असंभव है। क्योंकि ध्रुवतारा उत्तर में स्थिर माना गया है। यातै ठीक नहीं है। यदि कोई कहै वह सूर्य से बहुत दूर है इस कारण उत्तर में दीखता है इस का दोष दिखा चुके हैं।

प्रति—दूरी पर होने ही से तो शङ्का होती है कि कौनसी आकाशी लाइन पर ध्रुवतारा उत्तर की तरफ है। सूर्योदय पूर्व में माना है तब तो ध्रुव तारा सर्व दिशा में है उत्तर में कहना बाधित है।

किञ्च—सूर्य के स्थिर मानते हुए नित प्रति पूर्व में उदय पच्छिम में अस्त देखते हैं तैसे ही ध्रुवतारे को स्थिर मानते हुए उस को पूर्व में उदय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

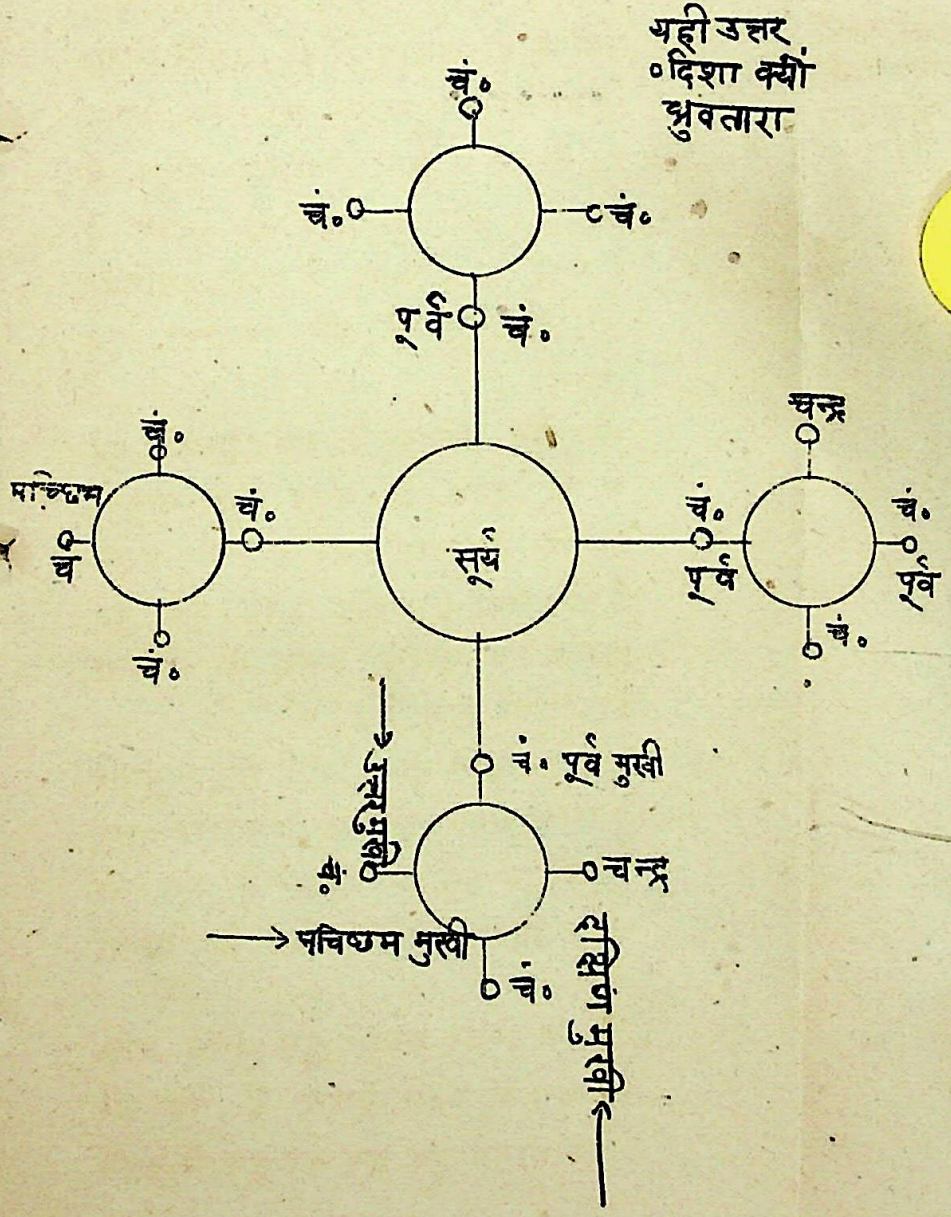

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और पच्छिम में अस्त क्यों नहीं देखते हैं जब दोनों को स्थिर माना है तो दोनों की क्रिया भी समान होनी चाहिये इस से यही निर्धारित होता है कि दोनों ही दूरी पर स्थिर ठहरे हुए नहीं हैं इन में एक को ध्रुव मानो तो एक की चर क्योंकि एक की क्रिया स्थिर है और एक की चर इस लिये दोनों को स्थिर मानना भ्राँति है देखो चित्र—सूर्य स्थिर हो ने पर घूमती पृथिवी वालों को सर्व ओर पूर्व है तब उत्तर भी सर्व ओर हुआ क्योंकि पूर्व सम्मुख वाले के बांये तरफ उत्तर होती है ।

इस कारण सूर्योदय में पूर्व मानकर ध्रुवतारे को उत्तर में स्थिर मानना महा शङ्का नहीं किन्तु असम्भव है क्योंकि पृथिवी घूमती वालों को चारों तरफ पूर्व तब उसके चारों तरफ उत्तर भी ठहरा ।

नम्बर१२ का विवेचन ।

वादी—पृथिवी के सब तरफ वायुमण्डल है वह पृथिवी के ऊपर आकाशी पदार्थों को पृथिवी के साथ घुमाता है ।

प्रति—वादी से पूछा जाता है कि जब १२ घंटे में १२५०० मील भू घूम जाती है तब आकाश में उड़ने वाले कबूतर आसमान पर १२ घंटे तक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहें वह वहाँ से १२५०० की दूरी पर उतरने चाहिये।

वादी—नहीं नहीं पृथिवी के साथ वे भी घूमते हैं।

प्रति—वह किस कारण से घूमते हैं।

वादी—पृथिवी के सर्व ओर एक वायुमंडल है उसमें कबूतर क्या जो आकाश स्थित पदार्थ है सब वही घूमते हैं इस कारण वायुमंडल ही घुमाने का कारण है इससे वायुमण्डल घुमाता है क्योंकि उस का यह स्वभाव है जिसको कह चुके हैं।

प्रति—वायुमण्डल क्या वस्तु है और किस से बना है।

वादी—इस का नाम ही सार्थिक प्रगट करता है कि एक वायु का जो मंडल (घेरा) वह वायु-मंडल है।

भावार्थ—इस पृथिवी के ऊपर एक वायु का घेरा है उसी को वायुमंडल कहते हैं।

प्रति—अपने वायुमंडल को सार्थिक वायु का बताया सो जाना-वास्तविक पृथिवी के ऊपर आकाश में वायु है वह सूक्ष्म और स्थूल रूप से दो प्रकार है तिसमें सूक्ष्म रूप होने पर भी उनमान सेउस का कार्य स्पर्शन इन्द्री से ग्रहण किया जाता है। जब किसी दिशा को दौड़ते हैं तब वह सूक्ष्म रूप एकत्र होकर सन्मुख टकराने लगती है वा दौड़ने से अधिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेग वाली गाड़ी (जो १ मिनट में १ वा २ मील चलने वाली है) पर बैठ कर चलते हैं तो वह वायु असहनीय लगती है इस कारण मोटर गाड़ी में तो सम्मुख शीशे का पाट लगा लेते हैं और रेल में सब तरफ़ तख्ते लगा कर टपदार कर लेते हैं। यदि ऐसा न किया जाय तो वायु का वेग असहनीय हो जाय।

जिस पर हम तुम स्थित हैं वह पृथिवी उसके चारों तरफ़ न कोई भीत है न कोई वायु के रोकने का और यंत्र है वह मुंडी गाड़ी के समान खुली हुई पृथ्वी पर हम को वायु का वेग कितना तीक्ष्ण असहनीय होना चाहिये क्यों कि पृथ्वी १ मिनट में ६७ मील घूमती है और १११० मील सूर्य की प्रदक्षिणा में तुम ने दौड़ती मानी है जिस के दौड़ने से उत्पन्न हुई वायु जो पहाड़ों को भी उड़ा दे सो ऐसा कार्य दीखता नहीं है इस से सूक्ष्म वायु रूप वायु का तो वायुमंडल तुम्हारे कथन से होता नहीं है तातै असत् रूप है। और स्थूल रूप वायु बहती है वह जिस दिशा को चलती है वह अपने बल प्रमाण पदार्थों को उसी दिशा में ले जाती है सो वायुमंडल स्थूल वायु रूप भी नहीं है क्यों कि वह तो एक पूर्व ही दिशा को पृथ्वी घूमती है उसी दिशा को पदार्थों को ले जाता है इस कारण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वायुमंडल स्थूल वायु रूप न होने से संकल्प क्या असत् है।

यदि वायुमंडल को वायु रूप मानने से दोष देख अपनी पक्ष दृढ़ करने को वादी यह कहे कि वायुमंडल वायु रूप नहीं किंतु पृथ्वी का एक अंग है सो भी पृथ्वी के अङ्ग अङ्गी भाव विचार किये नहीं बनता है क्यों कि घूमने वा चलने की क्रिया में सर्वत्र अङ्ग अङ्गी पना आधा राधेय संबन्ध से देखा जाता है। जैसे जो पृथिवी आधार रूप है उसी पर आधेय रूप जो पहाड़ वृक्ष अथवा वृक्ष के आधार में जो वृक्ष की पीडि पत्र फल उस के भी आधेय उस पर स्थित पक्षी सर्व ही आधाराधेय सम्बन्ध से आधार के घूमने से ही आधेय घूमते हैं तैसे ही सर्व पदार्थ आधार के घूमने के साथ घूमते हैं स्थिर रहने से स्थिर रहते हैं यह प्रत्यक्ष है जैसे मनुष्य है आधार रूप जिस का ऐसे अङ्गी के अङ्ग जो उस के सिर वा केस वा सिर पर आधेय रूप मुकुट जूं लीख आदि सर्व मनुष्य के घूमने पर ही यह उस के साथ घूमते हैं यदि बीच में आधाराधेय सम्बन्ध छूट आकाश का व्यवधान (अन्तर, हो जाय तो वह आधार के साथ आधेय नहीं घूमते हैं। वह निराधार हो कर अपनी क्रिया रूप हो जाते हैं यह निस्सन्देह प्रगट रूप वार्त्ता है। जैसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनुष्य के आधार से भिन्न भये पड़ा है आकाश बीच में व्यवधान (अन्तर) जिस के ऐसे मच्छर मक्खी आदि पदार्थ मनुष्य के घूमने के साथ नहीं घूमते हैं ऐसे ही पृथिवी के ऊपर जिन का आधारधेय सम्बन्ध है उन का घूमना पृथ्वी के साथ बनता है और जिन के बीच आकाश व्यवधान (अन्तर) पड़ा है ऐसे निराधार पदार्थ कदापि पृथ्वी के साथ नहीं घूम सकते।

ऐसे आकाश की ज्यों वायुमंडल को यदि बीच में आधार मान लिया जाय कि पृथ्वी का अंग है तो यह प्रत्यक्ष बाधित है क्यों कि वायुमंडल में ऐसा आधार होने का चिन्ह नहीं मालूम होता जो वायुमंडल को आधार भूत कर दे जैसे वृक्ष के ऊपर पत्र झुंड को वृक्ष की पौड़ि और आकाश में उड़ने वाली पतंग की डोर ऐसे आकाश के बीच वायु-मँडल का चिन्ह नहीं है जिस से आकाश के व्यव-धान से इस का चिन्ह देख इस को मान लिया जाय कि आधार रूप हो कर पृथ्वी के अंतरिक्ष पदार्थों को साथ घुमाता है इससे शङ्काका स्थान है (वायुमंडल पृथ्वी का अंग नहीं है असत रूप है) यदि वादी को पृथ्वी का अंग ही बनाना इष्ट था तो पृथ्वी के अंग तो जल अग्नि धूल, वृक्ष, पहाड़ आदि सब हैं इन को अङ्ग बनाना था उन को छोड़ के वल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वायु को संकल्प करके अङ्ग बनाना इस से यही स्पष्ट होता है कि अपनी पक्ष का साधन होय तैसा संकल्प कर लेना जिस से लोक भ्रम में पड़ कर निर्धार न कर सके इस कारण वायु मण्डल को पृथ्वी का अङ्ग संकल्प कर लिया यदि वायु मण्डल को पृथ्वी का अङ्ग बनाने में बाधा देख यह कहै कि वायु मण्डल पृथ्वी और आकाश दोनों का अङ्ग है क्योंकि दोनों रूप हैं सो बनना नहीं है। पृथ्वी और आकाश के लक्षण विरुद्ध हैं। पृथ्वी रूपी है आकाश अरूपी है और विरुद्ध धर्म वालों का एक अङ्ग होता नहीं है इस लिये दोनों का अङ्ग वायुमण्डल को मानना असंगति होने से वायु मण्डल असतरूप है यदि आकाश ही को पृथिवी का अङ्ग संकल्प किया जाय तौ सो भी नहीं बनता क्योंकि चन्द्र सूर्य तारे ग्रह आदि आकाश के रहने वाले सर्व ही अङ्ग हो जायंगे तो एक वायु मण्डल ही पृथिवी के सर्व ओर क्या घूमे सर्व सूर्यादि पृथिवी के सर्व ओर घूमने लग जांय तो वादियों का सिद्धान्त विरुद्ध हो जायगा क्योंकि पृथिवी के चारों तरफ सूर्य घूमता नहीं माना है सूर्य के चारों तरफ पृथिवी का घूमना उन के इष्ट है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसे ये वायुमण्डल सूक्ष्म वायुरूप वा स्थूल वायु रूप नहीं है वा पृथिवी का अंग नहीं है वा आकाश का अंग नहीं है वा पृथिवी आकाश दोनों का अंग नहीं है केवल वादियों ने अपनी पक्ष पृथिवी के घूमने की को संकल्प कर लिया है। वास्तव में वादी का मन गढ़न्त संकल्प से माना हुआ वायु मण्डल कोई वस्तु नहीं असत रूप है। जब वायुमण्डल पृथिवी आकाशदि का अंग नहीं ठहरा तब आकाश में तिष्ठते पदार्थ जिस से पृथिवी का कुछ सम्बन्ध नहीं ऐसे उड़ते पक्षी धनुष का बान, तोप का गोला, आक के फलूंदा आदि वस्तु वह पृथिवी के साथ न घूमेंगे क्योंकि पृथिवी से भिन्न आकाश में प्रत्यक्ष दृष्टि गोचर होते हैं और वह भी आकाश स्थित पदार्थ पृथिवी को अचला बनाने के हेतु हैं उन के न घूमने से पृथिवी का घूमना ही असम्भव होता है वादी ने पृथिवी घुमाने को एक हेतु संकल्प किया है उस का वायु मण्डल नाम रख लिया है जो पृथिवी से भिन्न आकाश के पदार्थ घुमाने के लिये उस में आये हुये दोषों की चोट बचाने के लिये असम्भव संकल्प रूप चौपय भींपड़ा बनाया है सो वह पक्ष की रक्षा न करता किन्तु सर्व ओर से पक्ष का घात कराने वाला है।

वादियों से पूंछा जाता है कि तुम ने जो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संकल्प किया वायु मण्डल वह किसी विद्वान ने पृथिवी से ४२ मील ऊंचे तक किसी ने ७५, २०० २५० मील तक ऊंचा माना है अब इस में किस का कहा सत्य माना जाय परस्पर विरोधी पना है ।

वादी—जितना २ अधिक परिश्रम और ज्ञान की विशेषता हुई उतना उतना ठीक कर के लिख दिया ।

प्रति— भला फिर तो यह आया कि पूर्वजों का ज्ञान न्यून है अब आगे को क्या सम्भावना है जो १०००, २००० मील ऊंचा कहने लगे और भी बहुत ज्ञानी होने पर १००००, २००००, १००००० मील कहने लगे अन्त में तारे नक्षत्रादि तक पहुंचा दें इस कारण ऐसे संकल्प पदार्थ पर दृढ़ विश्वास करना बुद्धिमानों का काम नहीं है वायुमण्डल का संकल्प करना महा शङ्का का स्थान है।

वादी—पूर्वज बहु ज्ञानी न सही परन्तु उन्होंने अच्छी तरह खोज लगा कर बताया है तो उस को असत्य भी नहीं कह सकते ।

प्रति—ऐसा कहने मात्र से ही सत्यता प्रतीत नहीं हो सकती जब सब ही ने अच्छी तरह समझ कर बताया है परन्तु प्रत्यक्ष एक की एक बाधा कर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहा है तब क्यों नहीं असत्य समझा जाय और असत्य किसे कहते हैं क्या ४२ मील २५० मील एक ही दूरी का नाम है जो ऐसे दूरी के भेद भी सत्य समझे जायेंगे फिर पक्ष साधने में क्या दोष आ सकता है ? कुछ नहीं । अधिक क्या लिखें विद्वान आप विवेचन कर लेंगे इससे पूर्वापर विरुद्ध वायु-मण्डल असत् रूप है ।

किञ्च—जगत में जो जो पदार्थ सूक्ष्म माने गये हैं । उनके बल की तोल अवश्य है देखो गैस के बल की तोल गैस की घड़ी से स्टीम के बल की तोल स्टीम की घड़ी से बिजली के बल की तोल बिजली की घड़ी से जानी जाती है और भी जो पदार्थ हैं वह अपने बल की तोल रखते हैं और उसी बल से अपने बल का कार्य करते हैं । तब आपने जो संकल्प किया वायु मंडल जिस में दो विकल्प हैं वह वायुमंडल बल रहित हैं वा कुछ बल धारक हैं जो बल रहित हैं तो कुछ भी बल किसी पदार्थ पर नहीं कर सकता । यदि बल शक्ति सहित है तो कहिये उसकी शक्ति कितनी है जिस में आप थोड़ा वा बहुत कहोगे वही बाधा का स्थान होगा क्योंकि उसकी शक्ति का नियतपना न हीं भ्रांति रूप है । जिसकी वार्त्ता सुनते ही बल का पार न मिले पृथिवी घूमने में एक मिनट में १७ मील और सूर्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की प्रदक्षिणा में दोड़ने में १ मिनट में १११० मील। तोप का गोला पूर्वी तेज वायुमें पश्चिम जाने को भीवायु मण्डल की शक्ति पृथिवी के साथ पूर्व को ले जाती है फिर उस के बल का कहना ही क्या विद्वानों के विचार में न आया होगा? अवश्य आया होगा कि वह वायु मण्डल अतुल महा बलवान है यदि वह तोप के गोले को और निशाने को न दौड़ावे तो वह गोला अपने निशाने को न तोड़ सके इस कारण उस को घुमाने का कारण माना जाता है इस के बल का क्या ठीक। फिर क्या वह पूर्वी हवा चलती बार तुच्छ बल का धारक जो आक का फलूंदा जिस को पच्छिम की ओर जाने में वह, वायु मण्डल पूर्व को पृथिवी के साथ चार अंगुल भी न घुमावे ऐसा बल हीन वायुमण्डल है जिस के बल का निश्चत पना नहीं इस कारण केवल पक्ष साधन करने को वायु मंडल को असत् रूप संकल्प किया है वायुमंडल विचार किये कोई बलहीन वा बल सहित पदार्थ नहीं है तातै महा शङ्का का स्थान है।

महाबल और बलहीन शक्ति का दृष्टान्त

जिस बडे भारी लोहे के खंड को चुम्बक का पहाड़ अपनी आकर्षण शक्ति से अपनी ओर खींच

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ले और सुई को न खींच सके तो यही कहा जायगा कि इस पहाड़ में चुम्बक की आकर्षण शक्ति नहीं है क्यों कि इस से सुई एक महा स्वल्प सी नहीं खिची जिस में बडे लोहे को खींचने की शक्ति है वह अल्प को क्यों नहीं खींचेगी यदि स्वल्प को नहीं खींचेगी तो उस में उस शक्ति का संकल्प करना व्यर्थ है तथा जो बलवान पुरुष खड़ा हो कर रेल को रोक दे और उस से बकरी न रुके तो असम्भव है। जो हस्ती एक १०० मन बोझ को घसीट ले जाय और उस से कोई कहै कि एक रत्ती न खींची जाय तो यह कहना बाधित है।

भावार्थ—बड़ा बलवान अल्प बल के कार्य को न कर सके तो उस के बडे बल का संकल्प दिखाना व्यर्थ है ऐसी दशा में इस वायुमंडल के बल की तोल का निर्धार नहीं हो सकता तब तक इस का सङ्कल्प करना व्यर्थ है ऐसे हेतु पक्ष के दोष दूर करने को समर्थ नहीं किंतु महा दोष के लगाने वाला है।

किंच—वादियों ने अपनी पक्ष साधने को एक प्रत्यक्ष विरुद्ध रूप हेतु वायुमंडल सङ्कल्प किया है। कैसे—जैसे जल शीत स्पर्श रूप है जिस को प्रत्यक्ष विरुद्ध रूप कहना कि जल ऊष्ण स्पर्श वान है द्रव्य रूप होने से जो द्रव्य होता है वह ऊष्ण स्पर्श वान होता है जैसे अग्नि इस प्रत्यक्ष विरुद्ध को देख कर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किसी ने पूछा जल का स्पर्श शीत स्पर्शवान क्यों है कहने लगा विरुद्ध धर्म निकट होने से क्यों कि विना विरुद्ध धर्म के निकट पदार्थ ज्ञान का होना असम्भव है ऐसा सङ्कल्प विरुद्ध साधन कर जल को ऊष्ण स्पर्शवान बताना तैसे इस भू के विरुद्ध आकाश को वायुमंडल सङ्कल्प साधन कर पृथ्वी समधरातल वाली अचला को गोल घूमती वा दौड़ती बताना असम्भव है पृथ्वी ग्रहण करने में न आवे पृथ्वी मूर्तीक आकाश अमूर्तीक पृथ्वी एक देशी आकाश सर्व व्यापी ऐसे विरुद्ध धर्म वाले जल अग्नि की ज्यों तिस आकाश में पृथ्वी के गुण सङ्कल्प कर उस का वायुमंडल नाम धर पृथ्वी को गोल घूमती के साथ घूमता बताना क्या प्रत्यक्ष विरुद्ध हेतु नहीं है ? किंतु है ही ।

प्रश्न—आकाश घूमता क्यों है कहने लगा—पृथ्वी के निकट पने ते क्यों कि विना विरुद्ध धर्म के पदार्थ का ज्ञान असम्भव है ऐसा विरुद्ध सङ्कल्प साधन कर आकाश को घूमता बताना हेतु असम्भव है । यदि यहां अपनी पक्ष साधन को कहै कि भू के आकाश को तो घूमता नहीं बताया है वायुमंडल को बताया है सो ये कहना विचार करने में है चतुर बुद्धि जिन को तिन को असहनीय है क्यों कि वायुमंडल वायु के गुण स्वभाव रूप तो बने नहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकाश वा पृथ्वी का अंग मानना भी शङ्का का स्थान है इस को पहले दिखा चुके हैं और कोई नियत लक्षण इस का किया नहीं जिस से इस की सम्भावना की जाय इस से प्रगट वादी क्यों न कहै कि आकाश ही वायुमंडल है यदि आकाश वायुमंडल नहीं है भिन्न है तो वायुमंडल के घूमने से आकाश न घूमेगा तब उस में आकाशी जहाज़ अपनी पड़ाव (स्टेशन) बना कर पृथ्वी के गिर्द घूमेगा तो पृथ्वी के घूमने का पक्ष टूट जायगा जिस को दिखा चुके हैं तब प्रत्यक्ष विरुद्ध आकाश में वायुमंडल का सङ्कल्प क्यों नहीं है ? है ही । इन युक्तियों से जब वायुमंडल का होना असम्भव है तब पृथ्वी का घूमना तथा दौड़ना असम्भव क्यों नहीं है इस लिये निर्धारित हुआ कि वादियों ने अपनी पक्ष साधने को एक वायुमंडल परोक्ष सङ्कल्प कर लिया है । वास्तव में यह कोई चीज़ नहीं है । वादियों से पूछा जाता है । कि अपनी पक्ष साधने को यह जो वायुमंडल परोक्ष आपने सङ्कल्प किया है यह पृथ्वी से भिन्न है वा अभिन्न ?

१—यदि भिन्न है तो इस का लक्षण भी भिन्न कहो ।

२—और अभिन्न है तो पृथ्वी के लक्षण से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकता करो और यह आकाश से भिन्न है या अभिन्न ।

३—यदि भिन्न है तो आकाश से भिन्न लक्षन करो ।

४—यदि अभिन्न है तो आकाश के लक्षण से एकता करो । इस के कार्य देखने से यह न पृथ्वी ही है न आकाश, अब दोनों नहीं तब किसी प्रकार सिद्ध नहीं हो सकता ।

१—यदि पृथिवी से भिन्न है तो पृथिवी के साथ घूमता न बनेगा ।

२—यदि अभिन्न है तो पृथिवी के से कार्य उस में होने चाहिये, सो हैं नहीं, पृथिवी आकाश के पदार्थों को साथ नहीं लेती यह साथ लेता है इस कारण अभिन्न नहीं है ।

३—यदि आकाश से भिन्न है तो आकाश ही इस का निवास एक क्षेत्र में है भिन्न कैसे कहते हो ।

४—अभिन्न है तो आकाश किसी को साथ नहीं लेता तुम ने माना है यह पदार्थों को साथ लेता है इस का केवल यही कार्य है कि आकाश तिष्ठते पदार्थों को चलावे ऐसे अनेक दोषों कर दूषित यह वायु मण्डल कोई पदार्थ नहीं है ।

किञ्च—वायु मण्डल पृथिवी पर आकाशी पदार्थों को पृथिवी के साथ पूर्व ही को घुमाता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है यह कहना बाधित है यदि ऐसा होता तो पृथिवी की घूम १ मिनट में १११० मील फिर उस के वेग से वायु के टकराने से दोनों रेलों का धुआँ पश्चिम को ही जाता क्योंकि पश्चिम गामिनी रेल की रफ़्तार १ मिनट में २ मील जिस का वेग थोड़ा। इस कारण पश्चिम जाने वाली रेल का धुआं पश्चिम ही को जाता अब इस पूर्व गामिनी का धुआँ पश्चिम को और पश्चिम गामिनी रेल का धुआँ पूर्व को जाता देखते हैं इस कारण वायु मण्डल को पृथिवी के ऊपर आकाश स्थित पदार्थों को पूर्व की ओर घुमाना बालकों का ख्याल है।

देखो चित्र रेल का

इस पर भी अजीब आश्चर्यकारी यह वार्ता है कि अल्प शक्ति वाला धुआं तो वायुमण्डल की महा शक्ति से पूर्व को न जाय और तोप का गोला महाशक्ति वाला जिस को वायुमण्डल पूर्व को ले ही जाय यदि गोले को साथ न ले जाय तो गोला निशाने को नहीं तोड़ सकता क्योंकि तोप के मुख से निकला हुआ गोला जो १ मिनट में १५ मील जाने की शक्ति रखता है वह १५ मील से अधिक नहीं जा सकता और निशाना पृथिवी के साथ १ मिनट में १७ मील घूम गया या सूर्य की प्रदक्षिणा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu-Trust/eGangotri

में १११० मील दौड़ गया तब वह गोला अपने निशाने को कैसे तोड़ सकता है इस कारण वायुमण्डल की कल्पना केवल भ्रांति ही है। सत्य स्वरूप नहीं है।

देखो चित्र तोप के गोले का

वायुमण्डल मानने वाले से यह पूछा जाता है कि वायुमण्डल में पश्चिम को बड़े वेग से चलनेवाले पदार्थों को वह पूर्व की ओर ले जाता है तब रुई के पुंज वा आक के फफूंदे पश्चिम को हीन वायु के योग से हीन शक्ति वाले क्यों पश्चिम को जाते दीखते हैं वहाँ वायुमंडल का बल कहाँ चला गया यह प्रत्यक्ष बाधित है जो बलवान तोप के गोले को तो अपने बल से रोक कर पृथ्वी के साथ पूर्व को ले जाय और आक के फफूंदों पर अपना बल कुछ न चलावे यह महा असम्भव है कैसे शङ्का का स्थान नहीं है।

प्यारे वादियो! पृथ्वी स्थिर को घुमाने के लिये उस अनियत बल वाले वायुमंडल को क्यों व्यर्थ हेतु बनाया इस से यह वार्ता सिद्ध हुई। या तो पृथिवी १ मिनट में १७ मील घूमती वा १११० मील दौड़ती नहीं है या यों कहो कि वायुमंडल में पृथिवी पर आकाश में तिष्ठते हुये पदार्थों के घुमाने का बल नहीं है दोनों साध्य साधन में एक असत्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

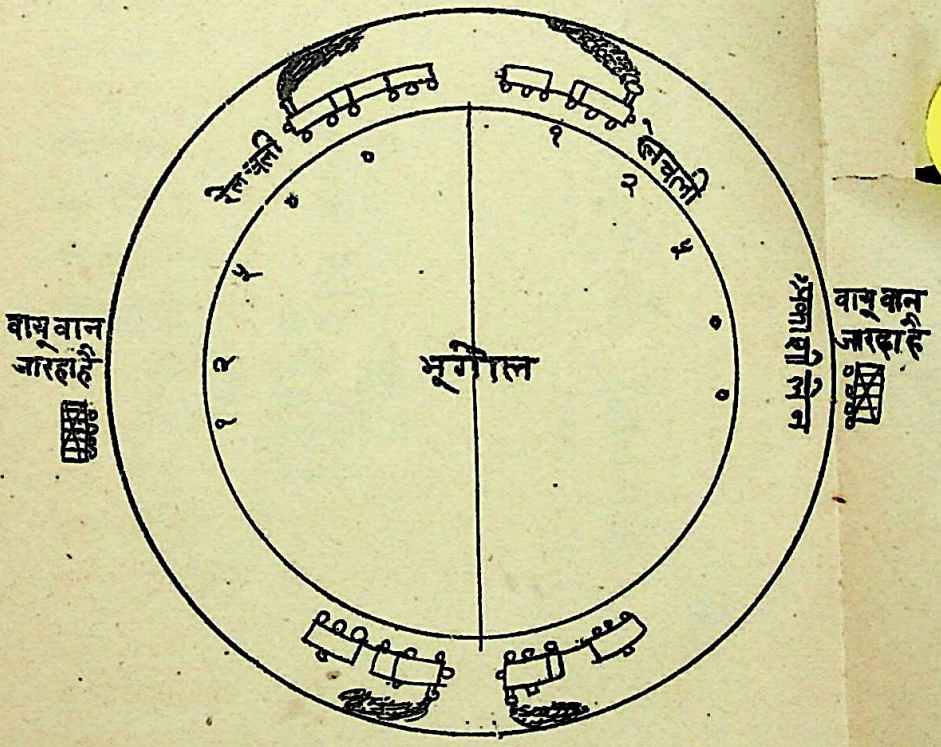

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ पृथ्वी घूमने पर विवेचन करना

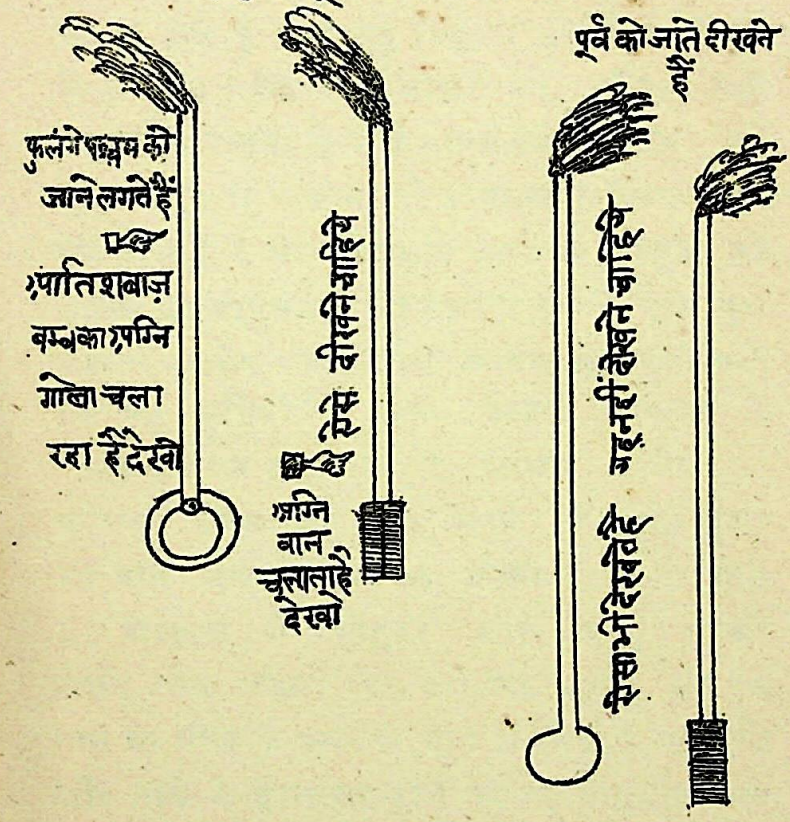

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहना पड़ेगा और एक के असत्य होने से दोनों ही असत्य होते हैं ऐसा हेतु विद्वानों से कैसे स्वीकृत किया जाय ! केवल पक्ष साधने को, क्रीड़ा करने का स्थान बनाया है कोई वायुमंडल सत्यरूप नहीं है। यदि ऐसा न होना ही होना मान लिया जाय कि पृथिवी के साथ आकाश तिष्टती वस्तुओं को घुमाने का वायुमंडल का स्वभाव ही है उसे कुछ आधार आधेय सम्बन्ध की आवश्यकता नहीं क्यों कि वह पृथिवी के ऊपर सम्पूर्ण आकाश में व्याप्त है। तब तो, नहीं है आधार आधेय का सम्बन्ध जिस का ऐसा धनुष से छूटा हुआ जो बान अथवा तोप का गोला उस से भिन्न है आकाश में तिष्टती कोई वस्तु मक्खी आदि जीव उड़ता हुआ वा जड़ त्रसुरेणु जो कि बान वा गोले के ऊपर के भाग में भिन्न है वह बान और गोले के देशान्तर होने पर वह वायुमंडल उन को बान के वा गोले के साथ क्यों नहीं चलावे वा घुमावे क्योंकि वह आकाश में व्याप्त है और जैसे पृथ्वी के बान वा गोला सर्व ओर है तैसे ही वह बान वा गोले के भी सर्व ओर है तब समान पदार्थों की व्यवस्था में जिसकी एक में क्रिया देखी जाय और दूसरे में न देखी जाय तब यही निर्धार होता है कि यह इस की क्रिया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं है वा स्वाभाव नहीं है दूसरा कारण है इस कारण वायुमंडल का स्वभाव कहना कि पृथ्वी के ऊपर आकाश में तिष्ठते पदार्थों को घुमाता है यह बाधित है। कोई भी पदार्थ जिस में चलाने की शक्ति होगी वह अपनी शक्ति को नहीं छोड़ सकता यह प्रत्यक्ष है। देखो तोप के अन्तरङ्ग गन्धक बारू आदि की शक्ति ऐसी प्रगट हुई कि १० सेर के गोले को १ मिनट में १५ मील चला देती है वह शक्ति यदि पांच सेर का गोला तोप में डाला जाय तो अधिक चला देगी क्योंकि जिस की शक्ति अधिक है वह बड़े भारी को जब १५ मील चलाती है तब हलके को अधिक क्यों न चलावे इसी रीति से जब वायुमंडल में इतनी शक्ति है कि १ मिनट में १५ मील के चलने वाले तोप के बड़े भारी गोले को ११२५ मील पूर्व में चला देती है क्योंकि १ मिनट में १५ मील तोप का गोला चला और १११० मील पृथ्वी चली सर्व १२२५ मील के चलाने की शक्ति वायुमंडल में है तब हलके मक्खी कबूतर आदि पक्षिओं को वा आक की रुई के फफूंदों को न मालूम कितना चला देगी? सो दीखे नहीं। तब वायुमंडल कैसे प्रमाण भूत माना जाय कि पृथ्वी के ऊपर आकाश स्थित पदार्थों को पृथ्वी के साथ पूर्व की ओर १ मिनट में १७ मील घुमाता है और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

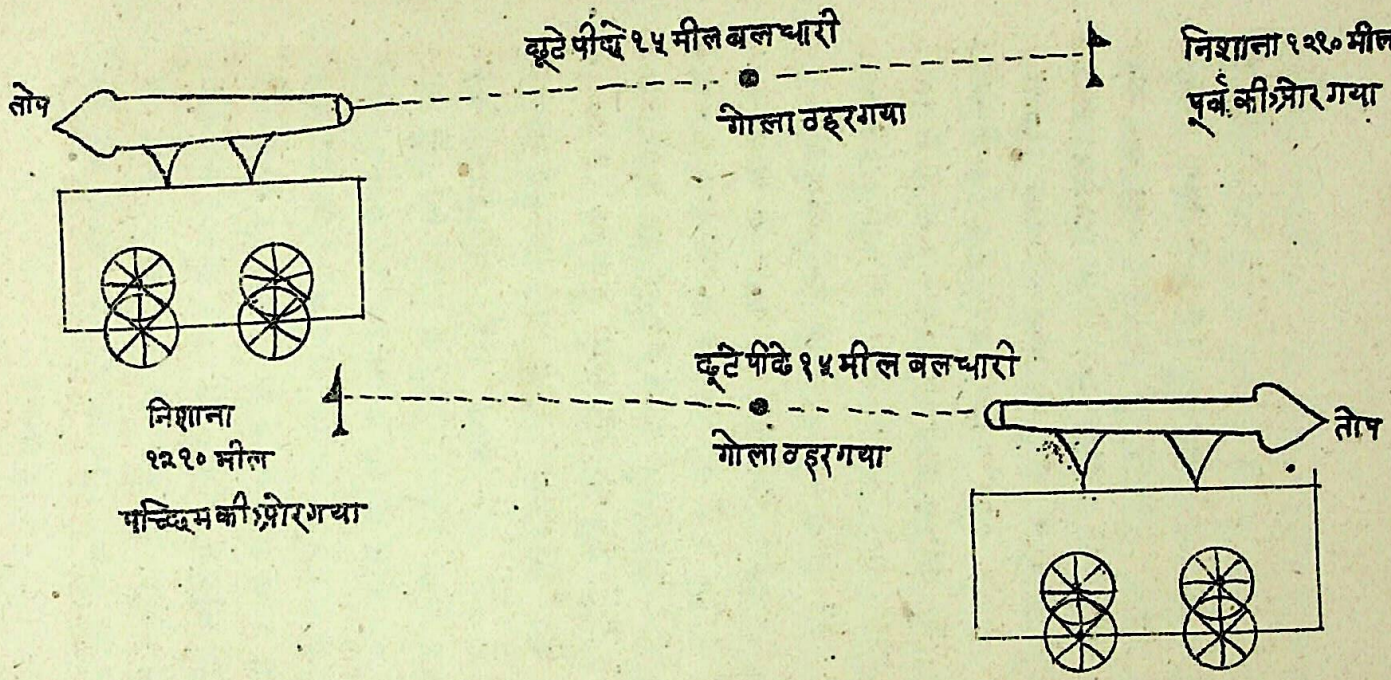

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१११० मील साथ दौड़ता है उन पदार्थों को जो तोप के गोले पश्चिम को १५ मील १ मिनट जा रहे हैं ऐसे बलिष्ठ पदार्थों को जिस के बल का क्या पार तथा आक के फूंदा हीन बलधारी हीन वायु से पश्चिम को जाने वाला जिस पर जिस का बल न चले ऐसा हीन शक्ति वाला। बाहरे वायुमंडल! तेरी अकथनीय महिमा ऐसी न होती तो कैसे यह पृथ्वी अचला को चला वादी बनाते इस को विचार कर मध्यस्थ विद्वानों को यह हेतु (वायु-मंडल) असत् रूप क्यों नहीं है, है ही।

किंच—जब पृथ्वी को पूर्व की ओर घूमती वा चलती बताते हो तो अग्नि का बम्ब गोला वा बान आतिशबाज़ छुटाता है तब वह ऊंचे को सीधा क्यों जाता है क्यों कि पृथ्वी १ मिनट में १११० मील बडे वेग से पूर्व को जा रही है तब बंब का गोला वा अग्नि बान पश्चिम की ओर झुकता जाना चाहिये और उस में से निकले हुये फुलिंगे ऊपर पश्चिम को सर्व जाने चाहिये सो बान पश्चिम को झुकता दिखाई देता, है न बम्ब का गोला, न उस के ऊपर आकाश में फुलिंगे ही पश्चिम को जाते हैं यदि इस से यह कहैं कि वायुमंडल पृथ्वी का अङ्ग है इस से उस के बल से टेढे नहीं दिखाई देते हैं सीधे रहते हैं और ऊपर के फुलिंगे जिधर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वायु का वेग होता है उधर चले जाते हैं।

यहां कहना बडे हास्य का ठिकाना है कि वायुमण्डल महा बलवान बम्ब के अग्नि गोले वा बान को तो टेढ़ा नहीं होने देता पृथ्वी के साथ ही रखता है और ऊपर जा कर उस में से निकले हुये फुलिंगों पर उस का बल नहीं चलता है वह अल्प वायु से चाहे जिधर को चले जांय— वाह रे वायु मण्डल तेरे विराट चरित्रों को तेरी ही शरण ले कर वादी, निश्चला है— नाम जिस का ऐसी पृथ्वी को चला बनाते हैं। यदि ऐसा ही न होने को होना मान लिया जाय तो पृथ्वी के ऊपर जहां वायुमण्डल नहीं माना है वहां के तारे जो टूटते दृष्टि पड़ते हैं वह सब पश्चिम मुखी दीखने चाहिये क्योंकि पृथ्वी पूर्व को चल रही है वा घूम रही है फिर वह उल्कापात जिन को लोग तारे कहते हैं सब दिशाओं में क्यों दृष्टि गोचर होते हैं।

वादी—तुम ने कहा कि आकाश का पड़ा है व्यवधान जिस में ऐसे पदार्थों को वायुमण्डल नहीं घुमा सकता सो वह कहना सत्यार्थ नहीं हैं। आकाश स्थित पदार्थों में आकाश के व्यवधान पड़ने से पदार्थ के चलने वा घूमने में कोई बोधा नहीं आती देखो टपदार रेल गाड़ी में जब हम देखते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं तब वहां की मक्खी वा छोटे उड़ने वाले जानवर गाड़ी के साथ चले जाते हैं; घूमते हैं जहां से चले वहां नहीं रह जाते हैं इस कारण आकाश का व्यवधान घूमने वा चलने में बाधक नहीं है यह कहना बिना विचारे पृथ्वी की सदृश रेल का उदाहरण विषम है क्योंकि पृथिवी तो मुंडा गाड़ी की ज्यों है तब मुंडा गाडी उदाहरण में कहनी थी इस कारण ये उदाहरण विषम है। पृथिवी की ज्यों मुण्डा गाड़ी में कोई मक्खी वा उड़ने वाला आकाश नामी जीव साथ नहीं घूम सकता है यह प्रत्यक्ष है। टपदार गाड़ी में स्थूल वायु का संचार न होने से मक्खी आदि उड़ने वाले जानवर उस पर बैठे चले जाते हैं और वह वहां उड़ते हुये अपने बल से उस में उडते रहते हैं कभी बलहीन होते हैं तो टपके किसी ओर टक्कर भी मारने लगते हैं कभी गिर भी पड़ते हैं ऐसे सर्व ओर से खुली हुई बिना छत या टप की मुंडा गाड़ी के समान जो पृथिवी है उस का उदाहरण टपदार रेल गाड़ी से देना यह केवल अपनी पक्ष सिद्ध करने के लिये विषम उदाहण दिया है बिना टप की पृथिवी में बिना टप की रेल का उदाहरण दिया जाता तो पक्ष में दोष न दिखाई देता सो उदाहरण तुमने दिया नहीं तब तुम्हारे विषम उदाहरण से पक्ष

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में शंका दूर नहीं होती किन्तु अधिक होती है। इस प्रकार संकल्प रूप किया आकाश के पुष्प समान असत्य रूप जो वायु मण्डल वह विद्वानों के ग्रहण करने के योग नहीं हैं अब अधिक न लिख कर कहते हैं कि जब वायुमण्डल हेतु अवस्तु दिखा चुके हैं तब पृथिवी को गोलाकार भ्रमण करती सिद्ध करना असम्भव है।

किञ्च—पृथ्वी स्थिर है और वायुमंडल संकल्प रूप असत् है जिसको दिखा चुके हैं। तिस पर भी किसी पक्षधारी को संतोष न होय और पूर्व चिरन्तन अभ्यास से यह कहै कि पृथ्वी के सर्व ओर वायुमंडल अवश्य है। ऐसे पक्षधारी को अधिक कहना व्यर्थ है केवल उसके चिरन्तनाभ्यास पर संतोष करना पड़ता है उस बाल अवस्था के चिरंतन अभ्यास की दशा को दिखाते हैं।

किसी बालक को रोता देख कर उसकी माता कहने लगी कि चुपका हो जाओ नहीं तो "हौवा" आ जायगा बालक माता को हितैषी जानता था इस कारण उसको प्रतीत हुई कि कोई "हौवा" आजायगा जो मुझे दुखकारी है। इस बात के भय से वह रोने से बन्द हो गया और उसके हृदय में यह बात समा गई कि "हौवा" कोई भयकारी पदार्थ है। जब कोई बालक अनुचित कार्य करता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थी माता उसको "हौवा" कह कर डरा देती थी अतः उस बालक के अंतरङ्ग ऐसा "हौवा" घुसा कि जिससे वह बीमार हो गया और हर समय "हौवा" "हौवा" "हौवा" पुकारता था। उसको सब घर वालों ने और माता ने भी "हौवा" से बीमार हुआ जान कर समझाया कि प्यारे लड़के ! "हौवा" कोई वस्तु नहीं है परन्तु उसके हृदय में बहुत काल के चिरंतन अभ्यास से 'हौवा' समा गया था उसका निकलना कठिन हो गया। जब तक उस बीमार के हृदय में यह निश्चय न होय कि "हौवा" कोई पदार्थ नहीं है केवल मेरी माता ने मुझे संकल्प कर भय दिला दिया था तब तक उस की बीमारी का जाना कठिन है। तैसे ही पृथ्वी का घूमना और उसका हेतु वायुमंडल आकर्षण आदि हौवा रूप हृदय से न निकल जाय तब तक निशङ्क होना कठिन है। इसके निशङ्क होने में पक्षपात को छोड़ मध्यस्थ होकर विवेचन करना ही बुद्धिमानों का कार्य है।

वादी—यह कहना सत्य है परन्तु जब तक हमारे कहे हेतु में ठीक बाधा न आवेगी तबतक यह कहना प्रलाप मात्र है तुम्हारे ही पक्ष का घातक है।

प्रति—यह कहना सत्य है सुनिये जिस वायुमण्डल के बल से तुम पृथिवी को आकाश वर्त्ती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पदार्थों को घूमते बता रहे हो वह कुछ पदार्थ नहीं है जिसकी व्यवस्था तुमको दिखा ही चुके हैं। यदि वायुमंडल न होने पर भी तुम्हारे हठ से वा 'दुर्जन संतोष न्याय' से मान भी लिया जाय तो भी तुम्हारा सिद्धान्त उलट पलट हुआ जाता है।

वादी—कहिये कैसे।

प्रति—आकाशी जहाज़ जो कि १ घंटे में १२० मील चलने की शक्ति रखता है वह तुमने मानी जो २५००० मील की परिधि वाली पृथिवी, उसकी प्रदक्षिणा कै घंटे में दे सकता है।

वादी—साधिक २०८ घंटे में।

प्रति—वह गणित से ठीक है वा इसमें कुछ शंका है।

वादी—इसमें क्या शङ्का है। आकाशी जहाज एक घंटे में १२० मील प्रत्यक्ष चलता है और पृथिवी की परिधि २५००० मील विद्वानों ने बडे खोज से ठीक की है तब गणित से साधिक २०८ घंटे में प्रदक्षिणा दे ही आवेगी यह हमारे निश्शङ्क है।

प्रति—यह निश्शङ्क है तो तुम्हारे सिद्धान्तों में लिखा है कि सूर्य की प्रदक्षिणा साधिक ३६५ दिनमें पृथ्वी देती है जब वह १ मिनट में १११० मील पूर्व को सुर्य की ओर दौड़ती भी है और घूमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भी है। आकाशी जहाज़ को वायुमंडल में १ मिनट में दो मील चलने की शक्ति है उस को चलाने वाला चला रहा है तब वह चलाने वाला वायुमंडल के साथ चला बताओ वायुमंडल जो पृथ्वी के साथ सूर्य की प्रदक्षिणा में दौड़ा कि पृथ्वी के घूमने के साथ चला ? और वायुमंडल पृथ्वी के साथ है वह दौड़ती हुई पृथ्वी के साथ १ मिनट में १११० मील दौड़ा तब वायुमंडल में स्थित आकाशी जहाज़ के चलाने वाला क्या करे और वायुयान (आकाशी जहाज़) में वायुमंडल के साथ १ मिनट में १११० मील जाने की शक्ति नहीं, वह साथ कैसे जाय ? यदि यहाँ वादी ऐसा सङ्कल्प करे कि जहाज़ को वायुमंडल अपने साथ ले जायगा। ऐसा असम्भव यदि मान भी लिया जाय तो आकाशी जहाज़ साधिक २०८ घन्टे में पृथिवी की प्रदक्षिणा को जो तुमने निश्शङ्क निर्धार किया था कर आवेगा सो कैसे करेगा ? यह तो दोष पृथिवी के साथ पूर्व की तरफ वायुमान की शङ्का स्वरूप है। यदि वायुयान पश्चिम की तरफ जाय तो महा शङ्का का स्थान क्या असम्भव ही दीख पड़ता है। फिर आप जिस वायुमण्डल को हेतु बना कर अपना पक्ष दृढ़ करते थे उस की क्या दशा होगी ? प्यारे भाई जो कुछ कहते हो वह विचार कर भी कहते हो या मन में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आया सो कह दिया यदि पृथिवी स्थिर मानी जाय तब ही तुम्हारा कहना सार्थक होता है कि साधिक २०८ घन्टे में आकाशी जहाज़ के चलने वाला प्रदक्षिणा करा लावेगा और आकाशी जहाज़ का चलना और उस का बल प्रत्यक्ष है इस को कोई वादी प्रति वादी असत्य कह नहीं सकता इस कारण निश्चय हुआ कि पृथिवी के सर्व ओर न वायुमण्डल है और न वह सूर्य की प्रदक्षिणा में १ मिनट में १११० मील दौड़ती है, न घूमती है यह सब तुमने पृथिवी अचला को घूमती बनाने को और जो सूर्य प्रत्यक्ष चलता दीख रहा है उस के स्थिर बताने के लिये मन गढ़न्त सङ्कल्प कर लिये हैं पृथिवी के प्रदक्षिणा में दौड़ती हुई बताना असत्य है।

वादी—क्या यह सब असत्यार्थ है जो विद्वानों ने बड़ी खोज कर बड़ी २ किताबें लिखी हैं।

प्रति—बड़ी किताबों के लिखने में क्या हानि ? जब दूसरा तो कोई रोकता नहीं और लिखने में बड़ा यश, मान, और धन की प्राप्ति। तब कैसे बड़ी किताबें न लिखी जाँय।

किंच—पृथिवी की परिधि २५००० मील उन-मान है यदि वायुयान जो १ मिनटमें २ मील की चाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का है उस में सवार हो कर मनुष्य पृथिवी के चारों ओर घूमे तो कितना समय लगेगा ?

वादी—साधिक ८ दिन रात्रि के उनमान।

प्रतिवादी—जब पृथ्वी की परिधि २५००० मील है तो यह उत्तर असम्भव है क्योंकि पृथिवी के ऊपर आकाश में चलता हुआ वायुमान जब पृथिवी सूर्य की प्रदक्षिणा में १ मिनट में १११० मील आगे को बढ़ी तब उस (पृथिवी) के ऊपर के भाग को न छोड़ सूर्य की प्रदक्षिणा में गया तब कैसे अपने स्थान पर घूम कर साधिक ८- दिन रात्रि में आ सकता है। यदि कहा कि पृथिवी के साथ ही घूमता रहता है यह प्रत्यक्ष बाधित है सदैव पृथिवी के ऊपर भाग में साथ ही रहता है। भला ऐसा हो सकता है जो पृथिवी सूर्य की प्रदक्षिणा में दौड़ती हुई के ऊपर भाग को छोड़ वायुमण्डल में घूमने चला जाय यह वायुयान की भ्रम रूप वार्ता है। यही ज्ञात होता है कि पृथिवी न सूर्य की प्रदक्षिणा देती है न घूमती है केवल पक्ष साधन को मन माना संकल्प बनाया है।

वादी—तुम समझे नहीं पृथिवी घूमती भी है दौड़ती भीहै जैसे लट्टू और उस के साथ जो रंग लगा हुआ है वह भी उस के साथ घूमता है। इसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकार पृथिवी के साथ वायुमण्डल घूमता है इसी कारण घूमती हुई पृथिवी का प्रदक्षिणा देना असत्य नहीं है। जब पृथिवी घूमती है तब उस के साथ वायुमण्डल में रहने वाला वायुमान भी घूम कर साधिक ८ दिन रात्रि में उस की प्रदक्षिणा कर लेता है। यह कहना बिना विचारे है। यह कहना तब बने जब पृथिवी एक स्थान पर घूमती रहे तभी तो वायुयान वायुमण्डल के साथ घूम कर उस के (पृथिवी के) चारों तरफ साधिक ८ दिन रात्रि में घूम कर अपने स्थान पर आजा-यगा। परन्तु पृथिवी पर जो लट्टु पर के रंग के समान वायुमण्डल है वह तो जब लट्टु पृथिवी १ मिनट में १११० मील आगे को गया उस के साथ उस का रंग (वायुमण्डल) या रंग में जो पदार्थ ठहरे थे सब उस के साथ ही गये तब उस पृथिवी की परिधि जिस के गिर्द वायुयान घूमता है २५००० मील न रही दौड़ने के साथ दौड़ने की परिधि मिलाने से करोडों मील की परिधि हो गई तब वायुयान साधिक ८ दिन रात्रि तथा २०४ घंटे में पृथिवी के चारों ओर घूम कर अपने स्थान पर कैसे आ सकता है। यह तो केवल बाजीगर के तमाशे के समान भ्रम उपजाय के अपनी पक्ष का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधन करता है विचार करने से पृथिवी का घूमना वा दौडना असम्भव है।

किञ्च—पृथिवी पूर्व को घूमती है और वायु मण्डल पृथिवी की तथा आकाश की वस्तुओं को पूर्व को घुमाता है यह कहना असत्य है। क्योंकि मध्य भूगोल से दो रेलगाडी एक पूर्व को दूसरी पश्चिम को १ मिनट में १७ मील करीब की चाल से अर्द्ध भूगोल (१२५००) मील में जा पहुंची और दोनों ने पृथिवी की परिधि २५००० मील की पार कर ली इसी तरह दो वायुयान भी जा मिले, तब कहिये वायुमण्डल ने क्या किया ? कुछ नहीं। यदि कहो कि वायुमण्डल ने ही तो पृथिवी के साथ वायुयान तथा और पदार्थों को घुमाया तो १२ घंटे में दोनों जहाज़ कैसे मिल गये। यह प्रत्यक्ष दृष्टि गोचर है याते ये वायुमंडल वादियों ने व्यर्थ संकल्प किया है। देखो दोनों वायुयान वा रेल ११ घंटे में पृथिवी के अर्द्ध भाग पर मिल गये हैं।

जब रेल और वायुयान (हवाई जहाज़) १२ घन्टे में पूर्व पश्चिम के रास्ते एक स्थान पर पहुंच गये तो पृथ्वी का घूमना न रहा—यदि कोई कहै कि पथ्वी घूमती के ऊपर होती रेल मिली है जैसे पृथ्वी घूमी तैसे ही रेल उस के ऊपर ही घूमी उसमें क्या हानि आई ? ऐसे कहने वाले से कहा जाता है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कि पृथ्वी घूमने में हानि न आई तो उस के स्थिर पने में ही क्या हानि हुई ? क्यों कि जो वायुयान पृथ्वी से एक स्थान पर आकर मिल गये भिन्न थे वह इन में तो पृथ्वी का आधार आधेय सम्बन्ध भी नहीं है इस से पृथ्वी के साथ आकाशी पदार्थों को घूमना वायुमण्डल से कहना असत्य है।

किंच—तुमने जो वायुमण्डल की चाल और पृथ्वी की चाल पर दोष दिखा कर वायुमंडल को कलपना रूप बताया सो वायुमंडल कलपना रूप नहीं है सत्य रूप है। वायुमंडल के साथ जो पदार्थ घूमते हैं वह उस की शक्ति से घूमते हैं और पृथ्वी के साथ स्वयं अपने बल से चलते हैं। दोनों अपने २ बल से चलते घूमते हैं जैसे नदी का जल अपने बल से बहता है और उस में के जीव जल के साथ दौड़ते हुये भी अपने बल से चाहे जिधर गमन कर सक्ते हैं अथवा दौड़ते हुये मनुष्य के शरीर पर चिउंटी उस के साथ भी दौड़ती है और अपने बल से चाहे जिधर रंग सकती है इस से पूर्वोक्त कहा दोष नहीं आया।

मति—यह कहना बिना विचारे है क्यों कि नदी के जल और जीवों में आधार आधेय सम्बंध है तैसे ही मनुष्य के शरीर में वा चिउंटी में आधार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आधेय सम्बन्ध है इस कारण दोनों अपनी २ चाल से चल सकते हैं परन्तु जहां आधार आधेय संबंध नहीं है ऐसे नदी के जल वा मनुष्य के शरीर के वाह्य बिना सम्बन्ध वाले पक्षी आदि जल के साथ नहीं चल सकते किन्तु अपनी २ अलग २ चाल से चल सकते हैं।

इस कारण यही निर्धारित हुआ कि जल वा मनुष्य के शरीर से पड़ा है व्यवधान जिस में, ऐसे जल वा मनुष्य के शरीर से भिन्न पक्षी पृथ्वी के दौड़ने के साथ नहीं दौड़ सकते किन्तु अपनी चाल से चल सकते हैं इस कारण पृथ्वी के ऊपर आकाश के व्यवधान में जिस का सम्बन्ध नहीं है ऐसा वायुमंडल भी पृथ्वी के सर्व ओर मानना सङ्कल्प रूप असत् है इसी कारण पूर्वाचार्यों ने पृथ्वी घूमने पर आशङ्का की है।

(बराहमिहिर० प० सि० अ० १३श्लोक ६.७)

"भ्रान्ति भ्रम स्थितेव क्षितिरित्य परे वदंतिनोडुगणः
यद्यं वंश्ये नाद्या नखात्पुनः स्वनिलयमुपेयुः ॥६॥
अन्यच्च भवेद्भूमेरहा भ्रमरहंसा ध्वजादीनाम् ।
नित्यं पश्चोत्प्रेरणमयाल्य गास्यात्कथं भ्रमन्ति ॥७॥

इत्यादि लेख से भ्रान्ति होती है कि पृथ्वी गोल घूमती नहीं है स्थिर है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नम्बर१३ का विवेचन।

पृथ्वी सूर्य की प्रदक्षिणा में एक सैकिंड में १८॥ मील दौड़ती है।

शङ्का—यह कहना बाधित है। यदि पृथ्वी दौड़ती होती तो धनुष से निकला हुआ बाण(तीर) जो एक सैकिंड में २ मील के निशाने को भेदता है कैसे भेद सकता? क्योंकि उसका निशाना तथा धनुषधारी मनुष्य पृथ्वी के साथ १८॥ मील पूर्व को चला गया और धनुष से निकला हुआ बान दो मील की ताकत वाला २ मील चल कर ही गिर गया अब यदि निशाना नहीं भिदा तो पृथिवी का दौड़ना संभव है और भिद गया तो दौड़ना असम्भव है। इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य डेला से १ फर्लाङ्ग के निशाने को तोड़े तो नहीं तोड़ सक्ता है यही हालत बन्दूक की गोली तथा तोप के गोले की है अधिक दौड़ती में कोई भी निशाने को नहीं तोड़ सकता है।

वादी—कहै कि तुम्हारी समझ में नहीं आया पृथ्वी के सर्व पदार्थों को वायुमंडल तथा आकर्षण शक्ति उसके साथ ही रखते हैं इस लिये वायुमंडल बान, डेला, गोली, गोला को भी साथ रखता है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस कारण निशाना तोड़ने में कोई बाधा नहीं आई।

प्रति—बस अब मालूम हो गया कि वायुमंडल शक्ति में इतना बल है कि बड़े वेग से चलते हुये बान, गोली, डेला तथा तोप के गोलों को भी पश्चिम से पूर्व को ले जाता है परन्तु किञ्चित हवा से उड़ने वाले आक के फफूंदे वा रुई के पुंज वा उड़ते कबूतर इन को पृथ्वी के साथ पूर्व को ले जाने में असमर्थ है। यह वही कहावत है कि मेरा पुत्र सिंह को तो पकड़ सक्ता है परन्तु लोमड़ी को नहीं पकड़ सक्ता।

वाह रे वायुमंडल! जिसकी भ्रांति नं० १२ के विवेचन में दिखा चुके हैं जो वादियों ने उस की शरण लेकर इस अचला पृथिवी को चला कर दिया और इस आकर्षण शक्ति जिसकी भ्रांति नं० २२ के विवेचन में दिखायेंगे, यदि वादी ये दो परोक्ष मन गढ़न्त हेतु संकलप न करते तो अचला पृथिवी को दौड़ता घूमता कौन कह सक्ता था?

इस हेतु से पाठकों को यह निश्चय हो गया होगा कि पृथिवी न घूमती है न दौड़ती है किन्तु सत्यार्थ अचला स्थिरा निश्चला इसके नाम सार्थक हैं।

किञ्च—जिस पृथिवी पर हम स्थित हैं उस पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रत्यक्ष देखते हैं कि पृथिवी के ऊपर आकाश में वायु सूक्ष्म रूप बहती है वह दौडने से वा मोटर रेल गाडी में जो एक मिनट में २,३ मील दौडती है, बैठ कर चलने से सम्मुख टकराती हुई असुहावनी लगती है जिस से बचने के लिये मोटर में शीशे का कपाट और रेल में टप बना लेते हैं (यह वार्ता नं० १२ में दिखा भी चुके हैं) जब दो तीन मील के चलने वाली रेल आदि से जो हवा असुहावनी मालूम होती है तो १ मिनट में १११० मील चलने वाली पृथिवी पर हम चलें तो इस वेग से चलने में जो बडे वेगसे पहाडों को भी चलायमान करने वाली हवा चलेगी वह कैसे सहन करी जायगी ? इस पर भी हम नित प्रति के महावरे से सहना मान लें परन्तु जड़ पदार्थ रुई के पुंज और आक के फफूंदे हलके होने के कारण पश्चिम को हज़ारों मील उड़ जाँयगे उन में तो सहन शीलता नहीं है। यह वार्त्ता सब के प्रत्यक्ष है। इस कारण पृथिवी का सूर्य की प्रदक्षिणा में पूर्व को १ मिनट में १११० मील दौडना, जिस पर भी सूर्य १ मिनट में ३३३ मील साधिक लिरा की तरफ़ दौड़ता है। यह मिस्टर हार्सल साहब लिखते हैं। दी इस्टोरी हैविंस किताब पेज ४५६ में देख लो, यह महा असंभव है। यदि कहो कि वायुमण्डल की वायु पदार्थों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को पूर्व की ओर घुमाती है इस कारण सम्मुख की हवा नहीं टकराती, यह कहना बिना विचारे है क्यों कि कोई हवा ऐसी नहीं देखी जाती है जो सम्मुख की टकराती हुई १ मिनट में १११० मील चलती पृथ्वी से पैदा हुई हवासे रोक दे। यदि ऐसी सम्मुख से रोकने वाली हवा होती तो क्या पूर्व को जाने वाली रेलगाड़ी का धुआं पश्चिम को और पश्चिम को जाने वाली रेल का धुआं पूर्व को जाता? कदापि नहीं। वह वायुमण्डल १ मिनट में २, ३ मील जाने वाली रेल के धुआं को टकराने से नहीं रोक सकता है तो पृथ्वी के चलने से पैदा हुई जो बहुत वेग वाली हवा उसके टकराने से कैसे रोक सकता है इससे यही निर्धारित हुआ कि पृथ्वी को १ सैकिंड में १८॥ मील सूर्य की प्रदक्षिणा देती बतलाना असत्य वार्त्ता है।

किञ्च—वादियों की मानी विचारी छोटी सी पृथ्वी के साहस का पार किसी बुद्धिमान के हृदय में नहीं पाता, तब उसके वक्ता साहबों के साहसों का पार अपार आकाश के पोल में क्यों कर पा सकता है।

महदाश्चर्य पृथ्वी का श्रवण करने योग्य है। पृथ्वी आप घूमती स्थिर नहीं जिस पर विचार कर अपनी सहचरी चाल से कहती है:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे बहिन! मैं इस बड़े महत् प्रकाशवान असंख्य सोलर सिष्टम (Solar system) रूप जगत के पालन हारे सूर्य की प्रदक्षिणा देकर अपना जीवन सफल करना संसार में उत्तम विनय समझा जाता है तब इसकी सहचरी

चाल—बोली। हे बहिन! यह विनय करने का विचार तेरा उत्तमता का सूचक है परन्तु यह कार्य कष्ट साध्य नहीं किंतु असाध्य है।

भू—हे भगिनी! संसार में कौनसा कार्य है जो इस पुरुषार्थ वाले को असाध्य हो। पुरुषार्थ करने से सब ही साध्य हो जाता है।

चाल—बहिन! उद्यम करने से वही कार्य सिद्ध होते हैं जो होने योग्य हैं।

भू—क्या सूर्य की प्रदक्षिणा होनें योग्य नहीं है।

चाल—नहीं नहीं-क्योंकि प्रदक्षिणा एक स्थिर पदार्थ की दी जाती है जो स्वयं चलता है उसकी प्रदक्षिणा देना असम्भव है।

भू—यह वार्त्ता समझ में नहीं आती। जो चलता हुआ होता है उसकी भी प्रदक्षिणा दी जाती है परन्तु अति वेग के साथ चलने से दी जाती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाल—ये ठीक है जिसकी प्रदक्षिणा दी जाय वह अपने ही स्थान पर नहीं घूम रहा है किन्तु घूमता हुआ अति वेग से दौड़ भी रहा है।

भू—वाह जी! बडे २ विद्वानों ने तो पहले सूर्य को स्थिर ही माना था पश्चात मिस्टर न्यूटन (Mr. Neutan) आदि बडे विद्वानों ने सूर्य को अपनी जगह पर घूमता माना है तुम कैसे कहते हो कि सूर्य अति वेग से दौड़ रहा है!

चाल—मेरी प्यारी बहिन! यह वार्त्ता पुराने बुढ्ढों की वार्त्ताओं के समान समझी जाती है क्यों कि उस समय विद्वानों के पास दूर दर्शी यन्त्र नहीं थे न ऐसी साइंस गणित विद्या थी इस कारण उन से जैसा कुछ सङ्कल्प हुआ लिख दिया। यह बात एक पुरानी समझदारों के ग्रहण के योग्य नहीं है। अब नित्य नये नवीन २ चमत्कारी बडे २ विद्वान और बडे २ चमत्कारी यन्त्रों द्वारा जो बातें प्रगट हो रही हैं वही सत्यार्थ मानी जाती हैं और उन के सम्मुख पुरानी वार्त्ता प्रमाणरूप नहीं समझी जाती हैं इसी कारण स्कूलों में भी नवीन २ पुस्तकों का सत्कार किया जाता है।

वर्त्तमान में उन नवीन २ पुस्तकों से नवीन २ विद्वान सूर्य को दौड़ता मानते हैं। क्या तुमने सर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रौवर्ट ऐस बाल (Sir Robert. S. Ball) की रची पुस्तक दी स्टोरी आफ दी हैविंस (The story of the heaven's) पृष्ठ के ४५६, ४५७ में नहीं देखा कि सूर्य लिरा तारे की तरफ आध घन्टे में १०००० मील दौड़ता जा रहा है।

यह मिस्टर हार्षल साहब जो बडे नामी पश्चिमी ज्योतिषी विद्वानों में प्रसिद्ध हुये हैं जिन के नाम को ऐसा कौन भू० गो० भ्र० वादी है जो नहीं जानता। उन का वचन है।

भू—यह माना, परन्तु मैं भी उस के साथ दौड़ती हुई प्रदक्षिणा करूंगी।

चाल—सहेली यह कहना तो जाना परन्तु कार्य जो बिना विचारे करते हैं उन को सफलता भी नहीं होती और व्यर्थ परिश्रम करना पड़ता है।

भू—मैं एक दिन में प्रदक्षिणा करने का नियम नहीं करती किन्तु ३६५। दिन में सूर्य की प्रदक्षिणा कर के अपने जिस स्थान पर से चली वहां की वहीं आजाऊंगी।

चाल—मेरी प्यारी पृथ्वी! तेरा यह कहना बिना विचारे है बुद्धि पूर्वक नहीं है जो १ दिन में प्रदक्षिणा देना कष्ट साध्य है अब ३६५। दिन में असाध्य ही समझने योग्य है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भू—बहिन क्या कायरता और निरुद्यमीपने के होने से कार्य्य की सिद्धि होती है ? क्या में सूर्य के साथ, जो आध घन्टे में १०००० मील दौड़ता है। उस के साथ नहीं दौड़ सकती, मैं तो अपनी दौड़ एक मिनट में ११११० मील दौड़ कर के भी सूर्य्य की दौड़ के साथ दौड़ सकती हूं। इस में न तो मेरे दौड़ने के साहस में न्यूनता न आकाश में जगह की कमी फिर मैं प्रदक्षिणा क्यों नहीं कर सकती ? मेरी प्यारी चाल तू इस में फिर अपने साहस की न्यूनता क्यों दिखाती है ?

चाल—वाह री बहिन ! तूने कहा सो ठीक है। परन्तु मैं इस की वार्ता अगाड़ी बडे कष्ट के देने वाली जिस को विचार कर कहती हूं कि पीछे पछताना पडेगा और सूर्य देव की प्रदक्षिणा भी न होगी।

भू—वह कौनसी वार्ता है मुझ से कह दे जिस को मैं भी समझ लूं।

चाल—वह वार्ता यह है कि प्रदक्षिणा नाम काहे का है। जो उस के चारों तरफ घूम आना पडेगा जब तुम को सूर्य के चारों तरफ़ घूमना तब प्रदक्षिणा पूरी होगी और तेरी दौड़ की चाल १ सैकिण्ड में १८$\frac{1}{2}$ मील विद्वानों ने लिखी है उस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणित से आध घंटे में ३२८५० मील दौड़ती हुई स्वयं और सूर्य लिरा की तरफ आध घंटे में १०००० मील अति वेग से दौड़ेगा तब तू भी उस के साथ दौड़ जायगी यहाँ तक तो विश्वास होता है। पर जब सूर्य तो लिरा की तरफ अपनी वेग चाल से दौडेगा और तू उस की प्रदक्षिणा के लालच में उस के सन्मुख भाग में अत्यन्त वेग से १८२$\frac{५}{८}$ दिन तक दौडेगी तब विचार तो कर कि एक दिन में सूर्य ४८०००० मील अपनी चाल से लिरा की ओर जाता ही रहेगा थमेगा नहीं और प्यारी बहिन तू प्रदक्षिणा के लालच में उस के विरुद्ध दौडेगी, भला फिर सूर्य १८२$\frac{५}{८}$ दिन में ८७६६०००० मील दौड़ गया फिर तू किस रीति से उस के साथ १८२$\frac{५}{८}$ दिन तक के मार्ग को पूरा कर के एक वर्ष के ३६५$\frac{१}{४}$ दिन पूरे कर के दूसरे वर्ष का आरम्भ कर सकती है। यदि सूर्य कहीं ठहर जाय तो तेरा मन संकल्प पूरा भी हो जाय सो वह तो लाखों वर्ष से चल रहा है और चला ही जायगा तो तेरा यह परिश्रम सर्व नष्ट हो जायगा।

भू—मेरी बहिन चाल जो तूने कहा वह सत्यार्थ मालूम होता है। परन्तु मैं क्या करूं मेरे ताई जो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भू० भ्र० वादी बडे २ विद्वान सर न्यूटन आदि हो गये हैं उन के बचनों पर बड़ा विश्वास है और वह इस वार्ता पर लिख गये हैं कि पृथ्वी ३६५। दिन में सूर्य की प्रदक्षिणा किया करती है और इसी से वर्ष होते रहते हैं उन को मैं अपना बड़ा समझती हूं। कुछ भी हो, जो उन का कथन है वही मेरा भी पंथ है। इस लिये सूर्य चाहे स्थिर हो या घूमता हुआ अस्थिर, हो मुझे तो उन के मत से मतवाली होना ही प्रिय है। अब तू मेरी सहायता कर चल ढील मत करे।

चाल—हे बहना ! तुझ से पहले ही कह चुकी कि यह तेरी वार्ता बडे कष्ट की देने वाली है पीछे तुझे पछताना पडेगा वही वार्ता तेरे सम्मुख आ गई। तू कहती है कि भू भ्रमण वादियों को मैं अपना गुरू समझती हूं और उन के मत से मतवाली (बावली) हो गई हूं मुझे तू अपना साथ दे सो ऐसा कहना तेरा महा लज्जा का कारण है क्यों कि उस समय तू मतवाली ही बनी थी तो हेतुवाद से मध्यस्थों के सम्मुख ऐसी चाल क्यों चलाती। भेड़ चाल पर अंध कूप में गिर पडती। मुझे यह वार्ता महा लज्जा के करने वाली मध्यस्थ पुरुषों के कान तक न पहुंचे जब ताईं तेरा नाता तोड़ देना श्रेष्ठ है। मैं कभी तेरी सहचरी बन कर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेरा साथ स्वप्न में भी न करूंगी और तुझ को भी यदि मध्यस्थों में अपना यश करना है तो मेरे साथ को छोड़ कर अचला स्थिरा जो पुरातन बड़े विद्वान पुरुषों ने तेरे नाम को अनादि काल से कह रखा है उस नाम को बनाये रख, अपने नाम को नष्ट मत कर और मुझे सूर्य चन्द्रादि उद्योतवान पदार्थों की सहचरी बनने दे जिस तेरे ऊपर दिन रात्रि ऋतु अयन, वर्ष का व्यवहार होता रहे। अन्यथा पुराने वस्त्र के फैलाने में हजारों टुकड़े ही टुकड़े नज़र पड़ेंगे-चाल यह कह कर पृथिवी से विदा हो कर ज्योतिष चक्र की सहचरी हुई।

नं १४ का विवेचन

पृथ्वी की परिधि २४८०० मील १४ घन्टे में फी घन्टे में १०३७ मील, फी मिनट में १७ मील और एक सैकिंड में १५०० फीट करीब २ के हिसाब से घूमती है।

शङ्का—जब कि पृथ्वी के पूर्व की तरफ सूर्य होता है मध्य रेखा पर उस समय दिन ठीक १२ घन्टे का होता है तब पृथिवी के पूर्व की ओर अर्द्ध भाग (१२४५० मील) पर सर्वत्र दिन होता है और पश्चिम में अर्द्ध भाग (१२४५० मील) पर रात्रि होती है—पृथिवी की यह दशा गणित के उक्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिसाब से १२ घन्टे में घूम कर जहां दिन होताहै वहां रात्रि और जहाँ रात्रि है वहां दिन होना ठीक है तब विचार का समय है कि सर्व जगह १२ घन्टे ही में तो दिन प्रातःकाल, दो पहर, सन्ध्या काल हो गया और १२ घन्टे ही में रात्रि, अर्द्ध रात्रि, पिछली रात्रि हो गई तब १२ घन्टे दिन और १२ घंटे रात्रि हो कर २४ घंटे में एक दिन रात्रि होती है। यह कहना बाधित है। जिस पर यह कहना कि पृथ्वी गोलाकार है पर पोलों के स्थान में दिन २४ घंटे का ६ महीने तक रहता है।

शंका—का स्थान क्यों नहीं है यदि कहैं कि १२ घंटे के ठीक दिन मान में नहीं। ये कहना शङ्का स्थान है क्योंकि जब ठीक १२ घंटे का दिन होता है तब पोलों में दिन रात्रि की क्या व्यवस्था होती है। यदि इस में दिन रात्रि की व्यवस्था कोई और संकल्प करें तो वहां ६ महीने का दिन ६ महीने की रात्रि के नियम में बाधा आती है यदि कहैं कि जब पृथ्वी तिरछी घूम कर सूर्य की प्रदक्षिणा में जाती है तब सूर्य सम्मुख होने से वहां २४ घंटे तक दीख पड़ता है यह बिना विचारे है; क्योंकि पृथिवी पोलों पर भी गोलाकार ही होती है, कारण पोलों में पानी वर्फ वा जमीन कोई भी पदार्थ माना जाय जब पोलों का गढ़ा भरने से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृथ्वी गोलाकार हुई और गोलाकार होने से सूर्य का प्रकाश गोलाकार की ऊंचाई की आड़ के कारण वहाँ पहुंचना असम्भव है। और सूर्य पृथ्वी की घूम में २३॥, २३॥ दर्जे से अलहदा नहीं होता है। एक स्थान पर ४७ डिगरी के भीतर बंधा हुआ सा है फिर उस का प्रकाश २४ घंटे, ६ महीने तक रहना शङ्का का स्थान भूगोल भ्रमण-वादियों के कहे वसूजिब क्यों नहीं है, किन्तु है। जो गोलाकार छोटी सी बड़े सूर्य को मान कर ६ महीना तक दिन २४ घंटे का सूर्य का प्रकाश नहीं हो सकता। इस को नम्बर ८ के विवेचन में सविस्तार दिखा चुके हैं।

नम्बर १५ का विवेचन।

जल में ऊपर की सतह सब जगह समान है। भावार्थ—समुद्र का पानी स्वभाव से ऊपर भाग में बराबर है ऊंचा नीचा नहीं है।

शङ्का—देखो नं १६ पानी स्वयं अपने स्वभाव से नीचे को ढलता है वह वादियों को स्वीकृत है जब पानी अपनी ऊपर की सतह से जिधर निचाई पावेगा वहाँ ही चल कर ऊपरली सतह को बराबर कर लेगा जब तक सतह बराबर न होगी तब तक आता ही रहेगा। यह वार्त्ता जल में स्वयं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्ध है किसी की बनाई हुई नहीं है। ऐसा कौन विचारवान है जो न माने, सर्व ही के स्वीकार करने योग्य है। यह हेतु समधरातल पृथ्वी मानने पर ही सार्थिक होता है क्यों कि समधरातल पर ही नीचे गढे आदि में भर कर अपनी जगह बराबर कर लेता है उस गोल पृथिवी में नीचे ढलने वाले स्वभाव के धरने वाले नल को बराबर स्थान मिलता ही नहीं जो उस को भर कर ऊपर की सतह बराबर करले, उस को तो जिस केन्द्र की ऊर्द्ध रेखा पर आप ठहरता है उस के सब तरफ नीचा ही नीचा मिलता है किस तरह गोलाकार में ऊपर की सतह को बराबर करे। वह सब तरफ गढे में जा कर अपनी ऊपर की सतह को बराबर नहीं कर सकता है इस कारण वादियों का उक्त कहना न कहने के सदृश है। यदि वह अपनी पक्ष पुष्ट करने को कहैं कि भूगोल केन्द्र की समान लम्बी रेखाओं से बना है। जब सब समान लम्बाई में एक बराबर है। अन्त भाग जिस का उस में ऊंचा नीचा कुछ नहीं है इस कारण गोलाकार पिण्ड रूप पृथ्वी में नीचा ऊंचा न होने के कारण वह समधरातल ही है ऐसे कहना बिना विचारे है, क्यों कि गोलाकार पिण्ड में नीचा ऊंचा नहीं मान कर समधरातल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बनाना अनिष्ट है क्यों कि समधरातल समकोण समानान्तर रेखाओं पर ही बनता है, प्रत्यक्ष बाधित है। जहां पृथ्वी पर जल है वह केन्द्र की ऊर्द्ध रेखा है यद्यपि दूसरी रेखायें उसी के समान लम्बी हैं तद्यपि उस के बराबर नहीं हैं। नीची हैं। देखो क रेखा से ख ग घ ङ ! केन्द्र से क ऊर्द्ध रेखा से ख ग घ ङ से व रेखा नीची है और क रेखा से ख ग घ ङ रेखाओं पर पानी निचाई पा कर ढलता है इस प्रत्यक्ष को न मान कर क ख ग घ ङ रेखाओं को बराबर बता कर गोल को सम भूमि बताना कितना असत्य वाद है ? जल तो जहां नीची पृथिवी होगी वहां जा कर अपना शिरो भाग बराबर कर के ही निश्चल होगा यह उस का स्वभाव स्वयं सिद्ध है। जब ऊपर की सतह में बराबर हो जायगा तब ही तो सतह बराबर कही जायगी फिर गोलाकार भू के मानने वालों का कहना कि जल के ऊपर की सतह बराबर होती है, "अजा कृपाणी" न्याय समान अपने ही पक्ष को घात करने वाला है क्यों कि ऊपर की सतह बराबर मानने से पृथिवी गोलाकार न रह कर समधरातल वाली ही सिद्ध होती है।

किञ्च—गोल पर समधरातल ऊपर भाग में नहीं होता है न्याय संगति छोड़ यदि यह स्वीकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भी कर लिया जाय तब भी वादियों के सिद्धान्त में दोष आता है क्योंकि उन्होंने केन्द्र से पृथ्वी तक ३९६३ मील लम्बी रेखा मानी है और दक्षिणी उत्तरी पोलों में दोनों तरफ २६ मील कम (हर एक तरफ तेरह तेरह मील कम) भावार्थ ३९५० मील की मानी है तब वहां पर १३ मील का गढ़ा हुआ तो पानी सब तरफ से आकर उस गढे को भर कर अपनी ऊपर की सतह को पूरा क्यों नहीं कर लेता है ?

यदि पूरी कर लेता है तो पच्छिम का व्यास ७९२६ मील और उत्तर दक्षिण का २६ मील कम अर्थात् ७९०० मील कहना असम्भव है। पोलों में तो बर्फ माना गया है तब जब से बर्फ ऊंचा रहने के कारण दक्षिणोत्तर व्यास ७९२६ मील सेभी अधिक ठहरता है और यदि पोलों में पृथ्वी मानी जाय तो भी ७९२६ मील से अधिक ठहरता है इस लिये किसी बात का ठिकाना नहीं है जो कुछ मन में आया वही संकल्प कर के लिख दिया ऐसी अत्यन्त विरुद्ध वार्त्ताओं पर कैसे प्रतीति की जाय।

नं०१६ का विवेचन।

वादी—जल नीची सतहकी ओर बहता है।

प्रति०—भूगोलाकार में नीचे ऊंचा कुछ नहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है ! लोक व्यवहार में पैरों के नीचे नीचा और शिर की तरफ ऊंचा गिना जाता है किन्तु गोल पृथ्वी में समान लम्बी रेखाओं से गोल होता है इस कारण नदियों के जल का बहाव सब दिशाओं को उचित है परन्तु पृथ्वी पर जल नीचे को ढलता कहा है सो कैसे ?

वादी—नीचा वही है जो स्थान केन्द्र के पास हो और ऊंचा जो केन्द्र से दूर हो।

प्रति—यह कहना बिना विचारे है यदि ऐसा है तो उत्तरी दक्षिणी पोलों पर कोई टापू या जमीन शहर न होना चाहिये और समुद्र भी हो तो १३ मील गहरा होना चाहिये क्योंकि उत्तरी दक्षिणी व्यास ७८०० मील है और पूर्व पश्चिम ७८२६ मील। तब उत्तरी दक्षिणी पोलों की गहराई २६ मील हुई उसकी आधी १३ मील गहरी पृथ्वी होने के कारण केन्द्र से स्थान पास होने पर वहां पानी भरा रहना चाहिये क्योंकि पानी नीचे को ढलता माना है और नीचा केन्द्र को समझा गया है इस कारण समुद्र की गहराई उत्तरी दक्षिणी पोलों पर १३ मी लहोनी चाहिये परन्तु समुद्र की गहराई अधिक से अधिक २ मील के करीब मानी गई है सिद्धांत विरोध होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यदि पोलो में १३ मील समुद्र गहरा मान लिया जाय जो पोलों में दक्षिण उत्तर की तरफ व्यास पृथ्वी का ७८२६ मील ठहरेगा तब ७८०० मील मानना असत्यार्थ होगा। १३ मील पानी होना चाहिये क्योंकि केन्द्र की रेखा छोटी होने के कारण यहाँ नीचा है।

प्रथम तो यही कल्पना मात्र है दक्षिणी उत्तरी पोल है क्योंकि वहां तक कोई पहुंचा ही नहीं है। यदि पहुंचा भी होगा तो बिना समुद्र की गहराई वहां कैसे जाना कि भू का व्यास ७८०० मील है संकल्प मात्र से मनमानी कह देने से सिद्धांत को सत्य मान लेना चतुर पुरुषों का काम नहीं है।

भावार्थ—पूर्व पश्चिम ७८२६ मील का और उत्तर दक्षिण २६ मील चपटी होने के कारण ७८०० मील का व्यास माना है वहाँ २६ मील चपटी हो नहीं सकती है क्योंकि समुद्र की सतह सब जगह बराबर है और यदि उत्तरी दक्षिणी पोलों पर समुद्र माना जाय तो चपटी नहीं रही क्योंकि समुद्र की सतह समान है इस लिये यह संकल्प व्यर्थ है।

ज़िम्मा—कलकत्ते के समुद्र की सतह से दूरी तथा ऊंचाई का ब्यौरा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम स्थान	दूरी मील	ऊंचाई फीट
दिल्ली	८००	७२५
आगरा	७८०	५३४
पटना	३३२	१८५
अलीगढ़	८२५	६२१
हुगली	३५	२४
पानीपत	८५८	७७४
करनाल	८७८	८१५
कुरुक्षेत्र	१०००	८४०
कानपुर	६३३	४२८

इसी भाँति पानी अपनी नीची सतह पर बहता है यहां पर प्रश्न यह है कि घूमती हुई गोलाकार पृथिवी में ऊंचाई और निचाई क्या ? समधरातल स्थिर पृथिवी पर तो ऊंचाई निचाई कह सकते हैं गोले म तो सब तरफ ऊंचाई निचाई है क्यों कि ऊंचाई निचाई परिधि में होती है और गोले में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिधि सब तरफ है इस कारण सब तरफ ऊंचाई निचाई परस्पर सापेक्षक है इस में किसी को ऊंचा किसी को नीचा कहना बाधित है इतना विशेष है कि छोटे गोले में ऊंचाई निचाई अधिक और ज्यों ज्यों गोला बढ़ता जावेगा ऊंचाई निचाई कम होती जायगी । इस कारण कलकत्ते के समुद्र से पृथिवी की ऊंचाई के नक़शा देखने से पृथिवी समधरातल वा स्थिर रूप ही निश्चित होती है ।

शहरों की ऊंचाई से जो समुद्र की सतह की निचाई दिखाई—कुछ कम १ फुट हर एक मील पर है सो ठीक है गङ्गा आदि नदियों वा नहरों के पानी का ढलाव इतना ही पाया जात है जल के सम वेग चलने पर इस से अधिक ढाल पर पानी ज़ोर से चलता है इसी कारण नहर बम्बों में झाल बन कर पानी को सम बहाते हैं यदि एक मील में एक फुट से कुछ कम ढाल पर गोला बनाया जाय तो ६० लाख मील व्यास वाली पृथिवी का गोला होय जद पानी सम वेग से बहै पृथिवी गोल ८००० मील के व्यास वाली पर पानी सम चाल से नहीं बह सक्ता यह प्रत्यक्ष बाधा है । यदि अपने पक्ष साधन को गोल पृथिवी को समधरातल ही मान लिया जाय तो प्रत्यक्ष बाधित है ।

फिर—पृथिवी गोल है इस में नीचा ऊंचा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पना नहीं है क्यों कि केन्द्रसे बराबर लम्बी रेखाओं से गोलाकार बनता है तब उस में किसको नीचा कहा जाय ? उस में तो पहाड़ पृथिवी ऊंची है और झील गढ़ा आदि नीचे हैं।

वादी—हमने जो ऊंचा नीचा कहा है वह इसी गोल की सतह से कहा है और जो गोल है वह समधरातल है।

प्रश्न—यह कहना ठीक नहीं है क्यों कि इस चित्र में भी ऊंचाई निचाई परिधि रूप में है जैसे पहाड़ ऊंचा है वह किसी केन्द्र की परिधि है या झील, गढ़ा यह भी किसी केन्द्र की परिधि हैं। ऐसी समधरातल में ऊंचाई निचाई नहीं होती है। क्यों कि वह समकोण समानान्तर रेखाओं से बनता है गोलाकार तो जब ही बनता है जब समान लंबी रेखा होते भी एक ऊंची होती है दूसरी नीची, इस कारण गोल में ऊंचा नीचा नक्शे से दिखाना असम्भव है देखो चित्र गोल में सम रेखाओं पर भी ऊंचा नीचा है। इस कारण पानी नीची सतह पर जाता है यह समधरातल पर ऊंचे नीचे होने से बनता है। गोलाकार मानने वालोंने स्वीकृत किया है कि पानी नीची सतह की ओर को जाता है यह असत्यार्थ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किंच—जब पानी नींचे को ढलता है तो अमरीका के पहाड़ों से निकली हुई नदियाँ हिन्दुस्तान में आनी चाहियें अथवा कलकत्ते की हरद्वार में आनी चाहिये, सो है नहीं—इस कारण तुम्हारे सिद्धान्त से ही पृथिवी गोल वा घूमती नहीं बनती है।

किंच—गोल पृथिवी में जहां से पानी निकलेगा वहां से सब ओर ऊंचा ही ऊंचा है क्यों कि जिधर देखते हैं पृथिवी पर के दूरवर्ती पदार्थ का तल भाग नहीं दीखता है कारण—पृथिवी की ऊंचाई की आड़ हो जाती है जैसा कि नं २ में माना है कि जहाज़ का मस्तूल पहले दीखता है इस से पृथिवी ती ऊंचाई सब तरफ ठहरी और पानी ऊंचे को चढ़ा तब पानीका नीचे को ढलना कहना स्वबचन वाधित है इस कारण गोल पृथिवी में पानी नीचे को ढलना कहना असम्भव है। यदि पृथिवी गोल न हो कर के समधरातल हो तो तब यह कहना ठीक है।

इस प्रकार तुम्हारे सिद्धान्त से ही पृथिवी गोल नहीं बनती।

नं १७ का विवेचन

पृथिवी सूर्य की प्रदक्षिणा में गोल नहीं किंतु अण्डाकार घूमती है:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शङ्का—ऐसा शङ्कल्प भ्रम जनक है। सूर्य का मण्डल गोलाकार है और उस की आकर्षण शक्ति से पृथिवी घूमती है तो उस का घूमना भी गोलाकार होना चाहिये क्यों कि आकर्षण शक्ति सब ओर समान है और सूर्य से ८३० लाख मील की दूरी पर मानी है तब भी दूरी सर्व तरफ बराबर होने से पृथिवी गोलाकार ही घूमती मानना संभव है यदि सूर्य का आकार अण्डाकार होता तो पृथिवी का घूमना अण्डाकार होता इस कारण पृथिवी का घूमना अण्डाकार मानना नितान्त भ्रान्ति रूप है।

किञ्च—यह कहना समीचीन नहीं है क्योंकि प्रथम तो पृथ्वी घूमती नहीं है यदि "दुर्जन संतोष न्याय" से घूमती भी मान ली जाय तो देखो स्वीकृत नं० २१ सूर्य की आकर्षग पृथ्वी को पास आने से वा दूर जाने से रोकती है और पृथ्वी के घूमने को नहीं रोकती है यह सिद्धांत स्वबचन घातक होता है और सूर्य गोल माना गया है जब केन्द्र में सूर्य गोल है तब उसकी आकर्षण शक्ति भी पृथ्वी को गोलाकार ही घुमावेगी अण्डाकार घूमने में तो सूर्य से दो तरफ दूर होती है और दो तरफ नजदीक आती है इस प्रकार वाधित है। दूसरे सूर्य के केन्द्र में मानी हुई आकर्षण शक्ति में भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भ्रम पड़ता है इस कारण अण्डाकार घूमना तुम्हारे माने सिद्धांत से बाधित है।

नम्बर१८ का विवेचन।

हमारा नीचा वह पैर वालों का ऊंचा है।

भावार्थ—हिंदुस्तान से अमरीका और अमरीका से हिंदुस्तान नीचा है।

शङ्का—यह कहना स्वबचन घातक है आपने माना जो नं० १६ उसमें पानी नीचे को ढलता है यह सत्यार्थ माना है इसके देखने से यह प्रतीति होती है कि पृथ्वी गोलाकार नहीं है समधरातल है। कहीं नीची और कहीं ऊंची होने से नदियों को जिधर नीचा मिलता है उधर ही ढल जाती हैं और पृथ्वी गोलाकार मानकर उसमें कहीं नीचा कहीं ऊंचा बनता ही नहीं है। यदि ऊंचा नीचा माना भी जाय तो अमरीका की नदी हिंदुस्तान में और हिंदुस्तान की अमरीका में पहुंच जायेंगी अथवा स्वीकृत नं० १६ में पानी नीचे को जाता है तो पृथिवी में कहीं नीची सतह मानी नहीं है फिर पृथिवी को गोलाकार साधने में क्यों यह हेतु दिया है कि (नं० २) जब जहाज़ को दूर से देखते हैं तब पृथिवी की गुलाई की ऊंचाई आड़ आ जाने से पहले उसका ऊपर का भाग दीखता है तब जहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से पानी चलेगा वहां ही ऊंचा (सब जगह) मानना पड़ेगा और गोलाकार घूमने में कुछ ऊंचा नीचा नहीं है। जो ऊंचा होता है वही नीचा हो जाता है। इस कारण गोल पृथिवी मानने वाले को ऊंचा नीचा कहना बाधित है।

किञ्च—गोल में ऊंचा नीचा नहीं है व्यवहार के लिये माना जाता है जो हमारे पैर के नीचे है हम उस के ऊपर हैं तब पैर के नीचे वाला नीचा रहा और सिर के ऊपर वाला ऊंचा रहा कहा जाता है। इस कारण हिन्दुस्तान से अमरीका और अमरीका से हिन्दुस्तान, हरद्वार से कलकत्ता और कलकत्ते से हरद्वार नीचा है और यह व्यवहार पानी में प्रत्यक्ष देखा जाता है कि वह नीचे की तरफ ढलता है तुम्हारे भी नं० १६ में स्वीकार किया है, फिर सर्व नदियों का बहाव सब जगह से सर्व दिशाओं को होना चाहिये सो है नहीं, यदि पक्ष साधन को कहें कि समुद्र की सतह गोल समधरातल है उस से पृथिवी जिस तरफ अधिक ऊंची है वह रोक कर दूसरी तरफ पानी को जाने देती है। यह कहना भी बिना विचारे है, क्यों कि कोई पहाड़ वा पृथिवी उतनी ऊंची नहीं है जो पृथिवी की गुलाई से अधिक ऊंची हो सब गुलाई के थोड़ी दूर चलकर गणितसे बानके माफिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चलकर उनकी पृथ्वी से निचाई हो जाती है व्यर्थ पृथ्वी की निचाई बता कर जीवों को भ्रम में क्यों पटकाते हो ? देखो हरद्वार की ऊंचाई कलकत्ते के समुद्र से ८०० फीट के करीब है वह ऊंचाई ८०० फीट । २५००० मील परिधि वाली मानी गई पृथ्वी में ८० मील में ही पृथ्वी से सम हो जाती है।क्योंकि १८० मील में तो १ मील पृथ्वी की ऊंचाई होती है वहां जल का चढ़ना कठिन है । तब तो हरद्वार से कलकत्ते का बान २६ मील ऊंचा है तब गंगा नदी का कलकत्ता पहुंचना असम्भव है ऐसी ही शङ्का सिन्धु नदी के किरांची के समुद्र में पहुंचने पर है तथा औरभी नदियों के बहाव से गोल पृथ्वी में शङ्का होती है । तिस पर भी पृथ्वी के घूमने पर तो शङ्का महा शङ्का हो जाती है इस से यह कहना कि हमारे पैरों के नीचे वालों के हम नीचे हैं कह कर पृथ्वी को गोल बता कर घूमती कहना असम्भव है । इस में प्रत्यक्ष हेतु नदियों के बहाव का जिस को सर्व बाल गोपाल सुधी जन स्वीकार करते हैं ऐसे हेतुओं को छोड़ संकल्प किये परोक्ष हेतु जिन का स्वभाव बल, नियम, रूप नहीं ऐसे आकर्षण शक्ति वायु-मण्डल आदि को पक्ष साधन में कौनसा विद्वान ग्रहण कर सकता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० १९ का विवेचन

पृथ्वी का पूर्व पश्चिम व्यास ७९२६ मील और दक्षिणोत्तर ७९०० मील है। परिधि २४९०० मील।

शङ्का—प्रथम व्यास कहते किस को हैं यह विचारणीय है।

व्यास—एक गोलाकार वा गोल क्षेत्र की मध्य रेखा जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक केन्द्र को स्पर्श करती हुई पार करती हो उस का नाम है।

पृथ्वी एक गोले के आकार है परन्तु कहीं ऊंची कहीं नीची होने के कारण उस का व्यास सब जगह एक सा नहीं। यदि उस की ऊंचाई निचाई दूर कर बीच की रेखा नापी जाय वह व्यास है। तब यही निर्धारि हुआ कि तुम ने मानी जो समुद्र के पानी की सतह बराबर है उस में ऊंचाई निचाई नहीं होती है इस कारण समुद्र की सतह जो गोल पृथ्वी के दोनों भागों पर है उस के बीच ठीक मध्य रेखाका व्यास ७९२६ मील माना गया है। ठीक होता है तुम (वादियों) ने पृथ्वी को नारंगीके आकार दोनों तरफ चपटी माना यह असम्भव है। क्योंकि पृथ्वी का व्यास ७९२६ मील समुद्रकी सतहसे दूसरी ओर की सतह तक ठीक गोलाकार पृथ्वी में माना गया है, उस पर कहीं पहाड़ ऊंचा कहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

झील के स्थान नीचे होने से ऊंचा नीचा है, वहांका व्यास ठीक नहीं है। तब दक्षिणी उत्तरी पोल जो कि तेरह तेरह मील समुद्र की सतह से गहरी हैं वहां क्या है यदि समुद्र मानोगे तो ७८२६ मील का व्यास हो गया और बर्फ माना जाय तो बर्फ हलका होने के कारण पानी के ऊपर रहता है इस लिये बर्फ अधिक ७९२६ मील हो गया और तुम को पोलों में बर्फ मानना स्वीकृत है। देखो नं० ६६ में। और यदि पृथ्वी मानी जाय तो भी जितनी सतह से ऊंची होगी उतना अधिक व्यास ७८२६ मील हुआ फिर वहां का व्यास ७८०० मील मान कर पृथ्वी को दोनों तरफचपटी मान नारंगी के आधार बताना क्यों भ्रम जनक नहीं है? यदि यह कहैं कि वहां कोई गया ही नहीं है तो तेरह मील गहरी का संकल्प करना व्यर्थ है। वहाँ पर बिना पहुंचे कैसे गहरी का नाप हुआ? यह भी असत्य वार्ता समझ में नहीं आती है क्योंकि नक़्शे में उत्तरी दक्षिणी ध्रुवों के स्थान में कुछ समुद्र दीखता है, कहीं पृथ्वी दिखाई देती है। किताबों में कहीं बर्फ बताया जाता है, कहीं कुछ नहीं। इस कारण निर्धार रूप नहीं है। जिस को सत्य माना जाय। यदि कहा जाय कि वहां गड्ढा है और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारों ओर न भीत है। वहां बर्फ के कारण कोई जा नहीं सकता है। यह वादियों की भ्रम रूप वार्ता सत्यार्थ कहने वाली नहीं है, विचार किये अनेक दोष आते हैं। इस कारण पृथ्वी नारंगी के आकार नहीं है उक्त विवेचन से उत्तर दक्षिण ७८०० मील और पूर्व पच्छिम ७८२६ मील का व्यास कहना बाधित हो गया तब परिधि २४८०० मील मानी हुई भी शङ्का का स्थान है।

नं०२० का विवेचन।

पदार्थ परस्पर एक दूसरे को ऐसी शक्ति से खींचे हैं कि जितने निकट होते हैं आकर्षण शक्ती उतनी ही अधिक और दूरी पर कम हो जाती है।

शङ्का—यह कहना मन गढ़न्त प्रलाप मात्र है क्योंकि यदि ऐसा होता तो चन्द्रमा पहले पृथ्वी के संलग्न था (देखो स्वी० नं० ४० में) तब निकट होने से आकर्षण शक्ति उस में बहुत थी फिर दूर हो गया ऐसे लिखने से प्रतीति होता है कि निकट होने पर आकर्षण न अधिक होती है यह बाधित है। नम्बर २२ भी इस से बाधित है क्योंकि वह साफ दिखलाता है कि आकर्षण दूर जाने को रोकती है ऐसे ही नं० २१ विरोधी है कि आकर्षण पदार्थों को इधर उधर नहीं जाने देती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वा आकाशी लोक को स्थान पर स्थित रखती है ऐसे वादियों के सिद्धान्त से ही आकर्षण शक्ति का प्रतिघात होता है। इस से आकर्षण शक्ति के बल का कथन करना सत्यार्थ नहीं। दो पदार्थों में एक जितना बडा होगा उस को दूसरे की बड़ाई से गुणनफल कर दो, उतनी ही शक्ति आकर्षण की बढ़ जायगी। दूरी पर इसी प्रकार (वर्गरूप) घट जायगी। इस पर शङ्का यह है कि पृथ्वी में जो आकर्षण शक्ति है उस से $\frac{१}{४९}$ भाग चन्द्रमा में हैं तो गुणनफल से $\frac{१}{४९}$ भाग शक्ति रह गई वह शक्ति पृथ्वी में रही वा चन्द्रमा में वा दोनों में। कुछ निर्धारित नहीं लिखी है। वह भी शक्ति $\frac{१}{४९}$ भाग रही वह दूरी २४००० मील के वर्ग रूप घटी। यानी $\frac{१}{५७६०००००}$ घटी तब पहले जो शक्ति $\frac{१}{४९}$ भाग रही थी वह दूरी के कारण और घटी इस लिये $\frac{१}{२८२१४००००००}$ वें भाग में रह गई तब शक्ति महा हीन होने से चन्द्रमा पर क्या अपना बल कर उस को घुमा सकती है ऐसे गणित सत्यार्थ होने से कुछ किसी बात का ठिकाना नहीं है। ऐसी मन गढ़न्त संकल्प करी हुई बार्त्ता पर कैसे विश्वास किया जाय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यदि आकर्षण शक्ति वादी के कहने वमूजिब न होती को, होती भी मान ली जाय तो वह शक्ति जब पृथ्वी के संलग्न चन्द्रमा था तब पृथिवी वा चन्द्रमा की शक्ति आकर्षण अतीव थी तो फिर उस शक्ति को कौन हर ले गया ? जो चन्द्रमा दूर हो गया। अब २४०००० मील दूर है और दूर होता चला जाता है इस कारण मालूम होता है कि आकर्षण वा उसकी शक्ति वार्त्ता संकल्प रूप मन गढ़न्त मिस्टर सर न्यूटन के मुख का सिंगार है। यह भ्रांति रूप है।

नम्बर २१ का विवेचन।

आकर्षण शक्ति सूर्य से पृथिवी को दूर जाने से व नज़दीक आने से रोकती है, पृथिवी के घूमने को नहीं रोकती।

शङ्का—यह कहना अपने मन माने सिद्धांत को नष्ट करता है। वह क्या है ? देखो नं० १७ में पृथिवी अंडे के आकार घूमती है। जब सूर्य गोल है और उसकी आकर्षण पृथिवी को दूर जाने व नज़दीक आने से रोकती है तब सूर्य की प्रदक्षिणा में पृथिवी गोलाकार घूमनी चाहिये जैसे घोड़े को चाल सिखलाने में केन्द्र पर खड़े आदमी के हाथ में डोरी घोडे को गोलाकार घुमाती है तैसे सूर्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूपी मनुष्य घोडे रूप पृथिवी को आकर्षण रूप डोरी से घूमने में पृथिवी गोलाकार घूमनी चाहिये उसके अण्डाकार घूमने की वार्ता असत्य ठहरती है। इस लिये उक्त सिद्धान्त की वार्ता स्ववचन घातक है।

किञ्च—जो पदार्थ के आकर्षण से खिचे हुए पदार्थ इधर उधर नहीं जा सकते हैं ऐसे वादी का कथन स्वसिद्धांत को नष्ट करता है। देखो नं० ४० चन्द्रमा पहले पृथिवी से संलग्न था, अब दूर होता चला जाता है, वर्त्तमान में २४०००० मील दूर हो चुका है और नहीं मालूम कितनी दूर हो जायगा। इस कथन से विरुद्ध सेव का फल वृक्ष से पड़ कर वा पदार्थ बडे जोर से फेंके हुये आकाश में, वा वर्षा की बूंद, वा टूटे हुए तारे, ये सब पृथिवी के संलग्न हो जाते हैं, ऐसे परस्पर विरुद्ध माने हुए सिद्धांत पक्षपात धारियों के सिवाय मध्यस्थ पुरुषों के हृदय में कैसे वास कर सकते हैं? इस से भ्रान्ति रूप हैं।

नं० २२ का विवेचन।

आकर्षण शक्ति का नियम है कि भू के पदार्थों को इधर उधर नहीं जाने देती और आकाशी लोक को स्थान पर कायम रखती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शङ्का—यह कहना व्यर्थ है। यदि ऐसा होता तो आक के फफूंदे महा शक्तिहीन जो इधर उधर चलते हैं वा तोप के गोले बलवान जो इधर उधर जाते हैं। वह क्यों जाते और आकाशी पदार्थ जो चन्द्रमा इन को पृथिवी को दूर होने देती और आकाशी लोक सोलर सिष्टम (Soler System) सहित सूर्य लिरा की तरफ चला जा रहा है, उस को स्थान पर क्यों न रोकती। आकर्षण शक्ति ने अपने नियमों में से किसी का भी पालन नहीं किया, इस कारण यह आकर्षण शक्ति सर्व मन गढ़न्त मालूम होती है इस से भ्राँति रूप है।

किंच—जब आकर्षण शक्ति पृथ्वी पर के पदार्थों को इधर उधर नहीं जाने देती तब आकाश में विचरते कबूतर, धनुष का तीर, तोप का गोला आक के फफूंदे, रुई, पुन्ज सर्व ही पृथ्वी के साथ दौड़ने घूमने चाहिये। जैसे २ पृथ्वी घूमे वा दौडे वैसे २ सर्व पदार्थ साथ रहने चाहिये। यदि पक्ष दृढ़ करने को कहै कि साथ तो रहते हैं। जब साथ घुमाने वाली कोई वायुमण्डल की शक्ति है उस से यह कार्य होता है, तब मालूम हुआ कि वह प्रबल शक्ति है जो बडे २ बलवान तोप के गोले तक को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृथ्वी के साथ घुमा देती है, तब पश्चिम को जाते त्रटुरेणु वा आक के फफूंदे उन के घुमाने को वह कहां चली जाती है, इस कारण वायुमण्डल की शक्ति की कल्पना आकर्षण के सदृश्य मन गढ़न्त असम्भव है तिस पर यह कहना कि आकर्षण शक्ति पृथ्वी के पदार्थों को इधर उधर नहीं जाने देती असम्भव है और आकाशी लोक को स्थान पर रखती है तब चद्रमा को भी साथ रखती है आप घूमती है, जब उस को जिस स्थान पर है वहाँ ही रखती हुई घूमती है तब चद्रमा का घूमना २४ घंटे में अपनी कीली पर पृथ्वी की तरह ठहरेगा, चद्रमा पृथिवी की प्रदक्षिणा २७। दिन में देता है, वह न रहेगी। यदि कहोगे कि प्रदक्षिणा तो देता ही है तो यह कहना कि आकर्षण आकाशी लोक को स्थान पर रखती है। न बनेगी। क्यों कि चन्द्रमा आकाशी लोक का पदार्थ है। यह प्रदक्षिणा में अपनी चाल से जुदा घूमता है तब पृथिवी की आकर्षण शक्ति ने चन्द्रमा को स्थान पर क्यों नहीं रक्खा? इस लिये आकाशी लोक को पृथिवी की आकर्षण शक्ति स्थान पर कायम रखती है यह कहना ठीक नहीं है भ्रान्ति रूप है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० २३ का विवेचन

आकर्षण शक्ति बडे पत्थर में अधिक छोटे में कम होती है।

शङ्का—आकर्षण शक्ति बडे में अधिक छोटे में कम होती है सो बड़ा छोटा किस को माना है? यदि नाप में छोटा बड़ा माना है तो लकड़ी और सोने के पिण्ड में माना जाय सो है नहीं, क्योंकि छोटे सोने में अधिक और बड़ी लकड़ी में कम आकर्षण होती है। तब यही आया कि बडे वज़न की वस्तु में अधिक और थोडे वज़न वाली में कम शक्ति होती है। जब आकर्षण पदार्थ के गुरुत्व लघुत्व से मानी गई तब कारण रूप तो गुरुत्व लघुत्व बना रहा, जिस से हुई आकर्षण शक्ति, वह कार्य रूप रही, फिर यह कहना कि आकर्षण की अधिक शक्ति से गुरुत्व होता है थोडे से कम होता है कैसे सम्भव होय? इस से बड़े पत्थर में अधिक छोटे में कम कहना असम्भव है। प्रत्युत ऐसा कहना चाहिये कि भारी पदार्थ में आकर्षण अधिक उत्पन्न होती है और छोटे में कम। सो तुम आकर्षण से गुरुत्व मानते हो यह प्रत्यक्ष बाधित है क्यों कि पदार्थ मात्र में गुरुत्व लघुत्व पाया जाता है सर्व बाल गोपाल सभी जानते हैं और अनुभव में भी पदार्थ में गुरुत्व लघुत्व गुण देखा जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किञ्च—परमाणुओं के समुदाय सेद्विणिक त्रिनू आदि जब इञ्च पिण्ड होते हैं परमाणु इन के नापने का एक गज़ है तब लोहे के १ घन इंच के पिंड में जितने स्थान में जितने परमाणुओं को गणिता होगी वही स्वर्ण में एक घन इञ्च के पिंड में होगी क्योंकि स्थान दोनों का सम हैऔर उस स्थान के नापने का परमाणु रूप गज़ सम है तब दोनों पिंड तोल में बराबर होने चाहिये, सो है नहीं, स्वर्ण तोल में अधिक और लोहा न्यून होता है। दोनों धातु रूप पदार्थ हैं इस लिये समान वजन होना चाहिये यदि अपनी पक्ष साधन को वादी यह कहै कि स्वर्ण में परमाणु लोहे से अधिक ठसे हुये हैं तब जब स्वर्ण में अधिक परमाणु हैं इस लिये तोल में भी अधिक है तब तो परमाणु ही किसी तोल वाले हैं वह (परमाणु) जिस पिंड में अधिक होंगे वह पिंड भारी और जिस में कम होंगे वह उस से हलका होगा यहां विचार का स्थल है कि जिस कार्य रूप पिण्ड में कारण रूप परमाणु तोल वाले हैं उस के समुदाय से वजन होता है तब आकर्षण कार्य को कारण बताना कितना भ्रम जनक है। वज़न तो कारण रूप परमाणुओं ने भारी किया, वह आकर्षण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने क्या किया ? जिस को कि मन गढ़न्त संकल्प रच कर लोकों को सशंकित कर दिया इस से यह हेतु भ्रांति जनक है ।

नं० २४ का विवेचन

आकर्षण शक्ति सब जगह एक सी नहीं होती ।

शङ्का—एक सी न होने का कारण बिना माने एक सी नहीं होती यह कहना नहीं बनता है वादियों ने जो कारण माने हैं वह ठीक नहीं हैं एक तो केन्द्र से जितनी दूर हो उतनी ही आकर्षण शक्ति बढ़ती जाती है, सो यह ठीक नहीं क्यों कि केन्द्र से पर्वत दूर है, पृथ्वी की परिधि पास है, इस कारण पृथ्वी के पर्वत पर पदार्थों की तोल अधिक होनी चाहिये सो पर्वत परतोल पृथ्वी से देखो नं० २६ इस कारण आकर्षण शक्ति दूरी पर कम हुई ।

दूसरे इस से विरुद्ध केन्द्र से जितनी दूर हो आकर्षण उतनी ही घटती जाती है जैसे उत्तरी दक्षिणी ध्रुवों पर वा केन्द्र के पास ज्यों २ पदार्थ जायगा त्यों त्यों वजन घटता जायगा देखो नं० ३२ । यह कहना छल नहीं तो छल किस को कहते हैं ? और यही वार्ता स्ववचन घातक है क्योंकि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकर्षण शक्ति जहां रहती हुई अपने सर्व तरफ अपने बल से पदार्थों को गुरुत्व करती मानी है तब केन्द्र में रहती हुई में तो अधिक शक्ति होने से अधिक तोल होनी चाहिये सो केन्द्र के पास पदार्थ में वजन नहीं रहता माना है। देखो नं० ७८। कहने का कुछ ठिकाना नहीं, कहीं आकर्षण शक्ति केन्द्र के पास को भारी लिखा है, कहीं हल्का लिखा है। कहीं वायु ज्यों ज्यों ऊपर को जाती है त्यों त्यों हल्की हो जाती है। आकर्षण का नियम था कि दूरी पर पदार्थ भारी होता है उस को तोड़ कर कह दिया था कि ज्यों ज्यों हवा आकर्षण से दूर जायगी त्यों त्यों वजन में हल्की हो जायगी जैसे पदार्थ जल आदि हैं तैसे पवन भी वजनदार मानी हुई पर भी और पदार्थों भिन्न से मानली ऐसे आकर्षण शक्ति सब जगह एक सी न कहना जहां जैसे देखना वहां वैसे कह देना पक्ष के दोषों को न देखना, जैसे मन गढ़न्त संकल्पों से दोष दूर करने से असत्यता प्रगट हो ही जाती है-यह कथन प्रलाप मात्र है, इससे भ्रान्ति रूप है।

नं २५ का विवेचन

हर एक वस्तु हलकी हो या भारी यदि वह वहाँ रहित नली में हो तो गिरने में बराबर समय लगता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शङ्का—जिस नली में हवा न हो उसमें हलकी एक छटङ्की वा एक मनोटा एक सैकिंड में १५ फीट समान काल में गिर कर पृथ्वी पर आजायेंगे यह कितना स्वदचन घातक है। नं० २० में कहते हैं कि दूरी पर आकर्षण शक्ति बडे पिण्ड के योग होने से गुणन रूप बढ़ती है। भला जब एक बडे पिण्ड मनोटे का संयोग पृथ्वी से हुआ तो आकर्षण शक्ति गुणनफल रूप से अधिक बड़ी मनोटे को जल्द क्यों नहीं खींचती और छटङ्की को समान काल में क्यों खींचती है? वह तो छोटी होने से बहुत कम शक्ति गुणनफल से धरती है दूसरे कोई वायु रोकने वाली किसी को न रही तब समान काल में पृथ्वी पर आना कहना आकर्षण का अभाव दिखाते हैं तब स्वसिद्धान्त घातक क्यों नहीं है ही। यातो पिंड में आकर्षण शक्ति का अभाव कहो वा ऊपर से छोटे वा हलके वा बडे भारी सम काल में पृथ्वी पर गिरते मत कहो दोनों का कहना परस्पर वाधित है।

नं० २६ का विवेचन

पृथ्वी के पास आकर्षण शक्ति अधिक होने से जो पिंड पास का होता है उसको थोड़े काल में अपनी ओर खींच लेती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शङ्का—चन्द्रमा की दूरी जो वादी ने २४०००० मील मानी है उतनी दूरी पर पिंड होने से एक सेंकिंड की जगह एक मिनट खींचने में लग जायगी ऐसी आकर्षण पृथ्वी पास में अधिक और दूरी में कम हो जाती है। यह शङ्का स्थान है क्योंकि वादी ने नं० ४० में स्वीकार किया है कि चन्द्रमा पहिले पृथ्वी के संलग्न था अब दूर हो गया इससे आकर्षण शक्ति का कहना कि दूरी से घटती है और पास में गुणन रूप अधिक होती है यह बाधित होता है क्योंकि चन्द्र पिंड पहले पृथ्वी के पास था जब पृथिवी उसको अधिक शक्ति से खींचती थी फिर चन्द्रमा दूर कैसे हो सकता है यदि वादी कहै कि और की शक्ति से सो कोई शक्ति लिखी नहीं इसलिये शङ्का का स्थान क्यों न हो ? अवश्य है। यदि यह कहैं कि चन्द्रमा के सर्व ओर अनेक पिंड हैं उनमें से किसी एक पिंड की आकर्षण शक्ति चन्द्रमा को पृथिवी से दूर करती होगी यह कहना उक्त हेतु में बाधित है वा आकर्षण की मूल वार्ता ही को नष्ट करता है क्योंकि पिंड के पास में शक्ति गुण रूप बढ़ती और दूरी में उससे विरुद्ध रूप घटती मानी है सो पृथिवी से चन्द्रमा निकट २४०००० मील माना है शेष पिण्ड सूर्यादि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्व ही बहुत दूर माने हैं उनकी शक्ति गणित किये इतनी नहीं जितनी पृथिवी की है इस से यह कहना कि चन्द्रमा पहले संलग्न था अब दूर होता जाता है महा शङ्का का स्थान होने से भ्रान्ति रूप है।

नम्बर२७ का विवेचन।

पृथ्वी घूम की सतह ६६॥ डिगरी का कोण बनाती है उत्तरायण दक्षिणायन २३॥ डिगरी से अधिक नहीं घूमती।

शङ्का—वादी भू मध्य रेखा लङ्का वा उज्जैनी पर मानते हुये सङ्कल्प करते हैं कि सूर्य दक्षिणायण लंका से २३॥ डिगरी तक जाता है जाकर लौट आता है ऐसे ही २३॥ डिगरी उत्तरायण को लौट आता मालूम होता है उस की छाया लंका वा उज्जैनी से २३॥ डिगरी तक के देशों में उत्तरायण दक्षिणायण होती रहती है। जब ऐसा निश्चित है और सूर्य को स्थिर पृथिवी को घूमती मानते हो तो पृथिवी को उत्तरायण दक्षिणायण २३॥, २३॥ डिगरी से अधिक इधर उधर नहीं जाती तब गोल पृथिवी में सब ओर सूर्य की किरण वा प्रकाश २४ घन्टे से कम पड़ना चाहिये किसी स्थान में पूरे २४ घन्टे का प्रकाश न होना चाहिये क्यों कि पृथ्वी गोल है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वादी—अपनी पक्ष पुष्ट करने को कहै कि पृथ्वी गोले के आकार नहीं है किन्तु दोनों तरफ नारङ्गी के आकार है सो यह कहना तो केवल अपने सिर चढे दोषों को दूर करने को है। जब पृथ्वी का व्यास पूर्व पश्चिम ७८२६ मील माना है उस में तेरह २ मील दोनों तरफ घटने से पृथ्वी का व्यास ६१० वां भाग गुलाई में कमती होने से उस में (गुलाई में) वे मालूम चपटी होने पर गणित से २४ घन्टे तक किरण नहीं पड़ सकती।

उदाहरण जैसे एक कागज का गोला ६१० कागज मिल कर बनाया जाय और उस में से एक कागज दक्षिण उत्तर से निकाल लिया जाय तो गोले में कुछ एक कागज की गुलाई घटने से ऐसी न हो जायगी जो वहां २४ घन्टे तक सूर्य का प्रकाश दीखता रहे और पृथ्वी की गुलाई की ऊंचाई से अंधेरा न हो तिस पर भी पोलों में पानी या बर्फ या पृथिवी होने से निचाई न रह कर गोल ही होती है जो सूर्य के प्रकाश को (पृथिवी के गोले पर छाया को) पड़ने ही न दे अवश्य पृथिवी की गुलाई की छाया सर्वत्र पड़ेगी इस कथन से एक स्थान पर २४ घन्टे तक दीखता रहे पृथिवी को गोल और नाम मात्र चपटी को अधिक चपटी दिखा कर और यंत्र वा नक़शों द्वारा घूमती दिखा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर पक्ष का साधन करना और तिस पर भी यंत्र मेंधरती के २३॥ डिगरी उत्तरायण दक्षिणायण के लेख को गुप्त करना कैसे सम्भव है ? केवल भ्रम जाल ही है। जब उत्तरायण दक्षिणायण सदैव सूर्य की प्रदक्षिण में २३॥, २३॥ डिगरी से अधिक न हटेगी तो कदापि २४ घन्टे सूर्य का प्रकाश इस गोल धरती पर एक स्थान पर नहीं हो सकता धरती के घूमने का यंत्र जो वादियों ने दिखाया है उस में दक्षिणायण उत्तरायण २३॥ डिगरी का लेख गुप्त है इस कारण उक्त हेतु भ्रम रूप है।

किञ्च—सूर्य के सामने धरती दक्षिणायन उत्तरायन २३॥, २३॥ डिगरी से अधिक इधर उधर नहीं घूमती। यदि ऐसा है तो धरती की गोलाई की ऊंचाई भी ऐसा स्थान नहीं दे सकती कि २४ घन्टे सूर्य का प्रकाश किसी स्थान पर हो जाय जिस से ६ महीने की दिन रात्रि कही जाय यह असम्भव है जो धरती टेढ़ी घुमती २ किसी स्थान पर सूर्य के सम्मुख आ कर प्रकाशवान ६ महीने तक रहे और अपनी गोलाई की ऊंचाई की छाया वहां न गेरे इस का यंत्र दिखाया जाता है वह बिना डिगरी से धरती को खुली हुई दिखा कर लोगों के चित्त को आकर्षित कर देना है यदि सूर्य के सम्मुख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धरती के दोनों किनारे २३॥, २३॥ डिगरी पर बांध दिये जांय तब तो २४ घन्टे या ६ महीने का दिन होना गोलाकार धरती में असम्भव ही दीख पड़े क्योंकि गोलाकार में सूर्य का प्रकाश सर्वत्र धरती की ऊंचाई की आड़ से नहीं हो सकता चाहे धरती सीधी घूमो चाहे तिरछी घूमो। इस से २४ घंटे तक सूर्य का प्रकाश किसी स्थान में गोलाकार धरती पर असम्भव है यदि धरती को समधरातल स्थिर माना जाय तो बिना आड़ चलते हुये सूर्य का प्रकाश किसी स्थान पर अधिक घंटों तक रहना सम्भव हो सकता है। यह सब मन गढ़न्त अपनी पक्ष साधन को ७८२६ मील के व्यास वाली १३, १३ मील उत्तर दक्षिण में न्यून मान नारंगी के समान चपटी और ६६॥ डिगरी का कोण बनाती हुई तिरछी घूमती कहना-विचार करने से भ्राँति रूप है।

नं०२८ का विवेचन।

किसी स्थान पर (दक्षिणी उत्तरी पोलों पर) ६ महीने का दिन ६ महीने की रात्रि होती है।

शङ्का—यह ठीक नहीं है क्योंकि पृथ्वी को नारंगी के सदृश गोल बताने में हेतु नं० ४ में कहा है कि सूर्य की ओर सीधे चले जाने से वहां के वहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ही आ जाते हैं इस कारण पृथ्वी गोल है यदि यही हेतु नं० ११ में माना जाय तो पृथ्वी गोले के आकार न ठहर कर थाली के आकार ठहरती है क्योंकि वहां के निवासियों को सूर्य निरन्तर दीख पड़ता है इस कारण या तो नं० ४ का हेतु वाधित है या नं० ११ का। कौनसा प्रमाण किया जाय।

यदि वादी की मानी पृथ्वी गोलाकार-गोलाकार ही मान ली जाय तब भी गोलाकार में सर्व पृथ्वी के स्थान में सूर्य का प्रकाश पृथ्वी गोल की ऊंचाई की आड़ में हो नहीं सकता जो न० २ में वादी के स्वीकार है कि पृथ्वी की आड़ से जहाज का तल भाग नहीं दीखता किन्तु मस्तूल का शिरोभाग दीखता है। तब गोलाकार पृथ्वी में कोई स्थान की संभावना दृष्टि नहीं पड़ती जिस से २४ घंटे वा ६ महीने तक दिन रहै क्योंकि जहां पृथ्वी गोल की आड़ की ऊंचाई से सूर्य का प्रकाश न पहुंचेगा वहां पर तो अवश्य थोड़ी देर को रात्रि हो ही जायगी चाहे पृथ्वी तिरछी घूमो चाहै सीधी घूमो—यदि वादी कहै कि दक्षिणी उत्तरी पोलें १३ मील चपटी होती हैं इस कारण वहां सूर्य का प्रकाश पहुंच जायगा। यह पृथिवी पर चपटापन कहना असंभव है जो कि दिखा चुके हैं कि समुद्र का पानी गोलाकार पृथिवी पर समस्थल (Level)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहता है यह वादी के नं० १६ में स्वीकृत है तब १३ मील उत्तरी दक्षिणी पोलों का गढ़ा पानी से भर कर पृथ्वी को गोल क्यों न करें—क्या पानी भी अपने प्राकृतिक स्वभाव को छोड़ देगा ? यह असंभव है। इस कारण गोलाकार छोटी पृथ्वी मान कर पोलों में ६ महीने का दिन कहना महा शङ्का का स्थान है यदि पृथ्वी को नारंगीके समान गोल न मान कर समस्थल समधरातल स्थिर मानी जाय और उसके ऊपर सूर्य घूमता माना जाय तो संभव है कि किसी स्थान में बिना किसी की आड़ सूर्य ६ महीने तक प्रकाश करै सो वादी ने माना नहीं है इस से पृथ्वी घूमती और सूर्य स्थिर मान कर कहीं ६ महीने का दिन और कहीं ६ महीने की रात्रि मानना महा शङ्का का स्थान नहीं किंतु असंभव है।

किञ्च—पृथ्वी का व्यास ७८२६ मील माना है उस के देखे पोल १३ मील पृथिवी के व्यास से $\frac{१}{६०५}$ भाग हुआ तब किञ्चित् न्यून हुई जैसे ६० पत्र की पुस्तक गोलाकार में १ पत्र हटाने से किञ्चित् न्यून हुई उस के नारंगी के आकार बताना भ्रांति रूप है जिसे पोलों में भी बरफ भरा बताना फिर पृथिवी गोलाकार क्यों न हुई और गोलाकार हुई तो सूर्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के प्रकाश पृथिवी की गुलाई की आड़ को छोड़ कर कैसे ६ महीना किसी स्थान में प्रकाश कर सक्ता है ? ताते उक्त हेतु भ्रांति रूप है ।।

नम्बर २९ का विवेचन।

ईसामसीह के जन्म समय से पहले वा पीछे पश्चिमी विद्वान पृथिवी को स्थिर मानते थे।

ईस्वी सन् १७० के लगभग मिस्टर टौलमी (Mr. Ptolamy) ने बड़ी विद्वानता के साथ एक टौलमेइक (Ptlamaic) सिद्धान्त की रचना कर के अनेक युक्त वाद से पृथिवी को स्थिर लिखा जिस को कि सन् १४०० ईस्वी तक माना और अब भी अनुभव में वही आता है। इस के बाद सन् १४७३ ईस्वी में पश्चिमी विद्वानों ने पृथिवी को गोल और भ्रमण करती और सूर्य को स्थिर माना, उन के पीछे पश्चिमी विद्वान एक विश्वास को छोड़ दूसरे पर आरूढ़ हुए सूर्य को घूमता माना उस के बाद इस को भी छोड़ सूर्य को बडे वेग से आध घन्टे में १०००० मील) चलता माना। ऐसे नवीन २ सङ्कल्पों का अङ्गान कैसे किया जाय और पूर्व जो विद्वानों ने पृथिवी को स्थिर माना था उस पर सहसा कैसे विश्वास विगाड़ा जाय और इस से अधिक पृथिवी को स्थिर प्रतीत करने का और भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह है कि निस्प्रेही ईसामसीह जो एक सूर्य के समान ऐसा विद्वान हुआ है जिस की सर्व पश्चिमी विद्वान सेवा करते थे और उस के वाक्य को अपना धर्म समझते थे भला उन ईसामसीह के वाक्यों से सत्यार्थ पृथिवी अचला को चला कैसे इन नवीन मन गढ़न्त पश्चिमी विद्वान गिने जाते हैं जिन के परस्पर अनेक लेख विरोध लिये हैं जो भूगोल भ्रमण भ्रान्ति में दिखाये गये इन नवीन आधुनिक विद्यावानों के बचन कैसे स्वीकार किये जांय! जिन की विद्या ईसामसीह सूर्य के सम्मुख पटवीजना समान भी नहीं इस कारण नवीनों की क्षणस्थाई वार्त्ताओं को छोड़ यही निर्धार होता है कि पृथिवी सर्वतो भाव से अचला है भ्रमण नहीं करती और भारतवर्षियों के बहुमत अनुसार भी पृथ्वी स्थिर है और दूरदर्शी यंत्र वा फोटू के द्वारा भी स्थिर ही ग्रहण होती है क्योंकि एक १ मिनट में १७ मील घूमती है और १११० मील दौड़ती पर दुर्बीन और फोटूग्राफ अपना कुछ काम नहीं कर सकते किन्तु स्थिर पर ही इनका कार्य हो सकता है इस कारण पृथ्वी का स्थिर होना ही निश्शङ्क है !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० ३० का विवेचन

पानी समस्थल रहता है किंतु ऊंचा नीचा होना आकर्षण के कारण है।

भावार्थ—चन्द्रमा सूर्य की आकर्षण से समुद्र में ज्वार भाटा होते हैं। इसी कारण से जल में ऊंचा नीचापन अधिक होता है।

शङ्का—यदि चन्द्रमा सूर्य की आकर्षण से जल में ऊंचा नीचा होता है—नहीं तो समस्थल रहता है तब सैंकड़ों गढ़ों में जहां जल भरा है वहाँ सूर्य और चन्द्रमा की आकर्षण शक्ति मौजूद है वह शक्ति महा बलवान जो समुद्र के जल को ऊंचा नीचा कर कर के ज्वारभाटा (जो बड़ी ऊंचीनीची लहरें हैं उनको) उत्पन्न कर देती है तब विचारे छोटे छोटे गढे जिनमें हवा का प्रवेश नहीं पहुंचता जिस को कोई बाधा नहीं ऐसे छोटे छोटे गढे झीलों में वह सूर्य चन्द्र की आकर्षण शक्ति क्यो नहीं लहरें करती यह हेतु प्रत्यक्ष नेत्रगोचर सब को दृष्टि पड़ता है कि पानी में लहरों के उठने का कारण हवा है—हवा जहां जहां ज्यों ज्यों तेज चलती है वहाँ वहां छोटे बडे गढ़ों में वा झीलों में वा सरोवरों में लहरें अधिक उठती हैं और जहाँ कम है वहां कम उठती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं और जहां नहीं हैं वहां लहर नहीं होती। यह कारण रूप जो हवा जोकि अन्वयव्यतिरेक से कारण कार्य भाव स्पष्ट दिखा रही है इस को न मान एक आकर्षण जो अनियत स्वभाव को धरने वाली उस की आड़ लेकर पक्ष के दोष को न देखना केवल पक्षपात है इस कारण जल में ऊंचा नीचा पना आकर्षण से मानना भ्रम है इसमें कारण वायु है।

किञ्च—और यह भी विचार का स्थल है कि जहां हवा नहीं चलती है वहां पानी बिना लहर के अपने स्वभाव से सम रूप रहता है तुम ने भी स्वीकार किया है कि स्वभाव से सम स्थल रहता है तब प्रत्यक्ष वायु ते लहर उठती सर्व जगह देखते हुए भी एक आकर्षण परोक्ष हेतु से कहना कि चंद्र सूर्य की आकर्षण से समुद्र में बड़ी बड़ी लहर उठती हैं बाधित है। क्योंकि-यदि आकर्षण से लहरों का उठना होता तो सदैव बड़ी बड़ी लहरें चन्द्र सूर्य से सर्वत्र गढ़े सरोवर झीलों में भी उठती रहती क्योंकि जिन लहरों के उठने का कारण जो सूर्य चन्द्र की आकर्षण शक्ति जो उन गढे झील सरोवरों के ऊपर रहती हैं। जिस कारण के होते कार्य का न होना। इस से मालूम होता है कि वह कारण ही नहीं है क्योंकि अन्वयव्वतिरेक(जिसके होते हो न होते न हो) ही लोक में कारण माना जाता है। इस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बातसे निश्चित होता है जलकी लहर उठने में कारण वायु है जिस वायु के होने लहर उठती है नहीं होते नहीं उठती यह सर्वत्र प्रत्यक्ष देखा जाता है इस लिये जल में लहर उठने में कारण आकर्षण को बताना महा शङ्का का स्थान है।

नं० ३१ का विवेचन।

वायु मण्डल चारों तरफ कोई ५० मील, कोई २०० मील तक ऊंचा बताते हैं परन्तु ५ मील ऊपर जिंदगी नहीं रहती ।

शङ्का—वायु मण्डल का लेख नं० १२ में लिख चुके हैं वहां से देखो। और वायु मण्डल में ५ मील से ऊपर जिन्दगी कायम नहीं रहती सो वायु मण्डल जो कि पृथ्वी का एक अङ्ग वा घेरा माना है और कम से कम ५० मील से २०० मील तक के पृथिवी से ऊपर वाले पदार्थों को पृथिवी के साथ रखता है ऐसे स्वभाव वाला वायु मण्डल जो अद्भुत पदार्थ है उस को एक हवा का कार्य दिखा कर ५ मील से ऊपर हवा प्राण हरने वाली होती है ऐसे हवा रूप के स्वभाव को धरने वाली वायु २०० मील आकाश में तोप के गोलाओं को कैसे पूर्व को ले जा सकती है ? इस को पवन रूप बनाने में फिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृथिवी का अङ्ग बनाना बाधित है जिस को नं० १२ में दिखा चुके हैं। यदि वायुमण्डल पृथिवी ही का अङ्ग है तो उस का बल वा लक्षण पृथिवी के पदार्थों में कहना था उस में यह लिखना कि ५ मील से अधिक ऊपर प्राणों को वियोग करती है यह तो उस का कथन असंबध है क्योंकि उस का कार्य पृथ्वी के आकाशी पदार्थों को साथ रखने का था तब उस के लब को विशेष दिखाना था सो दिखाया नहीं इस कारण ५ मील ऊपर जीवित नहीं रहता यह कथन जिस का कुछ पता ही नहीं वह वायुमण्डल वायु रूप ही न पृथ्वी का अङ्ग ही तब एक पक्ष साधन को व्यर्थ संकल्प मात्र है जिस का कथन असंबंध है। जिस कारण वादी ने वायु मंडल का जो संकल्प किया उस का कुछ कथन न किया। किया कहां से जाय जब कोई वायुमंडल आकाशी पदार्थों को चलाने वाला हो। केवल पृथिवी के घूमने में ये संकल्प मात्र हेतु बना कर पृथिवी अचला को सचलो बनाना है इस कारण यह हेतु महा शङ्का का स्थान है।

नं ३२ का विवेचन

पदार्थ में गुरुत्व धर्म नहीं है आकर्षण से होता है।

शङ्का—एक परमाणू में गुरुत्व धर्म है क्योंकि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जितने परमाणू अधिक होंगे उतना ही गुरुत्वपना अधिक माना गया है। जैसे लोहे के पिंड से सुवर्ण के पिंड में, जब एक परमाणू में गुरुत्व हुआ उसमें कारण दूसरे परमाणू की आकर्षण शक्ति है, तब दूसरे परमाणू में गुरुत्व तीसरे से-तीसरे में चौथे से, ऐसे अनवस्था आई। यदि परस्पर व्यवस्था से अनवस्था न माने तो परस्परश्रय दूषण आया। यदि इसको भी न माने तो परमाणू में द्विणिक परमाणू की अधिक शक्ति आकर्षण की से द्विगुण होनी चाहिये फिर त्रिगुण स्कंध आदि असंख्य परमाणू के स्कंधों में आकर्षण शक्ति असंख्य गुणित होने पर उसमें सम्बन्ध रूप परमाणू में असंख्य गुणित गुरुत्व होना चाहिये तब सर्व ही परमाणू अधिक गुरुत्व रूप होने चाहिये। सो होते नहीं हैं। यदि हो जाते मानिये तो सर्व परमाणू वा द्विणिक वा तीन चार आदिके स्कन्ध अतुल गुरुत्व समान होने चाहिये तैसे ही शक्ति आदिक होनी चाहिये। तब आकर्षण शक्ति बड़ी पृथ्वी में अधिक और छोटे चन्द्रमा में कम होती है यह बाधा आवेगी। बड़ा पदार्थ वही जिसमें परमाणू अधिक हों उसमें आकर्षण भी अधिक मानी तब गुरुत्व से आकर्षण हुई। यहां यह सिद्धन्त हुआ कि आकर्षण से गुरुत्व, और गुरुत्व से आकर्षण अधिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है इस लिये दोनों में कारण कार्यपना हुआ—तब यह कहना कि आकर्षण से गुरुत्व होता है—बाधित हुआ।

भावार्थ—वादी आकर्षण को कारण रूप होने से पदार्थ का स्वभाव मानता है और गुरुत्व को आकर्षण जन्य (विभाव) मानता है यह बनता नहीं है। या तो दोनों को स्वभाव मानना चाहिये या विभाव। तब स्ववचन घातिक न हो कर पक्ष साधन कर सक्ता है अन्यथा स्ववचन घातक ही होता है क्योंकि पदार्थ में आकर्षण गुण और गुरुत्व गुण समान है।

किञ्च—वादियों ने आकर्षण शक्ति का प्रभाव केन्द्र स्थान पर अधिक माना है तब पृथिवी के केन्द्र पर पदार्थ में गुरुत्व अधिक होना चाहिये सो नं० ७८ में माना नहीं इसके विपरीत माना है। केन्द्र पर वज़न नहीं रहता है अथवा दूरी पर भारी हो जाता है यह माना है। यदि केन्द्र पर शक्ति न्यून होती तो वहां पदार्थ हलका और दूरी पर भारी मानना चाहिये था, सो यह नहीं माना—पहाड़ दूरी पर होने से पहाड़ पर अधिक भारी मानना चाहिये सो भी विपरीत माना है।

भावार्थ—पृथिवी से पहाड़ पर पदार्थ हलका हो जाता है वा इङ्गलैण्ड से हिन्दुस्तान ऊंची जमह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर पदार्थ हल्का हो जाता है कारण इंगलैण्ड नीचा है ऐसा माना है पूर्वा पर विरोध रूप मानने की कुछ शङ्का नहीं की है, इस से यही प्रतीति होता है कि मनगढ़न्त सङ्कल्प कर के जैसे कुछ अल्प ज्ञान में आया सो लिख दिया और अपनी पक्ष साधन को आकर्षण शक्ति का सङ्कल्प कर चाहे जैसे बालकों को समझा दिया।

किञ्च—जैसे पृथ्वी, जल अग्नि, ये भौतिक पदार्थ हैं, वैसे ही पवन भी है जब केन्द्र की दूरी पर और पदार्थ पृथिवी आदि भारी होते हैं वैसे पवन अधिक दूरी पर होने से क्यों हलकी हो जाती है क्या वह भौतिक पदार्थ नहीं है उस में नीचे २ भारी होती है ऊपर ऊपर हलकी होती जाती है वहां आकर्षण शक्ति कहां जाती रही ? तुम ने गुरुत्व धर्म तो माना ही नहीं है वह आकर्षण से होता है, तब आकर्षण के निकट भारी दूरी पर हलका हो जाता है यह क्या स्वीकृत किया जो केन्द्र के पास हलका दूरी पर भारी हो जाना क्या स्ववचन घातक नहीं होता ? किन्तु होता ही है। इस कारण वादियों की मानी हुई आकर्षण शक्ति एक संकल्प रूप मन गढ़न्त है कोई वार्ता इस की स्थिर रूप नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किञ्च—कहीं तो आकर्षण से गुरुत्व माना है कहीं गुरुत्व से आकर्षण होती मानी है कहीं गुरुत्व को ही आकर्षण शक्ति मानी है देखो नं० २३, कुछ पूर्वा पर विचार नहीं है जैसा कुछ संकल्प में आया वैसा लिख दिया है।

किञ्च—वादी पदार्थमें गुरुत्व गुण नहीं मानते यह बाधित है नाप के प्रमान से सब से छोटा परमाणू है उस से दूना द्विणिक आदि मील तक गुणे गुणे हैं। भावार्थ—बडे बडे हैं। परमाणू एक सब के नाप करने का अंश है। तब जो पदार्थ परमाणुओं के पुंज हैं उन में गणित किये हुये ही परमाणू हैं तब एक पदार्थ खण्ड एक इंच का लम्बा चौड़ा ऊंचा घन रूप लोहे का वा सुवर्ण का है उस में परमाणू गिनती के समान हैं क्योंकि दो परमाणू का द्विणिक और कितने ही द्विणिकों का जब और कितने ही जवों का इंच, तब एक इंच का घन पदार्थ में बराबर गिनती के परमाणू होंयगे। तब सर्व लोहे वा सूवर्ण के खण्ड तोल में एक होने चाहिये क्योंकि गुरुत्व लघुत्व तो पदार्थ में कुछ है ही नहीं। फिर क्यों सुवर्ण का पिण्ड एक इंच का भारी। और लोहे का हल्का—इस से स्पष्ट मालूम होता है कि पदार्थ में लघुत्व गुरुत्व गुण हैं। यदि यहां यह कहै कि सुवर्ण में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमाणू का समूह अधिक है इस लिये भारी है फिर भी गुरुत्व धर्म परमाणूओं के अधिक समूह से हुआ तो भी परमाणू में गुरुत्व धर्म हुआ । जिस के अधिक होने से सुवर्ण भारी हुआ, जब कारण रूप जो परमाणू जिन में गुरुत्व गुण को मानने वाला उस के कार्य रूप पदार्थ में उस गुरुत्व धर्म को न माने वह कैसे परिक्षा वादियों के सन्मुख वार्ता करने योग्य है । फिर वादियों ने जगह जगह इस गुरुत्व धर्म को पदार्थ का माना है जो गुरुत्व धर्म न माना होता तो यह आकर्षण गुण पृथ्वी घूमने पर धरे पदार्थों को नहीं गिरने देता यह संकल्प काहे को करते जब पदार्थों में गुरुत्व धर्म से गिरने की सम्भावना हुई तब ही तो आकर्षण को संकल्प किया और पृथ्वी गुरुत्व धर्म से अधोःको पतित हो जाने के भय से उन के घूमने का हेतु आकर्षण को ढूंढा या गुरुत्व धर्म कर तारे आदि सब पृथिवियों को नीचे पतित न होने के भय से वा स्थिर रहने के लिये ही सूर्य आदि पृथिवीयों की आकर्षण से युक्ति किया यदि गुरुत्व धर्म पदार्थ में न होता तो आकर्षण का संकल्प क्यों किया जाता और गुरुत्व जो संसार भर में प्रत्यक्ष गुण अनुभव गोचर है उस का लोप क्यों किया जाता यह केवल अपनी पक्ष के साधन को पक्षपात है—तिस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर भी यह कहना कि पदार्थ में गुरुत्व गुण नहीं है किन्तु आकर्षण से होता है भला क्या यह परस्पराश्रय दोष नहीं है-है ही। इस महा दोष के आने पर भी पदार्थ में गुरुत्त धर्म न बताना हास्य का ठिकाना है वा नहीं ?

भावार्थ-जिस गुरूत्व धर्म के भय से तो आकर्षण सङ्कल्प किया और आकर्षण से पदार्थ में गुरुत्व धर्म होना ठहराया यह ही परस्पररश्रय दोष है अथवा अनवस्था दोषभी है यही महा दोषोंमें गिने जाते हैं वह दोनों इस कथन में अवस्थित हैं इन दोषों के आने से यही मानना योग्य है कि पदार्थ में गुरुत्व गुण अवश्य है और उस ही गुरुत्व धर्म से वृक्ष के ऊपर जो फल वह उस से नीचे पृथ्वी पर पड़ा वह अपने गुरुत्व धर्म से ही पड़ा है। सर न्यूटन ने पृथिवी में एक आकर्षण गुण सङ्कल्प किया उस से पड़ा कहना महा शङ्का का स्थान है जो ऊपर दिखा चुके हैं और नं० २५ में एक नली से वायु निकलने का दृष्टान्त दिखा कर लिखा कि पदार्थ में गुरुत्व गुण नहीं है सो दृष्टांत से भी गुरुत्व धर्म की प्रतीति होती है क्यों कि पदार्थ ऊपर से दो गिरे गुरुत्व धर्म से एक लोहे का खण्ड, एक व्रण उस को पृथ्वी पर आने में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाधिक हुई वायु, उस ने तिनके को धीमे २ पृथ्वी पर देर से आने दिया जब वायु आदि वहां से निकास दी जाय तो वाधिक के दूर होने से तिनका वा लोहे का खण्ड समान काल में नीचे पड़ै तो त्रण भी जो गुरुत्व धर्म वाला उसके पड़नेसे गुरुत्व में क्या हानि आई, जो कह दियाकि त्रणमें गुरुत्व धर्म ही नहीं है। यदि त्रण वा लोहे के पिण्ड में गुरुत्व धर्म नहीं है तो गुरुत्व धर्म करने वाला जो पृथ्वी का आकर्षण गुण उस ने त्रण को पहले क्यों नहीं खींचा छोटे पदार्थ पर आकर्षण शक्ति अधिक खींचने वाली होती है जैसे उदाहरण में चुम्बक छोटे लोहे को जल्द खींचता है इस कारण नली में से वायु निकालने पर समान काल में पतित कहना गुरुत्व धर्म में वाधा का कारण ही है। और दूसरी यह वाधा जब हवा जिस नली से खींचली जायगी और उस में हवा खींचने के बाद एक लोहे का खंड वा त्रण गेरा जायगा तो उस के साथ नली में हवा घुस जायगी इस कारण नलीका दृष्टांत कहना पक्ष साधन के लिये केवल भ्रमोत्पादिक है। अथवा नं० २० में स्वीकृत है कि जितना भारी का संयोग होगा उतना ही गुणनफल से आकर्षण शक्ति में बल बढ़ जायगा तब त्रण से लोहे के भारी पिंड में पृथ्वी संयोग से आकर्षण शक्ति बढ़ गई तो लोहे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का पिंड पृथ्वी पर पहले आना चाहिये समान काल क्यों ? और पदार्थ में गुरुत्वता नहीं ? इस के पुष्टताके कारण और भी कोई यंत्रादिककी कल्पना करते हैं वह ठीक नहीं। उस में विचार किये कारणांतर उपस्थित होते हैं पदार्थ में प्रत्यक्ष गुरुत्व धर्म दृष्टि पड़ता है जिस से अनेक व्यवहार प्रचलित हैं इसका न मानना वह केवल व्यवहारका लोप करना है प्रत्यक्ष बाधित है और गुरुत्व धर्म ही पदार्थ में नहीं तब यह कैसे कहा कि वायु नीचे भारी और ऊपर हलकी होती जाती है। क्या वायु पदार्थ नहीं है ? जो पदार्थ नहीं तो नीचे भारी ऊपर हलकी क्यों कही ? यदि पदार्थ है तो आकर्षण जो केन्द्र में मानी गई है उस वायु को ऊपर जाने से गुरुत्व वाली क्यों न करे क्यों कि उन का सिद्धान्त है कि केन्द्र के पास वजन नहीं रहता केन्द्र से जितनी २ दूर पदार्थ होगा उतना उतना भारी होता जायगा और पवन भी पदार्थ है वह वायु दूर जाने पर क्यों हलकी होती है ऐसा पूर्वा पर विरोध रूप कथन पर किस तरह विश्वास किया जाय ? इस लिये पदार्थों में गुरुत्व धर्म अवश्य है। यदि कोई कहै कि वायु पर आकर्षण शक्ति नहीं काम करती है पृथ्वी पर करती है क्यों कि अनेक पदार्थ अनेक गुणों के धारक होते हैं यह माना जो आकर्षण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शक्ति उस पर असर नहीं कर सक्ती वह ऐसी ही जाति का पदार्थ है तो फिर हवा में गुरुत्व लघुत्व कैसे कहा ? इस से स्पष्ट होता है कि आकर्षण से गुरुत्व लघुत्व नहीं होता पदार्थ का गुण ही भारी वा हलके रूप है।

किञ्च—पदार्थ में गुरुत्व धर्म नहीं है आकर्षण से हो जाता है।

आकर्षण के मानने वाले केन्द्र में आकर्षण शक्ति का सम्बन्ध मानते हैं वह तीन प्रकार से बनता है।

(१) वह शक्ति पदार्थ के केन्द्र में है वा

(२) पदार्थ के परिधि में है वा

(३) केन्द्र से परिधि तक परमाणुओं के योग में है चौथी गति नहीं।

(१) यदि केन्द्र में है तो उस से अन्तरित जो पदार्थ जिन में गुरुत्व माना जाय उन पर बल कर नहीं सक्ती।

(२) यदि परिधि में है तो शक्ति स्थान जो केन्द्र में मानी गई उस से दूरी पर वह परिधि में बल नहीं दे सकती।

(३) इस कारण यह आया कि केन्द्र के योग में जो परमाणुओं का योग है उस में शक्ति है, यह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानो परन्तु इस से शङ्का यह होती है कि केन्द्र से दक्षिणी ध्रुव तक परमाणुओं का योग थोड़ा है इस कारण पदार्थ में भारा पन कम होता है इस से अधिक अमरीका हिन्दुस्तान आदि में केन्द्र से परमाणुओं का योग अधिक, इस से दक्षिणी ध्रुव के भारा पन से अधिक भारापन होता है। इस से भी जो ऊंचे २ पहाड़ जिन से केन्द्र के स्थान से परमाणुओं का योग अधिक, तब वहां भारा पन (पदार्थ में) अधिक होना चाहिये और वहां माना कम है इस कारण यह हेतु वाधित है कि केन्द्र से आकर्षण शक्ति का सम्बन्ध है और आकर्षण से गुरुत्व होता है।

किञ्च—आकर्षण शक्ति से पदार्थ में गुरुत्व धर्म मानने वालों से

प्रश्न—पदार्थ मात्र में आकर्षण शक्ति होती है तो सब में बराबर शक्ति होनी चाहिये। सूर्य में अधिक और पृथिवी में थोड़ी क्यों?

उत्तर—सूर्य बड़ा है और भारी है इस से उस में अधिक और पृथिवी हलकी है छोटी है इस से शक्ति थोड़ी है।

प्रश्न—क्या भारी पदार्थ में शक्ति अधिक होती है तो आकर्षण शक्ति में भारापन कारण है?

उत्तर—हाँ यही वार्त्ता ठीक है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न—जब यह कहना कि पदार्थ में गुरुत्व धर्म नहीं, आकर्षण से होता है, तब परस्पराश्रय दोष महा बलवान उपस्थित होता है कि गुरुत्व से आकर्षण शक्ति होती है और आकर्षणसे गुरुत्व होता है तब शङ्काका कारण क्यों नहीं है? है ही।

यदि आकर्षण शक्ति और किसी आकर्षणशक्ति से मानली जाय तो अनवस्था दोष पक्ष का घातक होता है इस कारण यह शङ्का का स्थान है।

इस से यह निरधारित होता है कि पदार्थ में जो गुरुत्व धर्म है वह आकर्षण से नहीं होता-स्वयं है, अधिक क्या लिखा जाय।

बिना संस्थान आकार विशेष के वा गुरुत्व लघुत्व धर्म के पदार्थ में पदार्थत्व ही नहीं रहता इससे कहना कि पदार्थ में गुरुत्व धर्म नहीं है यह बाधित है।

यदि यह कहै कि पदार्थ में गुरत्व धर्म है तो पृथ्वी गुरुत्व धर्म होने से अधो पतित होनी चाहिये सो होती नहीं। यदि इसका विरोधी कारण न होता तो अधो पतित होती। इसके विरोधी कारण वायु अग्नि स्टीम (भाप) गैस आदि है इनसे स्थिर रूप रहती है जैसे वायुयान गैस के योग से गुरुत्व पदार्थ को धारण करता हुआ आकाश में रहता है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वा ताम्र खण्ड (पैसा) फुवारे के जल के योग से स्थान पर रहता है, पतित नहीं होता।

इसी गुरुत्व के भयसे वादी पृथ्वी को भ्रमण करती मानते हैं यह भी ठीक नहीं है क्योंकि बिना वायु के योग धमाले की रैन गुरुत्व वाली आकाश में नहीं रह सकती, वायु के संयोग से आकाश में ऊपर नीचे चलती रहती है इस कारण गुरुत्व के भय से पृथ्वी को आकर्षण शक्ति से घूमती कहना सत्यार्थ नहीं। इसी डर से कोई मतवाले पृथ्वी को सदैव अधो पतित होती कहते हैं वह बिना विचारे है। क्योंकि अधिक गुरुत्व वाले पदार्थ अधिक पतित होंगे और थोडे गुरुत्व वाले थोडे अधो पतित होंगे तब पदार्थ का समागम परस्पर दुष्ट पड़ता है, नष्ट भ्रष्ट हो जायगा, तातै अधो पतित कहने वाले सत्यवादी नहीं, इस कारण पृथ्वी न अधो पतित होती है न घूमती है किंतु अचल है गुरुत्व धर्म वाली होती भी उक्त कारणों से अधो पतित नहीं होती तथा आत्मशक्ति जो प्रकृति धारण करती हुई अधोपतित नहीं होती जैसे जल प्राकृतिक नीचे को ढलता है, अग्नि ऊपर को जाती है, वायु तिर्यग् बहती है इत्यादि प्रकृतिशक्ति प्रत्यक्ष प्रमाण से पदार्थों में प्रमाण भूत है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसी पृथ्वी अचला को चला बनाने के लिये एक आकर्षण शक्ति का संकल्प मन गढ़न्त करना असत्य है पृथ्वी अचला ही है।

नं० ३३ का विवेचन

यूरोप में हौलेंड सब से अधिक चपटा मुल्क है और समुद्र की सतह से नीचा है इस कारण उसकी रक्षा के लिये बांध बंधे हुए हैं यदि बांध न बांधे जाय तो पानी से डूबने की शङ्का है।

शङ्का—यह लिखना बिना स्वसिद्धान्त के विचारे है इस लिये स्ववचन घातक है क्यों कि दक्षिणी उत्तरी पोल १३, १४ मील की चपटी गहराई लिये हैं वहां के देशों में पानी के डूबने का कोई उपाय नहीं इस कारण मालूम होता है कि पोलों में पानी भरा होगा वा उसके पानी के ऊपर बर्फ होगी तब उत्तरी दक्षिणी व्यास ७८०० मील कहना असम्भव है। ७८२६ मील व्यास और पृथ्वी को गोलाकार कहना ही ठीक होता है नारङ्गी के समान गोल कहना इस बार्ता से बाधित होता है तथा हौलेण्ड में पानी की रक्षा के लिये बाँधों का बांधना कहना व्यर्थ है क्योंकि ये परस्पर विरोधी बार्तायें हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थ-हौलेण्ड समुद्र की सतह (जो गोलाकार में है) से नीचा माना है वैसे ही दक्षिणी उत्तरी पोल भी समुद्र वा गोल पृथ्वी की सतह से नीची हैं तब जैसे हौलेण्ड नीचा है वैसे ही पोल भी नीची हैं तब उन पोलों की रक्षा के लिये बंध क्यों न बांधे इस कारण मालूम होता है कि पोलो में निचाई १३ मील की मानी असत्यार्थ है और जब पोलों में जल वा बर्फ वा पृथ्वी मानी जाय तब गोलाकार होने से नारङ्गी के समान दोनों तरफ से चपटी मानना ठीक नहीं है फिर पृथ्वी का दक्षिण उत्तर का व्यास ७८०० मील कैसे हो सकता है? इस कारण हौलेण्ड में पृथिवी का नीचा लिखना वा वहां की रक्षा करने को बांधों का बांधना इन सर्व लेखों से स्वसिद्धान्त (वादी का माना सिद्धांत) ही का गला घुटा जाता है तब ऐसी वार्ताओं का विश्वास कैसे किया जाय और क्यों नहीं शङ्का हो, किंतु ऐसी वार्ताओं से शङ्का होती ही है।

नं० ३४ का विवेचन।

बर्फ पानी से ऊपर रहता है।

शङ्का—यह कहना वादी के बाधित है क्योंकि उसने पृथिवी की दक्षिणी उत्तरी पोलों में का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मङ्गल तारे की उत्तरी दक्षिणी पोलों में वर्फ मानी है तब बर्फ जल से ऊंची होने पर वहां पोल नहीं रहती क्योंकि बर्फ के नीचे पानी है और नं० १५ में देखो पानी सर्व समुद्रों में समधरातल है तब सर्वत्र पृथ्वी पर व्यास ७८२६ मील का होने पर पृथ्वी तोप के गोले के आकार होने योग्य है इस में दक्षिणी उत्तरी पोल बना कर नारंगी के समान कहना महा शङ्का का स्थान है। हां इतना विशेष है कि समुद्र से पृथिवी ऊंची होती है तब वहां का व्यास अधिक तथा जल की सतह से वर्फ ऊपर महा व्यास अधिक की संभावना हो सक्ती है परन्तु व्यास न्यून तो किसी स्थल में वादी के ग्रहण योग्य नहीं क्यों कि समुद्र की सतह सर्वत्र समस्थल मानी है। बर्फ पानी से ऊपर रहना तो सम्भवित है परंतु पृथिवी को नारङ्गी समान दोनों तरफ चपटी मानना महा शङ्का का स्थान है इस लिये पानी से बर्फ ऊपर रहता है इस कथनसे वादीके ही सिद्धाँत का घात होता है।

नं० ३५ का विवेचन

चन्द्रमा पृथिवी के चारों तरफ ऐसे घूमता है जैसे पृथ्वी सूर्य के घूमती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शङ्का—यह भ्रांति है क्यों कि सूर्य तो स्थिर माना है अथवा किसी ने अपनी कीली पर भी घूमता माना है वह एक स्थानांतर न होने से स्थिर ही समझा जाता है तब तो उस की प्रदक्षिणा हो सक्ती है। ऐसे पृथिवी को माना नहीं है उस को तो अपनी कीली पर एक मिनट में १७ मील घूमती और सूर्य की प्रदक्षिणा में एक मिनट में १११० मील दौड़ती माना है, तब चन्द्रमा पृथिवी के साथ दौड़ कर सूर्य की प्रदक्षिणा देगा यह वार्ता प्रत्यक्ष बाधित है यदि कहै कि पृथिवी की प्रदक्षिणा में दौड़ता भी है और घूमता भी है, यह दो क्रिया साथ बिना दो कारणों के नहीं हो सक्तीं-कारण पूछने से यदि यह कहै कि आकर्षण शक्ति से घूमती है सो माना भी है देखो नं० २१ में। कि आकर्षण शक्ति पृथिवी को घूमने से नहीं रोकती है।

भावार्थ—आकर्षण शक्ति घुमाती है। फिर पृथिवी दौड़ती काहे से है? किसी दूसरी शक्ति को बताने से अनेक दोष आते हैं। ऐसे दौड़ना और घूमना दो क्रियाओं में एक हेतु कहो तो सब पिंडों में घूमना दौड़ना होना चाहिये सो है नहीं। सूर्य में एक घूमना-पृथिवी में १ घूमना, २ दौड़ना, सूर्य स्थिर, पृथिवी दौड़ती हुई, दोनों पदार्थों की दो व्यवस्था, तब यह कहना कि जैसे सूर्य के स्थिर में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृथिवी की प्रदक्षिणा होती है वैसे पृथिवी के दौड़ने में चन्द्रमा की प्रदक्षिणा होती है वह क्यों बाधित नहीं है-है ही।

नं ३६ का विवेचन

चन्द्रमा पृथ्वी से २४००० मील दूर है।

शङ्का—यह कहना बाधित है क्योंकि यह लिखना निश्चित नहीं है देखो नं० ४० में चन्द्रमा पृथिवी के संलग्न था इस कहने से यह ठीक हुआ कि २४ घंटे में उसके साथ घूम लेता था अब आगे कुछ समय बाद बहुत दूरी पर हो जायगा इस तरह भ्रम रूप उसकी दूरी बताना और २७$\frac{1}{3}$—२८—२९॥ दिन में पृथिवी की प्रदक्षिणा बना कर महीने का विभाग करना केवल मन मानी किलोल के संकल्प हैं मन में आया सो कह दिया इस अरोक आग्रह के रोकने वाला कोई नहीं है सिवाय मध्यस्थों के। वह चन्द्र सूर्यादि की पलटी हुई व्यवस्था हज़ारों वर्ष से वृद्ध व्यवहार के ज्योतिष शास्त्रों की साक्षी से तो पलटी नहीं है अनादि निधन है परन्तु अब अतीत अनागत काल की वार्ता को न जानते हुए पश्चिमी विद्वानों के संकल्पों द्वारा न मालूम कैसे निरधारित हुई पहले कह चुके हैं कि यह मन घड़न्त है और नम्बर ४१ में देखो चन्द्रमा कभी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

· CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३८००० मील कभी २२१००० मील कभी २५३०००मील दूरी पर घूमता है ये दूरी परस्पर विरोध होने से ग्रहण करने योग्य नहीं है। इस कारण २४००००मील की दूरी बताना ठीक नहीं है।

नम्बर ३७ का विवेचन।

चन्द्रमा पहले अग्नि रूप था तब उसमें बडे बडे ज्वार भाटे होते थे अब ठण्डा हो गया अब भी उसके भीतर होते होंगे।

शङ्का—यह संशय रूप लिखना एक बडे आश्चर्य जनक इंद्रजाल के ख्याल समान चित्त को विस्मित करके रंजायमान करता है।

सुनिये जल लहर उठती है उसको भाटा और घटती है उस को ज्वार कहते हैं यह समुद्र ही में नहीं किन्तु जहां जल होगा वहां होगी सब जगह लहर का उठना और नीचे को होना होता है यह सब प्राणिगणों को दीख पड़ता है इस के होने में वायु कारण है जहां २ जल में वायु का जोर अधिक होता है वहां लहर अधिक ऊंची नीची होती है और जहाँ कम संचार होता है वहां कम। और जहां पवन का संचार नहीं है वहां पानी स्थिर रहता है इस के अधिक लिखने वा कहने की आवश्यकता नहीं है सब बाल गोपाल जगत के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राणियों के प्रत्यक्ष है और नित्य प्रति अनुभव भी यही होता है इस अकाट्य हेतु को न मान कर उस में एक संकल्पित आकर्षण शक्ति से समुद्र की लहरों का होना मानते हैं यह भ्रम है प्रत्यक्ष का विरोधी हेतु होने से असंभव है। इस कारण समुद्र में लहरों के उठने में कारण वायु का संचार ही मानना प्रमाण भूत है इसमें यह आशङ्का करने का भी अवसर नहीं है कि समुद्र में ऐसी नियमित पवन का संचार जो नित प्रति समय के अनुकूल चले जिस से ज्वारभाटे नियम रूप होते रहैं—क्यों कि वायु के संचार का नियमित होना उस के नियमित कारणों से देखा जाता है। पवन के चलने में समुद्र की तलहटी में ज्वालामुखी स्थानों के होने से पवन का संचार ऊपर को होना असंभव है (वादी) मिस्टर हिल (Mr. Hill) साहब की रची हुई भूगोल की तीसरी किताब के पत्र २१ में लिखा है—यह आवश्यक नहीं है कि सब ज्वालामुखी पहाड़—पहाड़ के ही रूप में हों क्यों कि बाज़ ज्वालामुखी समुद्र के नीचे भी स्थित हैं उष्णता के कारण वायु का उत्पन्न होना असंभव नहीं है इसी कारण समुद्र में जहां जैसा नियम रूप कारण मिलता है वैसे ही पवन के संचार से ज्वारभाटे ऊंचे नीचे होते रहते हैं इसी कारण सेन्टहेलना के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुद्र में ३ फीट लन्दन के समुद्र में १८-१८ फीट, प्रिस्टल की खाड़ी में, चैपस्टोपकार्डिफ समुद्र में ३७-३८ फीट आदि अनेक स्थानों में ५० फीट से कम नहीं इतनी फीट ऊंची नीची लहरें होती रहती हैं यदि ऐसा न माना जाय और चन्द्रमा की आकर्षण शक्ति से ज्वारभाटे का होना माना जाय तो पृथ्वी की चाल वा घूम एक सार और चंद्रमा की चाल वा घूम नियम रूप होने से सर्वत्र पृथिवी के विभागों पर एक सार ज्वारभाटा होना चाहिये-सो होते नहीं हैं। जहां समुद्र में ज्वारभाटे होते हैं उस के समान भाग पृथ्वी में एक सार नहीं होते इस लिये चंद्रमा की आकर्षण से ज्वार-भाटे होते कहना बाधित है समुद्र में ज्वारभाटे होने में प्रधान वायु ही का कारण मानना प्रमाण भूत है।

किंच—यदि चन्द्र की आकर्षण से समुद्र का पानी ऊंचे नीचे होता है तो यहां नदी वा पोखरों में ज्वार भाटे समुद्र के से क्यों नहीं होते? यदि कहै कि उन में पानी थोड़ा है इस लिये लहरें भी थोड़ी होती हैं। थोड़े गहरे में थोड़ी लहरों का उठना कहा यह उन की भूल है क्योंकि समुद्र के समान गहरे तालाबों में ज्वर भाटा क्यों नहीं होते। चाहे तालाब में जल समुद्र से भी अधिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गहरा हो उस में बिना पवन के संचार किंचित भी लहर नहीं उठती जल अपने प्राकृतिक स्वभाव से शांति निरक्षोभ रहता है चाहे जितना गहरा क्यों न होय तथा किंचित ही गहरा हो जहाँ वायु का जैसा संचार होता है वहां वैसी ही लहरें उठती हैं यह प्रत्यक्ष है, चाहे जहां देख ले; पवन का संचार ही उस के कारणों में निश्चित रूप है और वायु किसी देश में समचाल से पूर्वी चलती है कहीं पश्चिम, कहीं थोड़ी कहीं घनी कहीं थोड़ी से घनी कहीं घनी से थोड़ी चलती रहती है। कहीं नियम रूप कहीं अनियम रूप, जहां जैसा कारण मिलता है वहां वैसी चलती है। जैसी वायु का संचार थोड़ा बहुत होता है वैसे ही नदी तालाब समुद्रों में लहरें तीव्र मंद होती रहती हैं कहीं नियम रूप कहीं अनियमरूप इन लहरों का अन्वय-व्यतिरेक प्रायः वायु के साथ होता है वायु होय तो लहर उठे, इस कारण लहरें उठने में कारण वायु ही है इस हेतु में कोई दोष का प्रवेश नहीं है लहरों के उठने में चन्द्रमा की आकर्षण को कारण कहने में उक्त दोष दिखा चुके हैं जो पक्ष को दूषित करते हैं इस लिये चन्द्र से समुद्र के पानी में ज्वार भाटा कहना एक बाजीगरी के तमाशे के समान है।

किंच—समुद्र में लहरें उठने में वादी ने वायु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कारण मानी है। ऐस० ए० हिल साहब बी० ऐस० सी० रायंस के प्रोफेसर बडे नामी विद्वान भूगोल की तीसरी पुस्तक के अध्याय ११ पत्र ४८ नं० ७ की सामान्य भाषा में जो सन् १८९० में छपी लिखते हैं कि साइक्लोन उन बड़ी और वेगवान् आंधियों को कहते हैं जो उष्ण कटिबन्ध के देशों में चला करती हैं ऐसी आंधियां बहुधा बंगाल की खाड़ी में मानसून के परिवर्तन के समय आया करती हैं पानी भी जहां ऐसी आंधी आती है बड़े जोर से बरसता है और यह आंधी धीरे धीरे आगे बढ़ती हुई समुद्र तट से जा टकराती हैं और समुद्र में ऐसी बड़ी लहरें उत्पन्न करती हैं जो नीची भूमि पर चढ़ जाती हैं उस के प्रचंड वायु वेग से और विशेष कर उन लहरों के कारण सहस्रों मनुष्य और जीव मर जाते हैं सन् १८७६ में मेघना नदी के मुहाने पर जो नीची भूमि है उस पर ऐसी आंधी के कारण बहुत सा पानी चढ़ आया और लाख से अधिक मनुष्य मर गये। प्रत्येक आंधी चाहे उस की हवा बहुत प्रबल न हो साईक्लोन के प्रकार की होती है उक्त पुस्तक के पत्र ३१ में आप लिखते हैं कि हवा के कारण समुद्र में तरङ्ग उठती है। चूंकि हवा का रुख अक्सर बदला करता है और तरङ्ग जो उठ चुके हैं सम्भव है कि उसी तरह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सैकड़ों कोस तक लहराते चले जावें अतः एक ही समय में भिन्न २ और पृथक २ तरङ्गों की श्रेणियां चलती हुई देख पड़ता हैं तरङ्गों में से कोई तो अत्यन्त छोटी और कोई पहाड़ के सदृश चालीस चालीस फीट ऊंची होती हैं समुद्र की बड़ी तरङ्गों का जोर बहुत अधिक होता है उत्तरी अट-लांटिक के तरङ्ग इस बात के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं कि वे ग्रेनाइट पत्थर की दो हज़ार पांच सौ साठ मन की शिलाओं को कई गज की दूरी तक बहा ले जाती हैं। ऐसी समुद्र की लहर उठने में वायु कारण मानी है फिर उस में चंद्रमा की आकर्षण शक्ति का संकल्प करना स्वबचन का घात करना नहीं तो क्या है? और वायु के चलने में हम अग्नि को कारण कह चुके हैं उस को उक्त हिल साहब ने उक्त पुस्तक के पत्र ४६ में स्वीकार किया है और इस बात के समझाने के लिये लिखा है कि हवा क्यों कर चलती है कई ऐसे साधारण और स्वाभाविक उदाहरणों का देना आवश्यक है जिनकी परीक्षा प्रत्येक मनुष्य कर सके। मैदान में जलती हुई आग को ध्यान पूर्वक देखने से मालूम होगा कि हवा पर गर्मी का क्या असर पड़ता है अर्थात् आग जलने के साथ ही धुआं उठने लगता है और यदि उस स्थान में हवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं चलती रहती तो यह धुआं बहुत दूर तक आकाश में चढ़ जाता है और वहां से चारों तरफ फैलता देख पड़ता है इस से मालूम होता है कि गर्म हवा या गैस ठंडी हवा से अधिक भारी होती है और जिस तरह कार्क (काग) या लकड़ी का टुकड़ा पानी में डालने से हलका होने के कारण पानी की सतह पर पैरा करता है उसी तरह गर्म हवा ठंडी हवा से गुजर कर ऊपर चली जाती है और यदि कहीं आग बहुत अधिक होती है तो जो हवा ऊपर को चलती है इतनी अधिक और वेगवान हो जाती है कि पत्तियां और कागज़ के टुकड़े और हलकी चीजें जो पृथ्वी पर पड़ी होती हैं उस तरफ को चलती हुई हवा के झोकों के साथ उड़ कर आग में जा गिरती हैं। आग जलने से लघु पवन पैदा होता है और हर तरफ से आग ही की ओर चलती है और यदि साधारण आग के बदले कहीं जङ्गल में आग लग जावे या शिकेगो शहर की तरह जिस को जले हुए थोडे साल गुज़रे कई नगर जल उठें तो हवा के झोके जो आग की तरफ चलते हैं बहुत ही बडे होते हैं और किसी समय तो आंधी सी चलने लगती है इस से मालूम होता है कि हवा में गति हमेशा गर्मी ही से पैदा होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वादियों के इस लेख से प्रतीत होता है कि वायु तो अग्नि की उष्णता से उत्पन्न होती है और वायु के टकराने से जल में लहर उठती हैं उन ऊंची २ लहरों को ज्वारभाटा कहते हैं उन के उठने का कारण वायु है यह हेतु सत्यार्थ है जिन्हों ने जल की लहरें वायु से मानी हैं उन का कथन सत्यार्थ प्रतीत के योग्य है यदि इस में आशङ्का करे कि ज्वारभाटा समुद्र में नियत काल पर होते हैं वायु का नियत पना कैसे सम्भव यह कहना पहले भी वाधित दिखा चुके हैं क्यों कि वायु भी कहीं नियत काल पर कार्य करती देखिये हैं नियत अग्नि जल के संयोग ते जैसे रेल मेंस्टीम वायु नियत कार्य को करती है तैसे ही अग्नि मुखी पृथ्वी ज्वालामुखी पहाड़ों के मुख द्वारा जल के संयोग से उत्पन्न हुई वायु भी जैसा जैसा निमित्त जहां मिलता है वैसा वैसा बल धारण कर ज्वारभाटा करती रहती है इसी कारण वायु के बल मूजिब कहीं ३ फीट कहीं ५० फीट ऊंचे ज्वारभाटा होते रहते हैं। वायु अनेक प्रकार की और नियत रूप कारण के योग से अनेक प्रकारता धारण कर जल को सर्वत्र ताड़ती हुई लहर उत्पन्न करती है यह सर्व प्रत्यक्ष अवाधित है इन लहरों के उठने में चन्द्रमा सूर्य की आकर्षण कहना सर्वत्र वाधित है क्यों कि चन्द्रमा सूर्य को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शक्ति सदैव विद्यमान रहते भी कहीं लहर उठती हैं कहीं नहीं उठती। जब वायु का संचार नहीं है तब जैसा २ जहाँ वायु का संचार है वैसा २ जल में लहरों का उठना सर्वत्र देखिये है इस से यह कारण अन्वय व्यतिरेकता लिये स्पष्ट है आकर्षण एक परोक्ष शक्ति का संकल्प कर पक्ष का साधन करना महा शङ्का का स्थान है।

यहां प्रश्न होता है कि चन्द्रमा में समुद्र माना नहीं वहां तो ज्वालामुखी पहाड़ों से भरा माना है वहां बिना समुद्र के पानी के ज्वारभाटों का होना असंभव है जिस के उत्तर में वादी लिखते हैं कि वहाँ चन्द्रमा के ऊपर अग्नि है उस में ज्वारभाटा होते थे यहां फिर कोई पूछे कि पहले होते थे यह तो तुम ने भूत काल का ज्ञान अपने में स्थापित किया सो असंभव को दुर्जन न्याय संतोष से ऐसा हीं मान लेंगे परन्तु अब तो उष्णता के अधिक कारण होते भी (जिन को नं ३८ में दिखावेंगे) ठंडा होगया और समुद्र जिस पर है नहीं तब ज्वारभटे चन्द्रमा में कहां होते हैं इस के उत्तर में (देखो स्टोरी पत्र ५४८) लिखा है कि उस के भीतर गर्मी होगी उस की अग्नि में होते होंगे। सज्जनों उत्तर कितना सत्यता का भरा निश्चय रूप ग्रहण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करने योग्य आश्चर्यकारी संशय रूप दिया कि होते होंगे जिस चन्द्रमा के अन्तरङ्ग के जानने वाले अन्तर्यामी महात्मा बन कर यह लिखना आश्चर्यकारी बाजीगर का ख़्याल नहीं तो क्या है क्या ऐसे संशय रूप वा क्यों पर वस्तु का वस्तुत्व जाना जाता है अधिक क्या लिखें जैसे जल में लहरें उठने का कारण चन्द्रमा की आकर्षण शक्ति में दोष आते हैं और वायु के संचार से जल में लहर उठने का प्रायः कारण निर्दोष है तैसे ही अग्नि में लहर उठने का कारण पृथ्वी की आकर्षण शक्ति भी बाधित है क्यों कि जो पृथ्वी की आकर्षण शक्ति चन्द्रमा अग्नि स्वरूप ज्वालामुखी पहाड़ों से अग्नि को निकासता हुआ उसकी लहरों (ज्वार भाटों) को करती है जिसका असर दूरी पर ठहरे हुए चन्द्रमा पर पड़ता है वह पृथ्वी पर जलती अग्नि पर क्यों नहीं पड़ता देखा जाता है कहीं बिना वायु के सञ्चार अग्नि वा दीपक वा मसाल सीधी जलती रहती है लहरें नहीं उठती कोई कोई जहां पवन का सञ्चार होता है वैसे ही दीपकादिकों में लहरें उठती हैं इस कारण प्रत्यक्ष वायु ही के कारण दीपादिक अग्नि में लहरें उठती हैं यदि पृथ्वी की आकर्षण से लहरें उठती तो सर्वत्र शक्ति के होने से सर्व अग्नि मसाल दीपकों में लहरें उठतीं सो दृष्टि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोचर होती नहीं इस कारण अग्नि में लहरें पृथ्वी की आकर्षण शक्ति से कहना बाधित है। इस में मुख्यपने वायु ही कारण है यह कहना कि जल में वा अग्नि में ईंट पत्थरों के डालने से भी लहरें उठती हैं यह कारण किसी स्थान में होने से मुख्य कारण नहीं है जो मुख्य कारण होता है वही कारण कहा जाता है और ईंट पत्थर डालने से भी वायु का टकराना सम्भव है इस कारण वायु को कारण मानना ही श्रेष्ठ हेतु है।

नं० ३८ का विवेचन।

चन्द्रमा में गर्मी अब बहुत कम हो गई है पहले वह ज्वालामुखी था वहां समुद्र वा पानी नहीं था।

शङ्का—पहले अतीत काल में चन्द्र में ठण्ड सम्भावना नहीं थी क्योंकि वहां पानी न था ज्वालामुखी पहाड़ थे तीसरे सूर्य की रोशनी उष्ण रूप से चमकदार थी तीनों कारण तीव्र उष्ण होने के थे चौथे उसकी गर्मी बढ़ाने के लिये ज्वालामुखी पहाड़ों के पत्थर बरसते थे पांचवें तारे टूट कर उसके ऊपर पड़ते थे उक्त सब कारण उष्णता के बने रहने के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूगोल भ्रमण वादी के स्वीकृत हैं देखो स्टोरी में। सब कारण मिलने पर भी उसकी गर्मी निकल कर इतना ठण्डा हो गया कि जिसकी ठण्डक २४०००० मील से चली हुई हम को ठण्डा कर देती है यह प्रत्यक्ष है इस कारण यह वादी का कथन असम्भव है और पहले पृथ्वी से संलग्न था इस कारण कम घूमने से गर्मी का खर्च भी कम था अब दिनों दिन दूर होने पर घूम बढ़ने से गर्मी बढ़नी चाहिये तिस पर भी ठण्डा क्यों ? यदि ऐसा ही था तो सूर्य उस से अधिक ठण्डा होना चाहिये क्योंकि इस में उष्णता का खर्च अधिक आमदनी में संशय। देखो स्टोरी पत्र ५१६-५१८। ऐसे अपने सिद्धान्त को न विचार के कहना कि चन्द्रमा पहले उष्ण था अब ठण्डा हो गया जिस में गर्मी बढ़ने के सिवाय ठंडा होने का कोई सबूत नहीं है और सूर्य में ठण्डे होने के कारण होने पर भी गर्मी बनी रही ये सर्व व्यर्थ संकल्प हैं।

चन्द्रमा सदैव से शीतल है और शीतल ही रहेगा क्योंकि इस के नाम ही शीतलता को प्रगट करते हैं शीतरश्म—हिमकर.....आदि इस कारण यह कहना कि चन्द्रमा पहले शीतल न था किन्तु उष्ण था अब ठंडा पड़ गया बिलकुल असं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव है। पहले इतना उष्ण (अग्निवान) था कि जिस में पृथ्वी की आकर्षण से उस की अग्नि मयी ज्वाला में बडे बडे ज्वार भाटे होते थे जैसे कि चन्द्रमा की आकर्षण से समुद्र में होते हैं ऐसे चन्द्रमा को बिना कारण उस की गर्मी निकाल कर फिर भी उस में पृथ्वी की आकर्षण से अग्नि में बडे बडे ज्वार भाटों का होना कहना क्या असंभव नहीं है ? किन्तु है ही। इस में कोई प्रश्न करे चन्द्रमा में ज्वार भाटा कहाँ होते थे इस का उत्तर देखो नं० ३७ में कि उसके भीतर अबभी होते होंगे। विद्वानों को विचार का स्थल है कि यह भी न कहो कि होते हैं उत्तर में भी प्रश्न कर्त्ता को संशय के बडे भारी कूप में डाल दिया कि होते होंगे ऐसे महा संशय कूप में पडा आदमी कैसे बच सके इस कारण उक्त सिद्धान्त असत्य है।

नं० ३९ का विवेचन

वर्तमान काल में पश्चिमी विद्वानों का मत यह है कि पृथ्वी घूमती और दौड़ती है अतीत काल में मत था कि पृथ्वी स्थिर थी न घूमती न दौड़ती थी दोनों मतों से दिन रात्रि २४ घंटे का है। अब वादी कहता है अनागत काल में दिन १४०० घंटे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का होगा, (देखो न० ६३ में) जब तीनों कालों की यह विरुद्ध वार्त्ता है तब कैसे समझा जाय कि वादियों का मत मन घड़न्त संकल्पों से कहा सत्यार्थ है ? क्योंकि वे अतीत अनागत वर्तमान काल के जानने वाले सर्वज्ञ को तो मानते ही नहीं। न उस के वाक्य रूप आगमन को स्वीकार करते हैं फिर तीन काल के पदार्थों का कथन कौन से ज्ञान से कराते हैं। जो एक प्रत्यक्ष ही इन्द्री गोचर दीख पडे उस को सत्य मानने वालों के वा कयास से वा कयाफै से वा विनालिंग उनमान से मानने वालों के जिस पर भी परस्पर विरोध कहने वालों के यह त्रिकालवर्ती ज्ञान होना कैसे सम्भव है क्यों कि इन्द्रीसंबंधी ज्ञान वर्तमान अल्प वस्तु के जानने में ही चरितार्थ होता है इस कारण त्रिकाल सम्बंधी जो मन घड़न्त संकल्पों की वार्त्ता वह महा शङ्का का स्थान क्यों न होय ? अवश्य होय।

नं० ४० का विवेचन।

चन्द्रमा पहले पृथ्वी के संलग्न था और थोड़े समय में घूम जाता था परन्तु अब परिक्रमा करने में ६५६ घंटे लगते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शङ्का—चन्द्रमा की दूरी पृथ्वी से जो वादियों ने बहुत थोडी मानने में भी ठीक नहीं लिखी तो बडी गणित आदि कैसे ठीक होगी। देखो दूरी न० ४१ में २३८०००—२४००००—२२१०००—२५३००० परस्पर विरुद्ध है। जब छोटे से हिसाब में इतनी गड़बड़ी तथा निकट वर्ती चन्द्रमा के घूमने की दिशा—व्यास-उष्णमयी या शीतल-आकर्षण शक्ति आदि में भी इतनी गडबडी है जो इस पुस्तक में दिखाई गई है जिन में परस्पर विरुद्धता को न देख मन माना संकल्प किया सो लिख दिया जिन के पास फोटो लेने की-देखने की ऐसी दूर्बीन लिखते हैं कि रोशनी एक सिकण्ड में १८६००० मील जाती है देखो न० ६४। ऐसी रोशनी २ वर्ष तक चली हुई असंख्यों मील की हुई, जिस को देख सके। इतनी दूरी के जानने वाली दुर्बीन जिन के पास देखने की हैं तब चन्द्रमा २४०००० मील वाले की नाप में सूरत में स्वभाव में आकर्षण शक्ति में इतनी गड़बड़ है जो परस्पर विरुद्ध वा पूर्वापर विरोध पाया जाता है तब करोड़ों अरबों खरबों मील की दूरी के तारे की हालत सो भी भूत भविष्यत काल की अवस्था सहित इन्द्रीजनित ज्ञान वाला कौन लिख सक्ता है और ऐसे असम्भव संकल्पों पर कौन विश्वास कर सक्ता है सिवाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पक्षपातियों के, तारे वा सूर्य वा गृह जो बहुत दूरी पर लिख दिये हैं उनकी प्रतीति चाहे जैसी गणित से वा दुर्बीन आदि यंत्रों से करी लिखी है सब भ्रांति रूप है क्योंकि चन्द्रमा जो थोड़ी दूर पर है जिस के सर्ब विषयों में गड़बड़ी पोई जाती है तब अत्यन्त दूरी वर्ती पदार्थों में क्यों गड़बड़ी न हो इस कारण निरधार रूप न होने से प्रतीत योग्य नहीं है। यदि लिखने वालों को अपना बहु ज्ञानी पना दिखाना था तो सर्व लेख वर्तमान के लिखने थे तब लोगों को बडे बडे यंत्र दुर्बीन आदि के देखने से कुछ संतोष भी होता परन्तु भूत भविष्यत जो उनके विषय से अलग हैं उनको लिखकर उन्होंने क्यों व्यर्थ अपने बहुज्ञानी बनने में कलङ्क लगाया अथवा मान पुष्ट करने को वा राज्यमान्य होने को वा आजीविका होने को, ऐसी लिखावटें लिखना वह श्रेष्ठाचरण नहीं है श्रेष्ठाचरण वही है जो निस्प्रेही (मध्यस्थ) बन कर पदार्थ का वास्तविक निरूपण करदे। चन्द्रमा का कथन अनेक पुस्तकों में अनेक भांति देखने से मध्यस्थ विद्वानों को अवश्य प्रतीति हो जायगी कि वादियों के लेखों में बड़ी गड़बड़ी है प्रतीति करने योग्य नहीं है और अपने पुरातन बहुज्ञानी निस्प्रेहियों ने कही पृथ्वी स्थिर और सूर्यादि एक प्राकृतिक दिशा को घूम रहे हैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह सत्यार्थ है और प्रतीति करने योग्य है।

किञ्च ॥

प्रतिवादी—यदि चन्द्रमा पृथ्वी से संलग्न था तो पृथिवी पर रहने वाले पक्षी उड़ से नीचे रहते हुए बडे दुखी रहते होंगे कबूतर आदि पक्षी गगन में विहार नहीं करते होंगे और चन्द्रमा के सबब पृथिवी पर बड़ा चांदना रहता होगा।

वादी—हाँ—चाँदना रहने पर क्या हानि थी।

प्रति०—हानि तो कुछ नहीं चांदनी में सर्व कार्य हो सकते हैं परन्तु तुम्हारे जो लिखा है कि चन्द्रमा सूर्य से रोशनी लेता है (देखो नं० ६०) तब तो सूर्य की तरफ चन्द्रमा में रोशनी रहकर पृथिवी की तरफ अंधकार रहने से सर्व पृथिवी पर अंधकार होने के कारण सर्व प्राणियों का कारबार बन्द रहता होगा और ऐसा न होगा तो सूर्य से रोशनी लेना कहना असत्य होगा। जिन विद्वानों ने चन्द्रमा को पृथिवी से संलग्न प्रदक्षिणा करना लिखा है यदि वे यह संकलप करके और लिख देते कि उस समय पृथिवी के पहाड़ों की रगड़ से उसमें काले २ दाग पड़गये हैं तो कथन और भी अधिक स्पष्ट हो जाता और यह वार्ता भी विचार के योग्य है कि चन्द्रमा पहले अग्नि रूप था देखो नम्बर ३७ में। यहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न जल था न वृक्ष थे केवल ज्वालामुखी पहाड़ों के योग से अग्नि रूप था तब तो पृथ्वी के संलग्न होने से इस पर (पृथ्वी) के सर्व जीव जन्तु वृक्ष लकड़ी आदि भस्म हो कर बड़ी आपत्ति में आ गये होंगे। चन्द्रमा को सुधामई प्राणरक्षक तापहरने वाला लोग कहते हैं यह सब प्रत्यक्ष असत्य ठहरेगा अब हम अधिक न लिख कर सज्जनों का चित्त इस ओर आकर्षित कराते हैं कि यह वार्त्ता कहां तक ग्रहणीय हैं तिस पर भी यह और लिखा जाता है कि अग्नि रूप चन्द्रमा में शीतल होने के कारण वादी के मत से न होते केवल गर्मी बढ़ने के ही हैं देखो नम्बर ३८ में। फिर वह गर्म होना चाहिये था ठण्डा क्यों हो गया- यह महा शङ्का का स्थान होने से भ्रान्ति रूप है।

किंच—सर न्यूटन एक बडे ज्योतिषी पश्चिमी विद्वानों में बड़े नामी गिने जाते थे जिन्हों ने कि एक वृक्ष से सेव का फल पृथ्वी पर गिरता देख कर पृथ्वी में आकर्षण गुण का आविर्भाव यहां तक किया कि पृथ्वी में नहीं किन्तु सर्व पिंड मात्रों में आकर्षण गुण है और पिंड पिंड के पास होने पर उस को गुणन फल से शक्ति को बढ़ाते हैं और दूरी होने से उस के विपर्य शक्ति को घटाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देखो नं० २० । यह सिद्धांत पहले सर न्यूटन ने संकल्प किया था उस समय सायंस विद्या वा दूरबीन आदि औजार इस के निर्णय करने के जोरदार न थे तब उन्होंने लिखा था। यह न्यूटन का मत अतीव निर्बल है हम इस का निषेध क्या लिखें हमारे लिखने से न्यूटन के अनुयाई लोग धारण क्यों करेंगे ? परन्तु उन के मत धारी पीछे हुये उन्होंने ही इस का निषेध किया है वह दिखाते हैं जिस को विद्वान मनन करेंगे और मिस्टर न्यूटन के अनुयाई हम से कोप न कर क्षमा धारण करेंगे । मिस्टर न्यूटन के पश्चात् सर रौबर्ट ऐस० बाल (Sir Roberat S. Ball.) हुए उन के समय सायंस विद्या के दूरदर्शी यंत्र बडे बढे उन का बड़ा जोर हुआ वह अपनी रची पुस्तक दी स्टोरी आफ़ दी हैविन्स (The story of the heavens) के पत्र ५४३ में लिखते हैं कि पहले चन्द्रमा जो कि बडा पिंड है और पृथ्वी जो उस से भी बडा पिंड दोनों संलग्न थे (देखो न० ४०) दोनों के निकट होने से सर न्यूटन के मतानुसार परस्पर शक्ति बढ़ने से उन का मिलना तो संम्भव है परन्तु अंतर होना असंभव है इस में बाधा देते हुए सर रौबर्ट ऐस० बाल लिखते हैं कि चन्द्रमा पृथ्वी से दूर होता जाता है अब तक २५०००० मील दूर हो गया है परन्तु नहीं मालूम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कितनी दूर हो जायगा इस लेख से सर न्यूटन का मत अतैव वाधित होता है और यह दिखलाता है कि आकर्षण शक्ति पृथ्वी में सर न्यूटन के मतानुसार नहीं है यदि आकर्षण शक्ति होती तो पृथ्वी से चन्द्र का पिंड दूर न होता। यही बुध (Murcury) तारे की दूरी की चाल से वाधित होती है। इस कारण आकर्षण शक्ति का संकल्प भ्रांति रूप है। इसी प्रकार और भी नम्बरों की वार्त्ता देखने से आकर्षण शक्ती जो सर न्यूटन की मानी हुई है उस में अनेक भ्रांति खड़ी होती हैं जो इन नम्बरों में दीख पड़ेंगी न० १७-२२-२५-४१-४०-५० आदि इस कारण सर न्यूटन ने मानी आकर्षण शक्ति वाधित होने से सर्व ही भूगोल भ्रमण वादियों का मन आकाश के पुष्पों का सिंगार है॥

नं० ४१ का विवेचन

चन्द्रमा पृथ्वी से कभी २३८००० मील कभी २२१०००, २५३००० मील दूरी पर घूमता है।

सर न्यूटन आकर्षण विद्या के जानने वाले बडे नामी हैं वह कहते हैं आकर्षण शक्ति सब पिंड मात्र में है। वह पास होने से गुणनफल रूप बढ़ती है और दूर होने से उस के विपरीत घटती है देखो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० २६ और पहले चन्द्रमा पृथिवी से संलग्न था देखो नं० ४० अब लाखों मील के दूर होने से शक्ति घटी, तब चन्द्रमा के दूर होने से सरन्यूटन का सिद्धांत असत्यार्थ ठहरता है।

अथवा सर रौबर्ट एस० बाल साहब उनके पीछे उन से भी बडे विद्वान हुए उन के कथन से सहमति है वह आकर्षण शक्ति ही को असत्यार्थ कहते हैं (स्टोरी पुस्तक को देखो) अब दोनों परस्पर विरुद्ध कहने वाले हुए।

ताते भ्रांति रूप है किस को सत्य माना जाय?

नं० ४२ का विवेचन

चंद्रमा पृथ्वी की प्रदक्षिणा २७ दिन से कुछ अधिक समय में देता है।

शङ्का—जैसे भू सूर्य की प्रदक्षिणा करती है तैसे चंद्रमा भू की प्रदक्षिणा करता है यह जाना परंतु सूर्य की प्रदक्षिणा देना तो युक्त है क्यों कि वह स्थिर है और घूमता है तो अपने एक स्थान पर, पृथ्वी इस की प्रदक्षिणा दे सकती है परन्तु पृथ्वी की प्रदक्षिणा चंद्रमा नहीं दे सक्ता है क्यों कि पृथ्वी एक मिनट में १११० मील सूर्य की प्रदक्षिणा में दौड़ती हुई है तब उस के साथ तो दौड़ सक्ता है परंतु पृथ्वी के घूमती बार वह चंद्रमा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उस के साथ नहीं घूम सक्ता क्यों कि पृथिवी जब पूर्व को जाती हुई आगे को दौडेगी तब चंद्रमा आकाश मार्ग प्रदक्षिणा में पृथ्वी के साथ दौड़ता हुआ दक्षिण पश्चिम को उन्मुख हुआ १४ दिन में घूमेगा तब तक पृथ्वी ३० करोड़ से अधिक मील आगे को बढ़ जायगी यदि कोई कहे क्या हानि हुई ? चंद्रमा अति वेग से दौड़ कर पृथ्वी के साथ हो लेगा यह ठीक नहीं, क्यों कि एक गोल रेखा पर दौड़ती हुई वस्तु की प्रदक्षिणा हो ही नहीं सक्ती। यदि मान भी लिया जाय तो चंद्रमा की चाल अति वेग वाली होने पर वादियों के सूर्य ग्रहण तथा चंद्र ग्रहण जो सर्व ग्रासी वा बहुत काल तक होता है उस में बाधा पडेगी, इस कारण पृथ्वी की प्रदक्षिणा में चंद्रमा का प्रदक्षिणा देना असंभव है।

यदि वादी कहै कि हुम समझे नहीं जैसे पृथ्वी सूर्य की आकर्षण से बंधी उस के गिर्द घूमती है तैसे पृथ्वी की आकर्षण से बंधा हुआ चंद्रमा पृथिवी की प्रदक्षिणा में घूमता है अपने अपने बधन से घूमने पर पक्ष में कोई हानि नहीं आती। यह कहना भी बिना बिचारे है क्यों कि धरती की आकर्षण से चंद्रमा बंधा हुआ घूमता है तो पृथ्वी घूम कर जैसे २४ घंटे में अपनी कीली पर आती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है तैसे उस के साथ चंद्रमा भी २४ घंटे में घूम पूरी करले। चंद्रमा धरती की प्रदक्षिण २७ दिन में करता है उस में भी अनेक शङ्का हैं क्यों कि कोई २७ कोई, २८ २९ दिनमें प्रदक्षिणा करना कहते हैं। इस कारण यह कहना व्यर्थ है क्यों कि चंद्रमा जो धरतीकी आकर्षणसे घूमता है वह परबस हुआ घूमता है। फिर उस की चाल दूसरी कैसे प्रगट हो सकती है? यदि उस की चाल जुदी है तो धरती की आकर्षण से प्रदक्षिणा देता घूमता कहना व्यर्थ है क्यों कि जो जिस क्रिया में पराधीन है, उसके वह क्रिया स्वाधीन नहीं हो सकती इस कारण धरती की प्रदक्षिणा में चंद्रमा का घूमना महा शङ्का का स्थान है। याते घूमती पृथिवी के साथ चन्द्रमो की घूम नहीं होनी चाहिये।

भावार्थ—पृथ्वी से चन्द्रमा किसी पृथिवी की शक्ति से बंधा है या नहीं? यदि बंधा है तो पृथ्वी के साथ २४ घंटे में स्थान पर आना चाहिये और गोल वृताकार घूमना चाहिये। परन्तु स्वाभाविक घूमना सितारोंका अण्डाकार माना है-यह विरुद्ध है।

यदि नहीं बंधा है तो दौड़ती पृथिवी की प्रदक्षिणा देना असम्भव है और यदि अति वेग से प्रदक्षिणा करता है तो सर्व ग्रासी दीर्घ काल तक चन्द्र ग्रहण पड़ना असम्भव है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किञ्च—सूर्य स्थिर की पृथिवी प्रदक्षिणा देती है यह भी असत्यार्थ है। क्यों कि सूर्य भी दौड़ता है देखो नं० ५६, ५७।

नं० ४३ का विवेचन।

चन्द्रमा पश्चिम से पूर्व को घूमता है।

भावार्थ—जैसे धरती पश्चिम से पूर्व को घूमती है तैसे चन्द्रमा भी पूर्व को घूमता है।

शङ्का—सूर्य नेत्रों से दृष्टि पड़ता है कि पूर्व से पश्चिम को जा रहा है और प्रातः काल पूर्व में उदय होकर सन्ध्या समय पश्चिम में अस्त सब बाल गोपालों के प्रत्यक्ष अनुभव में आ रहा है और तैसे ही चन्द्रमा भी पूर्व में उदय और चल कर पश्चिम में अस्त होता है।

सूर्य की धूप और चन्द्रमा की चांदनी से छाया आदि का पड़ना भी समान दीखता है। इस को न मान कर धरती घूमती है इस पक्ष के दृढ़ करने के सङ्कल्प से धरती को घूमती बता कर सूर्य को स्थिर मानना भ्रम नहीं तो क्या है? सूर्य चंद्रमा की चाल तथा उदय अस्त सादृश दृष्टि पड़ता है फिर सूर्य को स्थिर चन्द्रमा को चलता हुआ मानना भ्रम नहीं तो क्या है? जिस पर भी दोनों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की एक सी दशा पश्चिम गामी देख कर भी चंद्रमा को पूर्व गामी बताना कैसे असम्भव न समझा जाय ? जिन परोक्ष दूरवर्ती पदार्थों की गमन आक्षि क्रिया समान दृष्टि पडे उन का समान गमन क्यों न समझा जाय ? इस से यही निर्धार होता है कि चन्द्रमा पश्चिम से पूर्व को जा रहा है कहना शङ्का का स्थान है । या तो चन्द्र सूर्य दोनों को पश्चिम गामी कहना था या दोनों को पूर्व गामी कहना या दोनों को स्थिर या चलता मानना ठीक था क्यों कि चलने की क्रिया दोनों की देश प्रति समान है केवल चाल में भेद तो शीघ्रता का है जिस से आगे पीछे उदय अस्त है न कि चलने में दिशा का भेद है इस कारण यह शङ्का का स्थान है ।

यदि यह न होनी बात भी होनी मान ली जाय कि चन्द्रमा पृथिवी की प्रदक्षिणा देता है तो यह कहना कि चन्द्रमा पृथिवी की तरह पश्चिम से पूर्व को जाता है यह महा शङ्का का स्थान है क्यों कि पृथिवी सूर्य के सामने घूमती हुई पश्चिम से पूर्व को जाती है इस कथन से दिशाओं का व्यवहार नहीं रहता है तब सर्व लौकिक व्यवहार मिटने से ध्रुव आदि तारों को उत्तर आदि दिशा में कहना भ्रांति रूप होने से असंभव होता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देखो चित्र में कौनसी दिशा किधर है—कोई भी ठीक नहीं, फिर दूरवर्ती जो ध्रुव तारा उस को उत्तर में बताना भ्रम है या नहीं ? इस कारण चन्द्र को पश्चिम से पूर्व को जाता बताना भ्रम है।

फिर्द्ध—भू पर जहां २ दिन होता है वहां २ सूर्य का बिम्ब पूर्व से पश्चिम को चलता दिखाई देता है तैसे ही चंद्रमा भी पूर्व से पश्चिम को चलता दिखाई देता है परंतु उस की चाल में उत्तरायन दक्षिणायन में अंतर उस की गमन गली के कारण है यही दशा चंद्र की जहाँ जहां रात्रि होती है वहां वहां दीखती है इस दृष्टि विषय से कुछ भी शङ्का नहीं होती है कि सूर्य और चंद्रमा की चाल दो है और वादी सूर्य की प्रदक्षिणा में पृथिवी घूमती है और पृथिवी की प्रदक्षिणा में चंद्रमा घूमता है यह दो क्रिया परस्पर विरुद्ध की सम्भवाना करते हैं यह दृष्टि विरुद्ध असम्भव है। जब पृथिवी गोलाकार घूमती है तब जो प्रतिपक्षी देश जैसे हिंदुस्तान व अमरीका उन दोनों स्थानों में चंद्रमा का उदय अस्त वा मूर्त्ति एक सार नहीं दीखनी चाहिये और दृष्टि पड़ती है एकसी, इस कारण शङ्का का स्थान है।

यदि कोई पक्ष दृढ़ को कहै कि तुम ने समान दृष्टि के देखने से पक्ष को असंभव दिखाया-सो ठीक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं है पदार्थों की चाल किसी तरह की होती है और दृष्टि से दीखती कुछ और तरह की है देखो एक जानवर पूर्व दिशा में उड़ता हुआ ठीक पश्चिम को समगगनखंड में जा रहा है परन्तु हम को सीधा जाता नहीं दीखता किन्तु जिस पूर्व से वह आ रहा है उस तरफ जो आसमान और पृथ्वी मिली हुई जिस को क्षितिज कहते हैं वहां से पक्षी निकसा हुआ (उदय होता हुआ) और पश्चिम को छिपता हुआ नज़र आता है।

कारण—नेत्र के विषयान्तर होने से कुल चाल है और दूसरी तरह दृष्टि पड़ती है ऐसे और तरफ भी पक्षियों का गमन किसी तरफ है और दृष्टि से दूसरी तरफ दिखाई पड़ता है, यह दृष्टि विकार है। तैसे ही चन्द्रमा की चाल पच्छिम को घूमने की है और पूर्व दिखाई देती है यह दृष्टि विकार है।

यदि ऐसा दृष्टि विकार मानते हो तब जो बड़ी पृथ्वी समधरातल मान कर उस पर सूर्य चंद्र का भ्रमण गोलाकार थाली के किनारे पर घूमना समान सत्यार्थ ठहरता है उस में क्यों शङ्का कर भ्रमोत्पन्न करते हो इस तुम्हारे ही कथन से पृथ्वी समधरातल चाक के आकार मानना सत्यार्थ होता है पृथ्वी गोलाकार भ्रमण करती हुई में चंद्र सूर्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की समानता चाल उदयास्त में सर्व ही शंका के स्थान हैं

नम्बर ४४ का विवेचन।

तारे स्थिर हैं सितारे चलते हैं घूमते हैं।

शङ्का—परस्पर विरुद्ध कार्यों में एक आकर्षण शक्ति हेतु का कहना सम्भवित नहीं है जो स्थिर करै वह चलाता घुमाता नहीं है और जो चलाता है वह स्थिर नहीं रख सकता घुमा नहीं सकता और जो घुमाता है वह न स्थिर रक्खे न चला सके यह सर्व क्रियाएं भिन्न भिन्न हैं इस कारण इन क्रियाओं के करने वाले हेतु भी भिन्न भिन्न ही होने चाहिये एक आकर्षण से ही तीन भिन्न भिन्न क्रियाओं का कहना असम्भव है एक अपनी आग्रह रूप पक्ष के साधने के सिवाय दूसरा प्रयोजन इस में नहीं है। इस लिये उक्त वादियों का माना सिद्धान्त सत्यार्थ नहीं है।

नं० ४५ का विवेचन

आंख से ३००० तारे और दुर्बीन से दो करोड़ दीखते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शङ्का—ऐसे कहने में शङ्का यह है कि कैसा ही चतुर पुरुष होय नेत्रों से २००—४०० बिखरे हुए पदार्थों की गणना कर सक्ता है क्योंकि फैले हुए जैसे तारे वैसे ही पृथ्वी पर बिखरे हुए गोल पिंडों की गणित हो सक्ती है अथवा जो एक परिमाण में आये हुए श्रेणी रूप पदार्थ होय तो उसके परिमाण से गुणित कर गिनती कर सकते हैं जैसे एक मील लम्बे चौड़े प्रदेश में श्रेणी बंध १०० गोले हैं तो ४ मील लम्बे चौड़े प्रदेश में १६०० गोले होंगे सो आकाश में श्रेणी बंध तारे नहीं हैं, वह तो प्रकीर्णक फले हुए ही कहीं थोड़े कहीं बहुत हैं देखो आकाशी गङ्गा (मिलवै) और न आकाश में नाप रूप प्रदेश हैं फिर ३००० की गणना नेत्रों से कैसे हो सकती है और दुर्बीन में आये पदार्थ भी नेत्र के विषय से अधिक गणना में नहीं आ सक्ते फिर दो करोड़ तारे दुर्बीन से एक समय में दीखते कहना विलस्तों से आकाश की नाप करने के समान असम्भव है इससे मन माने संकल्पों से तारों की गणना करना कहना असत्य है।

नम्बर ४६ का विवेचन।

बुध शुक्रादि न्यैपचून पर्यंत ग्रहों की सूर्य से दूरी की नाप में ग़लती देखो:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैन्यूयल का कर्ता पृष्ट ४	ज्योतिर्विनोद कर्त्ता पृष्ट ४८	ग़लती (फर्क)
बुध ३६०००००० मील	३६२१०००० मील	२१०००० मील
शुक्र ६६००००००० मील	६७२३८००० ,,	१३८००० ,,
पृथ्वी ९३०००००० ,,	९३०००००० ,,	
मंगल १३९०००००० ,,	१४१०००००० ,,	७००००० ,,
बृहस्पति ४७५०००००० ,,	४८२००००० ,,	७००००० ,,
शनिश्चर ८७२००००० ,,	८८३५००००० ,,	११५००००० ,,

इस भांति लाखों करोड़ों मील का अंतर जिन के नाप की दूरी में है तब किस किताब का और उस के रचयिता का बचन सत्य माना जाय ? मन चाहा सो लिख दिया। बुध शुक्रादि थोड़ी दूरी वाले ग्रहों में तो इतना फ़र्क तब यूरेनस तारा २७४३४१०००० नैपचून तारा २७८८००००००० मील दूरी के तारों की कहां बात ? किस विद्वान की वार्त्ता स्वीकार की जाय ? तथा ऐसी दूरी नापने की गणित का क्या विश्वास किया जाय ? भला कहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणित शास्त्र जो अकाट्य स्वयं सिद्ध है उस में इतना फेर फार हो सकता है कदापि नहीं, यह खाली मन घड़न्त संकल्पों के कौतुक हैं। निशंक निरधारित नहीं हैं, इस कारण श्रद्धान के योग्य भी नहीं हैं।

नं० ४७ का विवेचन।

जोडि एक पैटीनुमा आकाशी घेरा है जोकि पृथ्वी के रास्ते से $\frac{°}{१}$ अंश (डिगरी) इधर उधर है।

शङ्का—वहां मेष आदि १२ प्रकार के तारे प्रत्येक पशुओं के आकार अनेकाकार हैं जैसा कि भारत के ज्योतिषी मेष वृषादि १२ राशि मानते हैं और उन को अनेकाकार मानते हैं। वही वादी मान कर स्वीकार करते हुए तारों को प्राकृतिक स्वभाव से गोलाकार बता कर फिर क्यों पृथ्वी को गोलाकार बताते हैं यह शङ्का का स्थान है और नं० ४८ में यही स्वीकारता है कि कौमिट तारे और निवाला तारे भी अनेकाकार हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं ४८ का विवेचन

पृथ्वी की आकर्षण की दुरंगी शक्ति

भावार्थ—आकर्षण से पृथिवी पर ऊपर नीचे दोनों तरफ वजन हलका हो जाता है ।

शङ्का—पृथिवी से पत्थर ऊपर को ले जाओ तो ऊपर जाने से पृथिवी की आकर्षण न्यून हो जाती है इस से पत्थर हलका हो जाता है पृथिवी की आकर्षण शक्ति का ऐसा स्वभाव है। परन्तु इस का दुरंगी चालपना देखा कि नीचे कुए में ले जाओ तो भी पत्थर हलका हो जाता है ।

यदि वादी कहै कि दुरङ्गापना नहीं है तुम व्यर्थ दोष लगाते हो पृथ्वी की परिधि के नीचे वा ऊपर को किसी तरफ ले जाओ तो परिधि से दूरी पर शक्ति घटनी चाहिये । यह तो माना परन्तु ऐसा विचार था तो पृथ्वी की परिधि में आकर्षण शक्ति का प्रभाव पिंड के केन्द्र में रहता है । इसमें तुम्हारे वचन का घात होता है तब यह आकर्षण शक्ति की दुरङ्गी चाल कैसे शङ्का का स्थान नहीं है । महा विरुद्ध शङ्का का स्थान है ।

नं० ४९ का विवेचन

कौमिट्स तारे तरह तरह के हैं ।

शङ्का—तारे तरह २ के हैं और गोल दीखते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं यह विकार तारों का नहीं है किन्तु नेत्रों का है फिर तारों को गोल बताना ठीक नहीं है देखो नं० ७ में तारों को गोल बताकर धरती को गोल बताना कितना भ्रम रूप है। इस लिये यातो पृथ्वी को गोलाकार मत कहो या तारों को अनेकाकार मत कहो क्योंकि दोनों परस्पर विरुद्ध हैं।

किञ्च—जब कौमिट्स तारों की तसवीर किताबों में देखते हैं तब उसमें स्यारस का सिर चौंच फाडें हुए कोई दीपक पर पतङ्ग जानवर पड़ता है ऐसी शक्ल के कोई लम्बी पूछवाले आदि अनेक प्रकार तारों की सूरत दीख पड़ती है। तैसे ही निबला जाति के तारे अनेकाकार माने हैं। तातै कहीं गोलाकार कहीं अनेकाकार तारों का मानना भ्रांति रूप नहीं तो क्या है।

नं० ५० का विवेचन

चन्द्रमा के सूर्य-पृथ्वी के बीच में आने से सूर्य ग्रहण और पृथ्वी की साया चन्द्र पर पड़ने से चन्द्र ग्रहण होता है।

शङ्का—चन्द्रमा की साया पृथ्वी पर आना असम्भव है जो साया एक मील सूर्य के प्रकाश से निकट आने पर शतांश (सौवें हिस्से घट जाती है वह १०० मील निकट जाने पर बिन्दु समान रह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जायगी यह प्रत्यक्ष प्रमाण कर देखलो। तथा तुम्हारे स्वीकृत नम्बर ७१ में देखने से तो छाया सर्व नष्ट हुई जाती है। जब चन्द्रमा से पृथ्वी २४०००० मील दूरी पर है तब उसकी साया चन्द्रमा पर कैसे पड़ सकती है? इस कारण पृथ्वी की साया चन्द्रमा पर पड़ती है ऐसा दिखा कर पृथ्वी को गोल बताना तथा पृथ्वी की साया से चन्द्र ग्रहण बताना यह दोनों वार्ता असम्भव हैं।

किञ्च—जो एक गोला १० फीट के व्यास का पृथिवी पर धरते हैं तब उसकी छाया सूर्य की रोशनी से १० फीट की ही पड़ती है फिर उस गोले को जितना जितना सूर्य की ओर ऊंचा करते हैं उतना उतना ऊंचे पर जाने से उस गोले की छाया कम होती जाती है यहाँ तक कि बहुत ऊंचा उठाने से एक बिंदु समान रह जाती है इस अवस्था को देख कर मालूम होता है कि जब चन्द्र पृथिवी से२४०००० मील की दूरी पर है और वहां से सूर्य ८ अथवा १२ करोड़ मील से अधिक दूरी पर है तो चन्द्रमा के ऊपर पृथिवी की छाया एक बिंदु के बराबर पड़नी चाहिये फिर छाया चन्द्रमा को सर्वग्रासी कैसे कर सकती है? अथवा बिन्दु बराबर पड़ी जो छाया उससे महा वेग वाला जो चन्द्रमा वह कैसे ग्रहण रूप में ६-७ घंटे रह सक्ता है? जहां मिनटों की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाल में चन्द्रमा पृथिवीकी प्रदक्षिणा में दौड़ जाता है इस कारण चन्द्र ग्रहण में पृथिवीकी छाया गोल पड़ना कहना भ्रम स्थल है।

प्रथम तो चलती हुई पृथ्वी पर चन्द्रमा की प्रदक्षिणा ही नहीं बनती यदि पृथ्वी को स्थिर माना जाय तब प्रदक्षिणा बन सकती है जैसे स्थिर सूर्य की पृथ्वी प्रदक्षिणा करती है। चन्द्रग्रहण का होना तो पृथ्वी की छाया से महा भ्रम स्थल है यही भ्रम सूर्यग्रहण में भी विचारने योग्य है क्यों कि चन्द्र सूर्य के ग्रहण की एक ही व्यवस्था है केवल इतना ही भेद है कि सूर्यग्रहण में बीच चन्द्र और चंद्रग्रहण में बीच पृथ्वी होती है।

किञ्च—जब सूर्य और पृथ्वी के बीच में चन्द्र आ जाता है तब चन्द्रमा जो सूर्य के प्रकाश से प्रकाशावरण है श्याम ही समझा जाता है उस की छाया पृथ्वी पर पड़ती है तब भूमि वासियों को सूर्य स्पष्ट नहीं दीखता जैसी चंद्र की छाया पड़ती है वैसा ही सर्वग्रासी वा एक देश ग्रासी दीख पड़ता है उसे सूर्यग्रहण कहते हैं इस में यह पूछा जाता है कि चंद्रमा की छाया पृथ्वी पर चौड़ती हुई (चित्र न० १ के समान) पड़ती है वा सिकुड़ती हुई (चित्र न० २ की तरह) पड़ती है?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यदि न० १ के समान पड़ती है तो सर्व देश निवासियों को सूर्यग्रहण दिन में एकसा दृष्टि पड़ना चाहिये सो माना नहीं कहीं सूर्यग्रहण होता है कहीं नहीं होता, यह चंद्र की छाया को चौड़ती पड़ती मानना प्रत्यक्ष बाधित है देखो न० ७१ में कि पृथ्वी पर छाया रकाबी की रकाबी के बराबर पीछे ऊंची होने पर घटती जाती है तब चंद्र तो पृथ्वी से २४०००० मील दूर है, उस की छाया पृथ्वी पर अधिक चौड़ती हुई अधिक पडे यह असम्भव है यदि चाहो तो एक थाली को पृथ्वी पर धर कर देख लो छाया थाली के बराबर पडेगी और सूरज की तरफ ज्यों ज्यों जायगी घटती जायगी।

भावार्थ—सूर्य के प्रकाश से छाया ऊंचे चढे जाने पर नष्ट हो जायगी यदि ऐसा ही माना जाय कि चंद्रमा की छाया पृथिवी पर घटती जाती है चित्र न० २ के मूजिब तो यह आया कि सर्व देश निवासी जो ३-४ हजार मील के फासले पर हैं उन को सूर्यग्रहण न दीखना चाहिये सो दीखता ही है यह दोष इस में और आता है कि हिन्दुस्तान में पड़ा ग्रहण विपक्ष जो अमरीका जिस में नहीं दीखना चाहिये और दीखता है ही यदि कहैं वहां तो रात्रि होती है दिन ११ घंटे बाद होता है तो १०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११घंटे पृथिवी घूमती है तब वहां दिखाई देता है अबयह बात निश्चित हुई कि ग्रहण २२-२४ घंटे तक भी होता है सो होता नहीं क्योंकि चंद्रमा की गति पृथिवी की घूम से बहु गुणी से भी ठीक नहीं होती, तब अति वेग वाली चाल का चंद्रमा जो गगन में भी पृथिवी के साथ दौड़ता है और प्रदक्षिणा भी देता है उस से २२-२४ घंटे का ग्रहण कैसे पड़ सकता है इस लिये पृथिवी सूर्य के बीच चंद्रमा आने से ग्रहण पड़ता है यह असत्य है। सूर्य चन्द्रग्रहण में और ही कारण है जो शास्त्रान्तरों से ठीक होता है।

किञ्च—वादी कहते हैं कि चन्द्रमा पृथ्वी की प्रदक्षिणा में घूमता है इस कारण जब पृथ्वी, चन्द्र सूर्य के बीच आ जाता है तब उस की छाया चन्द्रमा पर गोल पड़ती है इस कारण धरती गोल है और ग्रहण पड़ता है चन्द्रमा धरती की प्रदक्षिणा देता है ये तीन बातें सिद्ध होती हैं ऐसा ही होय-माना। चन्द्रमा धरती की प्रदक्षिणा देता है तब धरती घूमती है या स्थिर है?

उत्तर—वह भी घूमती रहती है इस में क्या हानि।

हानि तो कुछ नहीं जो धरती अपने स्थान पर घूमती रहे तो वह एक स्थिर ही के समान है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परन्तु पूरी हानि तो यह है कि वादी कहते हैं कि वह एक मिनट में १११० मील सूर्य की प्रदक्षिणा में दौड़ती है फिर उस के साथ चन्द्रमा की प्रदक्षिणा कैसे बने ? अच्छा उस में क्या हानि जैसे एक लट्टू घूमता भी है और चक्कर भी देता है ऐसे ही इस की हालत है। ऐसे ही हो, परन्तु यह तो कह दीजे कि धरती जब दौड़ती है तब चन्द्रमा उसके साथ दौड़ता है या नहीं ? यदि दौड़ता है फिर उस की चाल जैसे एक मिनट में धरती १११० मील चली जब चन्द्रमा जो धरती की प्रदक्षिणा २७। दिन में पूरी कर लेता है वह एक दिन में धरती के साथ १५८८४०० मील दौड़ा फिर प्रदक्षिणा देकर ३५६। दिन में १३ या १४ बार घूमेगा उस में चन्द्र की रफतार एक मिनट में क्या लाखों मील की न होगी ? होगी। जब चन्द्रमा की दौड़ ऐसी है तब उस पर धरती की छाया किस समय पड़ सक्ती है और ६, ६ घंटे ग्रहण कैसे पड़ सक्ता है जिस पर भी सर्व ग्रासी। कुछ विचार कर वार्त्ता कहना ठीक होता है इस कारण न तो धरती घूमती है न चंद्रमा और न ग्रहण ही इस कारण से होता है। यदि धरती को स्थिर मान ली तो चन्द्रग्रहण हो भी सकता है यह नकशे जो बालकों को दिखाते हो उन में भी धरती स्थिर नहीं दिखाते हो इस कारण धरतीका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घूमना दौड़ना सूर्य की प्रदक्षिणा देना चन्द्रमा धरती के गिर्द घूमता है इस ही से ग्रहण पड़ता है, यह कहना स्वप्न अवस्था में राज्य संपदा का भोगना है कुछ सार भूत नहीं है इस का विवेचन नं० ५ में भी कर चुके हैं वहां से देख लो।

जैसे चन्द्रग्रहण होता है तैसे ही चन्द्र बीच में आने से सूर्यग्रहण होता है परन्तु दोनों में छाया पडना विरुद्ध है चन्द्रमा पर धरती की छाया पडती बार छाया को बढ़ा दिया है और सूर्य पर छाया पडती बार छाया को घटा दिया है सूर्य के पास ज्यों २ पिण्ड जायगा त्यों २ छाया घटेगी यह वादी के स्वकृत है। नं० ७१ में। फिर चन्द्र पर छाया धरती की बढ़ कर पडती है तातै गोल छाया से पृथिवी को गोल बताया और सर्व ग्रासी वा चिर-स्थाई ग्रहण पडना साधा सो यह प्रत्यक्ष बाधित है। छाया चन्द्रपिण्ड की छोटी पडेगी और उस की चाल प्रदक्षिणा में बेगवान होने से मिनटों से अधिक काल तक ग्रहण न होने देगी— यह शङ्का का स्थान मध्यस्थ पुरुषोंको अवश्य विचारणीय है।

नम्बर ५१ का विवेचन

सूर्य का व्यास ८६७००० मील है।

भावार्थ—धरती से सूर्य १५ लाख गुना बड़ा है। और स्थिर है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शङ्का—जब धरती के गोल होने में वा घूमने में अनेक बाधा दिखा चुके हैं। तब सूर्य स्थिर होना असम्भव है और प्रत्यक्ष दृष्टि से भी बाधित है, सब को गमन करता ही दृष्टि पड़ता है और यही सब के अनुभव गोचर है। इस के स्थिर होने का बाह्य कोई लिंग नहीं है जिस से अनुमान किया जाय कि स्थिर है। यदि पृथिवी का घूमना ही लिंग किया जाय तो वह पूर्व सदोष बता चुके हैं। और प्रकाशवान पदार्थ छोटा सा भी दूरी पर होने से कुछ छोटा दीख पड़ता है। यदि गणित से देखा जाय तो ८३००००० मील की दूरी पर तिष्ठता सूर्य, पृथ्वी जितनी बड़ी तुम ने मानी है उतना भी नहीं हो सकता तब १५ लाख गुना कहना असम्भव है और दूर होने पर यदि तुम्हारे कथन से जब छोटा दीखना ही इष्ट किया जाय तो प्रातः काल में सूर्य जो लगभग ४००० मील पृथ्वी से दूर है वह आकाश में अति बड़ा क्यों दीखै और मध्यान्ह काल में निकट है तब बड़ा दीखना चाहिये सो छोटा सा दीखता है तातै सूर्य को पृथ्वी से १५ लाख गुना कहना (न० ५४ में) शङ्का का स्थान है अथवा (न० ५३ में) १३ लाख गुना कहने से महाशङ्का का स्थान है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूसरा दोष यह है कि पृथ्वी से असंख्य मील दूर जो ध्रुव तारा है अति दूरी के कारण उस पर पृथिवी की छाया तो पड़ती नहीं, सूर्य का प्रकाश पूर्ण रूप से पड़ता है तब सूर्य की ज्योति से उस की मंद ज्योति होने से रात्रि वा दिन में ध्रुव नहीं दीखना चाहिये। यदि कहै कि रात्रि में नेत्रों के ऊपर धूप का तेज न रहने से दीखता है दिन में धूप का तेज नेत्रों पर पड़ता है इस कारण दिन में नहीं दीखता। तब जहां नेत्रों पर सूर्य के प्रकाश का तेज न पडे ऐसे स्थान वा कोठे के भीतर जहां रात्रि समान अंधेरा होय तहाँ से तो दीखना चाहिये सो दीखता नहीं। इसी प्रकार और तारे भी जिन पर पृथिवी की छाया नहीं पड़ती तथा जिन पर सूर्य का प्रकाश है ऐसे प्रायः बहुत से तारे रात्रि दिन में नहीं दीखने चाहिये और रात्रि में सब दीखते हैं दिन में नहीं यह तीसरा दोष है। इस से यही निरधार होता है कि भ्रमण करती गोल पृथिवी नहीं है ध्रुव तारों के स्थिर दृष्टि पड़ने से पृथिवी स्थिर और सूर्य चर है।

महा गणित दोष जो न० ५३ में कह चुके हैं

न० ५३ में सूर्य पृथिवी से १३ लाख गुना है और न० ५४ में १५ लाख गुना बड़ा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वादियों के ये दोनों नम्बर परस्पर विरुद्ध हैं तातै स्वयं शङ्कावान हैं।

एक मतानुयायी दो तरह कहने वालों में कौन सा बचन सत्यार्थ माना जाय छोटी सी गणित में लाखों करोड़ों मील का अंतर !

नम्बर ५२ का विवेचन।

सूर्य की तरह और भी तारे स्थिर और परिवारों के केन्द्र हैं।

भावार्थ—जैसे सूर्य स्थिर तैसे ध्रुवतारे स्थिर हैं।

शङ्का—ध्रुवतारा जिस को हम स्थिर देखते हैं वह वादियों के बाधा करने वाला है क्यों कि जब पृथिवी घूमती है तब स्थित पुरुषों को वह तारा स्थिर नहीं दीखना चाहिये जैसे सूर्य स्थिर है, और स्थिर नहीं दीखता। प्रातःकाल अन्य दिशाओं में दीखता है और सन्ध्या समय अन्य दिशाओं में दीखता है, तैसे ही ध्रुवतारा रात्रि में प्रथम पहर में अन्य दिशा में और चतुर्थ पहर में अन्य दिशा में दीखना चाहिये क्यों कि वह (ध्रुव तारा) स्थिर है और पृथ्वी अनिस्थिर है यह प्रथम दोष है।

यदि यहां कोई कहै कि ध्रुव तारा बहुत दूरी पर (असंख्य मील) है जिस से एक तरफ ध्रुव रूप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीखता है यह भी बाधित है क्यों कि असंख्य मील दूरी बताने की कोई नाप की गणित वा पैमाना घूमती पृथिवी पर बनता नहीं, यदि यह असत्य कल्पना मान भी ली जाय तो भी ध्रुव तारा घूमती पृथ्वी पर स्थिर नहीं दृष्टि पड़ सक्ता जैसे अति दूर १२ करोड़ मील पर जो सूर्य वह एक दिशा में स्थित नहीं दीखता है।

किञ्च—सूर्य की तरह ध्रुव तारों को स्थिर कहना भ्रम जनक है क्यों कि प्रथम तो प्रत्यक्ष बाल गोपाल वा विद्वानों के अनुभव में सूर्य चलता हुआ दृष्टि पड़ता है यदि पक्ष पुष्ट करने को रेल वा नाव का उदाहरण दे कर कहें कि नाव में वा रेल में बैठे को नाव के चलने पर पृथिवी स्थिर दीखती है परन्तु पृथिवी चलती है तब सूर्य का स्थिर दीखना सत्यार्थ ही है यह कहना भी भ्रम है क्यों कि नाव के और रेल के चलने वा स्थिर होने का भ्रम आकाशी जहाज़ों से दूर हो सकता है तैसे ही आकाशी जहाज़ से पृथिवी का चलना स्थिर का भ्रम दूर हो सकता है क्यों कि पृथ्वी पर नदी का पानी जीव जन्तु चलते हुए चलते दीखते हैं स्थिर २ दीखते हैं यह आकाशी जहाज़ का हेतु प्रत्यक्ष है सो आकाशी जहाज़ में बैठ कर देखते हैं तो पृथ्वी स्थिर दीखती है, तब सूर्य स्वयं चलता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो गया, क्यों कि वादी ने पृथिवी को चलती मान कर सूर्य को स्थिर माना है इस के परीक्षा करने को आकाशी जहाज़ का हेतु स्पष्ट है प्रत्यक्ष अबाधित है, यदि इस प्रत्यक्ष हेतु से पक्ष टूटना जान यह संकल्प खड़ा कर कहै कि स्थिर आकाशी जहाज़ भी साथ साथ घूमता है यह कहना ठीक नहीं है, पृथ्वी तो पूर्व घूमती मानी है आकाशी जहाज़ पश्चिम आदि सब दिशाओं को घूमता है इस पर भी यह कहै कि वायुमण्डल आकाश में है पृथ्वी के सर्व तरफ वह आकाशी जहाज़ को पृथिवी के साथ ले जाता है यह संकल्प ठीक नहीं, जो आकाशी जहाज़ परीक्षा का स्थान था वह पक्ष साधन को हेतु बनाया वह भी वायुमंडल की परीक्षा कल्पना होने से असम्भव है देखो नं० १२ में इस लिये व्यर्थ क्यों भ्रम करना कि पृथिवी चलती है और सूर्य स्थिर है। ध्रुव तारे को भी स्थिर मानना शङ्का का स्थान है क्योंकि जैसे सूर्य को स्थिर माना है तैसी ही ध्रुव को स्थिर माना है, तब घूमती हुई पृथिवी पर सूर्य पूरब से पश्चिम को चलता दीखता है तैसे ही सन्धा समय ध्रुव उत्तर में दिखाई देता है इस लिये सवेरे के वक्त पृथिवी के देखने वालों को चलता हुआ दूसरी दिशा में दीखना चाहिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्योंकि पृथिवी घूम गई सो दीखता नहीं है इस लिये शङ्का का स्थान है।

नम्बर ५३ का विवेचन।

सूर्य एक बड़ी गेंद है और ज़मीन से १३ लाख गुना है।

शङ्का-यह नं० ५४ नम्बर के विरुद्ध है क्योंकि उसमें सूर्य १५ लाख गुना माना है।

इस कारण ग्रहण करने योग्य नहीं है।

नं० ५४ का विवेचन।

सूर्य पृथिवी से १५००००० गुना है।

शङ्का—यदि १५००००० गुना है तो दूसरे इसी मत के अनुयायी नं० ५३ में १३००००० तेरह लाख गुना बताते हैं किस की बात सत्य मानी जाय? जो मन से संकल्प किया सो लिख दिया, गणित में तो १ एक गुने का अन्तर भी बाधित है, तब २००००० गुने का अन्तर लिखना क्या बालकों का खेल नहीं है? गणित के सन्मुख इतना अंतर पड़ नहीं सकता। क्योंकि वह तो सत्य वादियों की मानी सत्य रूप अकाट्य एक रूप है। यहां २०००००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दो दो लाख गुने का अंतर कहना किसी गणितज्ञ के हृदयस्थ न होगा। इस कारण यह लिखना असम्भव है।

सूर्य तारों में सब से छोटा है तो भी पृथिवी से १५ लाख गुणा है और सब नक्षत्रों से मिल कर ५०० गुणा है। यदि अपने परिवार (Solar System) से मिल कर ५०० गुणा लिखा है तो वाधित है क्यों कि नं० ६१ में सोलर सिष्टम असंख्य है तब सूर्य उन से ५०० गुना कैसे है और यदि तारे सितारे ग्रहों से ५०० गुना लिखा है तो अत्यन्त वाधित है क्यों कि तारे सितारे ग्रहअनन्त माने हैं देखो नं० ६१

इस लिये दोनों प्रकार वाधित होने से उक्त वार्ता वाधित है।

नं० ५५ का विवेचन

पृथ्वी का फासला सूर्य से ८३००००० मील दूरी वा ऊंचाई पर है।

शङ्का—दूरी और ऊंचाई की नाप हो सकती है, परन्तु दूरी पर झंडी गाड़ कर उस में समकोन बना कर गणित से दूरी वा ऊंचाई मालूम करी जाती है वह सब स्थिर जमीन पर और स्थिर पदार्थ की ही जानी जाती है। यहां न तो जमीन स्थिर क्योंकि एक मिनट में १०७ मील घूमती है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११९० मील दौडती है फिर ऐसी अथिर व्यवस्था में सूर्य की दूरी वा ऊंचाई किस रीति से जानी जाय जिस पर और असम्भव वार्त्ता कि सूर्य भी आध घन्टे में १०००० मील लिरा की तरफ दौड़ रहा है फिर ऐसे चर पदर्थों की दूरी का नाप करना और दूरी की नाप में कौण बनाने से नाप होती बताना किसी विचारवान के हृदय में प्रवेश कर सकता है?—कदापि नहीं॥ और भी कोई कारण कहा जाय तो वह भी विचार करने से भ्रमजनक ही वार्ता ठहरेगी तातै सूर्य को पृथिवी से ८३०००००० मील दूर बताना शङ्का का स्थान है क्योंकि किसी किताब में दूरी १२ करोड़ की लिखी है सो क्यों लिखी जाती? गणित से नाप में ७२०००००० मीलका फ़र्क कहना क्या गणित लड़कों का ख्याल है? इस का कारण यह मालूम होता है कि मन माने संकल्पों से, जिनके मन में जैसा आया वह लिख दिया। यहां कोई कहै कि पहले इतना ही समझ में आया था वह लिख दिया पीछे अधिक समझ में आने से अधिक लिख दिया इस में क्या हानि हुई? हानि तो विचार किये बहुत हैं क्यों कि दोनों बचनों में सत्यता नहीं रही आगे और किसी ने अधिक लिख दिया तो निश्चय न होने से किस की प्रतीति करी जायगी?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस कारण असत्य प्रलाप की प्रतीति विद्वानों को कैसे रुचि का कारण होय ?

यदि सूर्य को स्थिर मानो जाय जैसा कि बालक को स्कूलों में पढ़ाया जाता है वा उस को यन्त्र द्वारा दिखाया जाता है तब तो सम्भव मान भी लिया जाय परन्तु जब सूर्य आध घन्टेमें १०००० मील दौड़ रहा है तब तो उस की प्रदक्षिणा में पृथ्वी दौड़ती कहना असत्यार्थ है क्यों कि दौड़ते सूर्य की प्रदक्षिणा देना असत्यार्थ है। प्रदक्षिणा (चारों तरफ घूमना) तब हो सकती है जब सूर्य स्थिर होयजब सूर्यकी चाल अति वेगसे है तब उसकी प्रदक्षिणा देना असम्भव है और सूर्य की, आकर्षण शक्ति से पृथ्वी के घूमने की भी असम्भवता है क्यों कि आकर्षण शक्ति एक शलाका के समान सूर्य में है यदिइस में कुछ गड़बड़ है तो, आकर्षण शक्ति में भी गड़बड़ होती है इस कारण आकर्षण शक्ति जो सर न्यूटन ने सङ्कल्पी है उस की बाधा दिखा चुके हैं इस कारण सूर्य का चलना और पृथ्वी का घूमना परस्पर विरोधी है और सूर्य की चाल का अति वेग से कहना विलस्तों से आकाश का नापना असम्भव है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० ५६-५७का विवेचन।

सूर्य परिवार सहित लिरा तारे की तरफ घंटे में १०००० मील की रफ़्तार से जा रहा है।

शङ्का—पहले बडे बडे पश्चिमी ज्योतिषियों ने सूर्य को स्थिर माना था तत्पश्चात् सर न्यूटन ने आकर्षण शक्ति के प्रभाव से घूमना माना तत्पश्चात् मिस्टर हार्शल ने चलता माना। जब हम यह विचार करते हैं कि तीनों विद्वान् पश्चिमी विद्या में एक से एक अधिक था परन्तु न मालूम कि इनके परस्पर विश्वास क्यों विरुद्ध हो गया? इससे यही निरधार होता है कि इन्होंने कुछ दूरदर्शी यन्त्रों के द्वारा मन माने संकल्पो से चाहा सो लिख दिया और भूगोल भ्रमण करती हुई पक्ष का पक्षपात करते रहे परन्तु उसकी त्रुटियों पर ध्यान न दिया इसी कारण मत विरोध हुआ-अब इसके विवेचन में हम बड़ी शङ्का करते हैं। वह यह है:—

जब सूर्य लिरा की तरफ आध घंटे में १०००० मील दौड़ रहा है और जिसकी प्रदक्षिणा के लिये पृथ्वी की चाल अति वेगवान होने से आध घंटे में ३३३००००० मील हुई जब इस रीति से सूर्य लिरा की तरफ जाने में पृथ्वी दौड़ती है और उस पृथ्वी को ३६५ साधिक दिन में सूर्य की प्रदक्षिणा देती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है तब उक्त दिनों में सूर्य तो लिरा की तरफ कितने मील गया और पृथ्वी प्रदक्षिणा में साथ साथ वा सब तरफ़ की प्रदक्षिणा में कितने मील दौड़ी ? इस दौड़ को न विचार पृथिवी को सूर्य की प्रदक्षिणा देती है और घूमती भी है कहना केवल दरिद्री का मनोराज्य कल्पना असम्भव है, जब पृथिवी का घूमना और दौड़ना असम्भव है तब सूर्य लिरा की तरफ दौड़ता कैसे सम्भव किया जाय ? यातै असम्भव है ।

नं ५८ का विवेचन

सूर्य के परिवार के ग्रहों का नक़शा देखो नं० ५७ में ।

शङ्का—ये हमारा सूर्य अपने परिवार सहित एक सेकिंड में ११ मील की तेज चाल से डेल्टा लायरी तारे की तरफ जा रहा है उस की तीसरी परिक्रमा में पृथिवी जिस पर ज्योतिषी देशी विदेशी भी जा रहे हैं बड़ी बड़ी दूरदर्शी दुर्बीनों के लिये परन्तु इसी सोलर सिष्टम (Solar System) की देख भाल में उन की बुद्धि कार्य नहीं करती क्यों कि अरबों मील की दूरी पर तो नैपच्यून है इस से भी आगे केतु और उल्काओं के सिवाय ७००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रहों में भी सूर्य का परिवार असंख्य जगत में है जब इस पृथिवी पर दूरदर्शी दूरबीन से देख कर विद्वान नैपच्यून से आगे के तारे को न देख सके जो कि अनगणित है तब वह आगे को चलते हुए पीछे के असंख्य मीलों पर दूसरे तीसरे आदि असंख्य सूर्यों को वा उस के परिवार को कैसे देख सक्ते हैं जो कि असंख्य गुणित असंख्य मीलों पर जाने गये हैं देखो स्टोरी पत्र ४३३ में असंख्य सूर्य बताए हैं यह सर्व मन गढ़न्त सङ्कल्पों का तमाशा है निर्धार रूप नहीं।

नं० ५८ का विवेचन

सोलर सिष्टम की दूरी परिभ्रमण कलादि का ब्योरा जो न० ५७ में दिखा चुके हैं।

शङ्का—यह भी विवेचन न० ५८ के सादृश है तातै मन घड़न्त संकल्पों के विषय होने से मध्यस्थ पुरुषों के ग्रहण होने में महा शङ्का का स्थान है।

नं० ६० का विवेचन

चन्द्रमा में क्रांति सूर्य से होती है

शङ्का—यह कहना बाधित है क्योंकि सूर्य की किरणें उष्ण रूप हैं और जिस पर पड़ती हैं वह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भी ऊष्ण रूप हो जाता है तब चन्द्रमा ऊष्ण रूप क्यों नहीं है ? न० ३७ में देखो चन्द्रमा में ज्वाला मुखी पहाड़ बहुत थे इस लिये चन्द्रमा कुछ तो पहाड़ों की गर्मी से वा घूमने से गर्मी बढ़ती है इस कारण से, गरम था ही, फिर सूर्य की किरणों से और भी अधिक गर्म होने पर अति ऊष्ण होना चाहिये था, अब क्यों ठंडा हो गया ? और सूर्य में से नित प्रति गर्मी खर्च होती रहती है तिस पर भी ठण्डा न पड़ा, यह विरुद्ध कथन कैसे प्रतीत करने योग्य होय ? बिना हेतु के चाहे जैसा संकल्प कर लेना चन्द्रमा की नाईं पक्षपातियों को तो आनंदकारी होता है और मध्यस्थों को सूर्य की नाईं आताप करने वाला है।

किञ्च—यदि चन्द्रमा में क्रांति नहीं है सूर्य की क्रांति से क्रांतिवान होता है तो रात्रि में चन्द्रमा को पृथ्वी की प्रदक्षिणा करते समय उस (पृथ्वी) की आड़ से उस (चन्द्रमा) की क्रांति घट सकती है परन्तु जब चन्द्रमा दिन में सूर्य के सामने तिष्ठ रहा है जिस का पृथ्वी से कुछ सम्बन्ध नहीं तब चंद्रमा सर्व क्यों नहीं दृष्टि पड़ता ? वा जब मासकी शुक्ल पूर्णमासी को सूर्य से अधिक दूर होने पर अधिक क्रांति और मासकी वदी २—३ को सूर्य के निकट आने पर चंद्र की न्यून क्रांति का होना कैसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निश्चय किया जाय कि चंद्रमा क्रांति रहित है और सूर्य की क्रांति से क्रांतिवान् होता है-यह संकल्प मात्र वार्ता भ्रांति रूप है।

किंच—सूर्य की किरणों से बडे २ पहाड़ और शीत के स्थान भी तप्तायमान हो जाते हैं अधिक क्या लिखें आतशी शीशे वा पत्थरों से अग्नि झरने लगती है ऐसी महा ऊष्ण सूर्य की किरणों से चंद्रमा ऐसा शीतल हो जाता है कि जिस के योग से चंद्र क्रांतिमणियों से पानी झरने लगता है अथवा तीक्ष्ण दाह के करने वाले ऊष्ण पदार्थ भी शीतल हो जाते हैं। भला ये सूर्य की ऊष्ण किरणें कैसी जिन के योग से चंद्रमा शीतल हो जाता है देखो न० ३७। ऐसा विरुद्ध रूप आश्चर्यजनक कार्य किसी ने न सुना होगा ऐसे हेतुओं को शङ्का का स्थान क्यों न समझा जाय ? भला वादियों के ऐसे हेतु न होते तो अचला स्थिर पृथ्वी को सचला भ्रमती कैसे बनाते ? और गगणचर खचर आदि हैं सार्थिक नाम जिस के ऐसे सूर्य को जो निरन्तर गगण में भ्रमण करता है स्थिर कैसे बताते ? परन्तु चन्द्रमा जो सूर्य की भांति न गगण में भ्रमण करता ही माना यह उस पर बड़ी कृपा की जो उस के स्वभाव को न पलटा !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस कारण उक्त हेतु भ्रांति रूप है ।

किंच—चंद्रमा पृथ्वी के चारों तरफ घूमता है तब पृथ्वी बीच में आ जाती है उस वक्त चंद्रमा पर जितने २ अंश पृथ्वी की छाया पड़ती है उतने उतने अंश श्यामता रहती है और जब पूर्ण छाया पड़ती है तबचंद्रमा बिलकुल नहीं दीखता है और जब घूमने में उस (चन्द्र) पर छाया नहीं पड़ती है तब पूर्ण दीखता है आगे के चित देखो । यह दशा अमरीका वा उस के पृष्ट भाग हिन्दुस्तान में रात्रि समय दीखनी चाहिये परन्तु परस्पर दोनों देशों में विरुद्ध पड़नी चाहिये सो पड़ती नहीं है तब पृथ्वी का घूमना असंभव होता है और दिन में चंद्रमा का कोई सम्बंध पृथ्वी की आड़ से नहीं है क्योंकि न० ४३ में स्वीकृत है जैसे पृथ्वी सूर्य की प्रदक्षिणा में पूर्व को घूमती है वैसे ही चंद्रमा पूर्व को घूमता है इस कारण दिन में पूर्व स्थित जो सूर्य उस की किरण चंद्रमा पर पड़ी तब हिन्दुस्तान में मनुष्यों को चंद्रमा दिन में सदैव इकसार दीखना चाहिये और विपक्ष में अमरीका वाले मनुष्यों को हिन्दुस्तान से विपरीत दीखना चाहिये क्योंकि हिन्दुस्तान से अमरीका पृथ्वी के विपक्ष भाग में है और चन्द्रमा दोनों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देशों में दिन वा रात्रि में एकसा दीख पड़ता है कुछ अंतर नहीं-इस से स्पष्ट होता है कि न चंद्रमा पृथ्वी की प्रदक्षिणा देता है न सूर्य की रोशनी से प्रकाशवान् होता है किन्तु स्वयं क्रांतिवान् है।

किञ्च—चन्द्रमा में रोशनी सूर्य से होती है यह कहना बाधित है क्यों कि चन्द्रमा यदि शीतल रूप बर्फ़ सा माना जाय तो सूर्य की ऊष्ण रोशनी के लगते ही पिघल के जल रूप हो कर नष्ट हो जाना चाहिये और कठिन रूप जैसा पत्थर ऐसा माना जाय तो सूर्य की ऊष्णरोशनी से उस में अग्नि झड़नी चाहिये ऐसे आतशी पत्थर से उस की क्राँति ऊष्ण होनी चाहिये सो है नहीं चन्द्रमा प्रत्यक्ष शीतल है सूर्य प्रत्यक्ष ऊष्ण है तातै विरुद्ध कार्य के देखने से मालूम होता है चन्द्रमा शीतल किरण धारण करता है और सूर्य ऊष्ण किरण धारण करता है सूर्य से चन्द्र में क्रांति होती है यह असम्भव है यदि अपनी पक्ष दृढ़ करने को यह कहै कि चन्द्रमा क्रांति धारी है तो सदैव क्रांतिवान् क्यों न रहै? जब उस पर पृथ्वी की छाया पड़ती है तब काला दीखता है और जब सूर्य की किरण पड़ती है तब रोशनी देता है यह इसी जाति के परमाणुओं से बना है। यह कहना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिना विचारे है क्यों कि परमाणू जो शीतल होते हैं वह उस के योग से उष्ण हो जाते हैं जो सद हेतु दे चुके हैं वह ही सम्भव होता है—यदि पृथ्वी की छाया का सङ्कल्प कर पक्ष को ठीक करे यह पक्षपात है देखो पास की कृष्णपक्ष में १ से लेकर १४ ताईं पृथ्वी पर दिन में सूर्य भी दीखता है और चन्द्र भी। पृथ्वी तीसरी है वह दोनों से अलग जिस पर से हम क्या देखते हैं कि सूर्य के सामने चन्द्र में नित प्रति $\frac{१}{१५}$ भाग श्यामता बढ़ती जाती है यदि पृथ्वी की छाया से श्यामता बढ़ती थी सो पृथ्वी हमारे पैरों के नीचे जुदी है जिस से चन्द्रमा व सूर्य की आड़ का कुछ सम्बंध नहीं फिर दिन में चन्द्रमा की श्यामता क्यों घटती बढ़ती दिखाई देती है ? पृथिवी तो बीच में आड़ करती नहीं और चन्द्रमा में सूर्य के सामने श्यामता घटती बढ़ती ही है। जब पृथिवी बीच में नहीं तब चन्द्रमा की क्रांति कृष्णपक्ष के दिनों में सदैव एक सी रहनी चाहिये क्यों कि सूर्य चन्द्रमा के सामने पूर्ण रूप से अपनी क्रांति चन्द्रमा को दे रहा है सो है नहीं—तातै यह कहना कि सूर्य से चन्द्रमा में क्रांति होती है महा शङ्का का स्थान है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० ६१ का विवेचन

सूर्यों की गणना (सूर्य तारे असंख्यात हैं)

शङ्का—असंख्यात का कहना नेत्रों से प्रत्यक्ष नहीं है और उस का हेतु कोई दीखता नहीं है जिस से अनुमान किया जाय और वादियों ने सर्वज्ञ प्रणीत आगम माना नहीं है जिस से माना जाय फिर यह कहना कि तारे असंख्यात हैं महा शङ्का का स्थान क्यों नहीं है ? यदि पक्ष पुष्ट करने को कहै कि इस का हेतु है क्यों कि आकर्षण शक्ति से परस्पर तारे थंभे हुए हैं, इस युक्ति से निर्धार हुआ कि एक से एक खिचे हुए हैं तो परस्पर गणना प्रतीत होने पर अनंतानंत का कहना सत्यार्थ है। यह कहना बिना स्वसिद्धाँत के समझे है, तुम्हारे ही यह माना है कि पृथ्वी के वायुमण्डल में आ कर तारे नष्ट हो जाते हैं तथा आपस में टकरा कर टूट जाते हैं यह दोनों वार्ता आकर्षण से खिची हुई वार्ता को नष्ट करती है क्यों कि जो परस्पर खिचे हुए हैं उन में से अपना स्थान छोड़ वायु-मंडल में आना वा आपस में भिड़ कर टूट जाना दोनों असंभव हैं इस कारण आकर्षण से खिचे हुए होने से तारों को अनन्त मानना भ्रम है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किन्तु—वादियों ने सर्वज्ञ तो माना नहीं है बिना सर्वज्ञ के यह ज्ञान-कि सूर्य तारे अनंतानंत हैं क्या प्रमाण भूत हो सकता है? इन्द्री विषय और दुर्बीन आदि विषय यंत्रों के विषय से जिस का पार न मिले ऐसे बचन का कहना बिना सर्वज्ञ के प्रमाण हो सकता है? कदापि नहीं व्यर्थ इस बात के कहने वाले अपने शिष्यों को यद्वा तद्वा कह कर उन के हृदय में अपना सर्वज्ञत्व का श्रद्धान करा देना वा उन की वार्ता सुन कर कोई अभिमान के पहाड़ पर चढ़ कर सर्वज्ञ के वाक्य को भी असर्वज्ञ का वाक्य बना दे, इस से पदार्थ का सत्यार्थ विवेचन नहीं हो सकता है। पदार्थ की सत्यता तो तब ही वास्तविक होगी जब जैसा वक्ताने जाना होय वहां तक ही वार्ता कहना। इस कारण बिना ज्ञान के तारों को क्यासों से अनंतानंत (असंख्यात) बताना महा शङ्का का स्थान है। जिस को जितना ज्ञान होता है वह उस ही विषय में चरितार्थ होता है अविषय में नहीं, अधिक क्या लिखा जाय? जिस ने जिस देश को नहीं देखा है न कभी किसी रीति से परिचय हुआ है वह उस देश का हाल नहीं कह सकता है।

इस कारण तारों को अनन्त बताना भ्रांति है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किंच—सूर्यों को असंख्यात बताना तब तो स्वयं सूर्यों का परिवार (Solar System) असंख्यात बताना ही पडेगा यह वार्त्ता किसी दूरदर्शी दुर्बीनादि यंत्र से कोई बतावें जैसा कि अलंघाम (Alangham) साहब बता रहे हैं। किस स्थान पर से। छोटी सी ७८२६ मील व्यास वाली पृथ्वी जो कि सूर्य के साथ घूमती व दौड़ती है। जहां से अपने सूर्य का परिवार जिस को बड़ी से बड़ी दुर्बीन से दृष्टि नहीं पडता है तो वह कैसे बता सकता है कि सूर्य असंख्यात हैं।

भावार्थ—अपने एक सूर्य के परिवार को जो न देख सके ऐसा पुरुष कौन से यंत्र से देख कर कहता है कि सूर्य असंख्य हैं। यदि कहै तो वह पुरुष कहै जो बडी असंख्य मीलों के विस्तार वाली बिना घूमती दौड़ती स्थिर पृथ्वी पर बैठा होय वह ही पुरुष उन असंख्य चलते हुए सूर्यों की संख्या यंत्र से वा दिव्य ज्ञान से कह सकता है अन्यथा कहना महा शङ्का का स्थान है।

नम्बर ६२ का विवेचन।

सूर्य की सतह में एक वर्ग फुट गर्मी १६ टन कोयलों की गर्मी के बराबर है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शङ्का—प्रथम तो यह पृथ्वी निवासियों का कथन संदिग्ध है क्योंकि गर्मी पृथ्वी पर सदैव किसी स्थान में एक सार नहीं होती है तब कैसे किसी स्थान से सूर्य की गर्मी का विश्वास कर गणित किया जाय। यदि ऐसा न होने पर मान भी लिया जाय तो न० ७२ में लिखा है कि सूर्य गर्मी रोज २ खर्च होती है परन्तु उस को मिलती नहीं है इस से वह किसी दिन ठंडा पड जायगा इस कारण सूर्य में बडा अंदेशा है

भावार्थ—सूर्य किसी दिन नष्ट हो जायगा ऐसी अनागत काल की वार्ता लिखना इन्द्री ज्ञान वालों को एक बडे कौतुक का स्थान महा शङ्का का कारण है। यदि कोई कहै कि बडे २ दूरदर्शी यंत्रों से देख कर लिखा है सो दूरदर्शी यन्त्र वर्तमान में दूरी पर ठहरे हुए पदार्थों को बता सक्ता है न कि अनागत काल की व्यवस्था को बता सके। इस कारण शङ्का का स्थान होने से उक्त हेतु भ्रांति रूप है।

नम्बर ९३ का विवेचन।

कोई समय ऐसा आवैगा जो दिन १४०० घंटे का होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शङ्का—पृथ्वी की प्रदक्षिणा में चन्द्रमा का समय जितना लगता है उतने समय में पृथ्वी अपनी घूम पूरी करेगी।

भावार्थ—पृथ्वी बहुत धीमे घूमेगी उतना काल १४०० घंटे का होगा और वह एक दिन होगा और उतने ही समय में चन्द्रमा घूम जाया करेगा दोनों का दिन घूम बराबर होगी।

शङ्का—यह वार्ता अनेक दोषों कर युक्त कैसे स्वीकार की जाय। जब चन्द्रमा और पृथिवी का संलग्न होकर एक समय में अक्ष संचार होगा तो पृथिवी पर दिवस कभी न होगा क्योंकि चन्द्रमा स्यामरूप पथिवी पर हर समय ग्रहण करेगा। और छोटा होने के सबब जहां पृथिवी पर छाया न पडेगी तहां सदैव दिन रहेगा तब मनुष्यों के दिन ही दिन रहने से रात्रि शयन आदि क्रिया का अभाव होगा और जहां रात्रि ही रात्रि रहेगी वहां खेती आदि के न होने से प्रजा कैसे जीवेगी। यदि कहै कि चन्द्रमा पृथिवी से संलग्न न रह कर दूरी पर रहेगा और अति वेग से प्रदक्षिणा देगा यह कहने से भी जिस आकर्षण गुण से चन्द्रमा पृथिवी की प्रदक्षिणा दे रहा है उसकी पोल खुली जाती है, क्योंकि उसमें मन्द चाल थी-तेज कैसे हो गई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इससे आकर्षण का बल (सर न्यूटन ने आकर्षण के बल का गणित किया है कि पास में गुणनफल वर्ग-मूल और दूरी में उलटी वर्ग हीन शक्ति होती है इससे उसके मत में त्रुटि आवेगी) और उक्त लेख परोक्ष जिनका इंद्रियों द्वारा ज्ञान होना असम्भव है, बिना सर्वज्ञ के कैसे प्रतीति के योग्य होय जिन के सर्वज्ञ का न मानना ही मुख्य धर्म है उनको कही वार्ता का क्या ठिकाना-मन घड़न्त सङ्कल्पों से मन में आया सो लिख दिया। यह कैसे सत्यार्थ हो सकता है।

किञ्च—स्टोरी पत्र ५४६-५४७ में लिखा है कि दिन ५७ गुणा क़रीब यानी १४०० घंटे का होगा और उसी पुस्तक में पत्र ५४३ में लिखा है कि पृथ्वी ज्यों ज्यों अधिक घूमेगी त्यों त्यों दिन छोटा रह जावेगा इन विरुद्ध लेखों में किस को ग्रहण करें। इस कारण दोनों लेख संदिग्ध हैं।

नम्बर ६४ का विवेचन

रोशनी की चाल फी सैकिंड १८६००० मील है सूर्य की रोशनी ज़मीन तक ८ मिनट में आती है।

शङ्का—यह लिखना कब सत्यार्थ होता है जब पृथिवी से सूर्य ८३००००० मील दूरी पर माना जाय, जब १ सैकिंड में १८६००० मील का भाग देने से ८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिनट २० सैकिंड आती हैं। यह हिसाब तो मिला लिया परंतु प्रथम इतनी ही दूरी पर शङ्का दृष्टि विकारसे होती है। यदि ऐसा ही मान लिया जाय कि प्रकाश की चाल दूसरी रीति से निकाल कर सिद्ध कर ली है तो यह भी बाधित है क्योंकि जिस तारे में अधिक प्रकाश है उस की चाल भी शीघ्र है जिस तारे में न्यून प्रकाश है उस की चाल धीमी है तातै १ सिडकं में प्रकाश की चाल १८६००० मील कहना बाधित है यदि यह बाधित होने पर भी स्वीकार कर लिया जाय तो सूर्य की दूरी पृथ्वी से १२०००००० मील मानी गई वहां पर ८ मिनट से अधिक समय सूर्य की रोशनी ज़मीन तक आने में लगते हैं यह कहना बाधित है वहां तो १० से साधिक मिनट में गणित से आती है यातै ८ मिनट से अधिक लिखना गणित से बाधित है यदि कहै कि पृथ्वी की दूरी सूर्य से वास्तव में ८३० लाख मील है तब देखो न० १७ पृथ्वी अण्डे के आकार घूमती कहना बाधित है क्योंकि गोलाकार में तो सर्वत्र ८३० लाख मील की दूरी संभवित होती है अण्डाकार में दूरी में फर्क पडता है क्योंकि दो तरफ कम और दो तरफ अधिक मानने में अण्डाकार होती है तातै सूर्य की रोशनी पृथ्वी पर ८ मिनट में आना बाधित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० ६५ का विवेचन।

सौर चक्र सूर्य से असंख्यात मीलों दूरी पर है।

शङ्का—सौर चक्र में ग्रहों उपग्रहों के सिवाय और भी परिवार है एक सूर्य का परिवार असंख्य मील की लम्बाई व्यास वाले गोल क्षेत्र में है जिस में नैपच्यून तारे तक सूर्य से अर्बों मील की दूरी का वर्णन तो वादी दूर दर्शक यंत्रों द्वारा दिखा ही चुके हैं नैपच्यून तारे के आगे भी अनेक तारे (उल्का केतु आदि ७०० के लगभग) और हैं ऐसा कहते हैं इस से ज्ञात होता है कि सौर चक्र असंख्य बहु मीलों की लम्बाई में है अब इस में विचार का स्थल यह है कि जिस पृथिवी पर हम लोग सूर्य का हाल लिख रहे हैं वह सूर्य से ८३०००००० मील दूर है और सौर चक्र लिरा एक तारा जिस की तरफ अपने प्राकृतिक स्वभाव से जा रहा है वह इतनी लम्बी दूरी पर है जिस के बहु भाग में ३०००००० मील पृथिवी की दूरी है वह पृथिवी भी सूर्य के साथ लिरा की तरफ जा रही है इस कारण पृथिवी निवासी ज्योतिषी भी उस (लिरा) की ओर जा रहे हैं वह विद्वान जब अनेक सूर्य चक्र (Solcr system) के देखने में असमर्थ है। किसी दूरदर्शक यन्त्र से उस की लम्बाई वा दूरी की थाह न मिल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सकी और उस के लिखने में असमर्थ है तो दूसरे तीसरे आदि सौर चक्र जो प्राकृतिक अवस्था से लिरा की तरफ वा और किसी तरफ जा रहे हैं वा जांयगे उन की व्यवस्था कैसे लिख सक्ता है ? और उन की व्यवस्था पृथ्वी निवासियों ने लिखी है ? देखो सर रौबर्ट ऐस बाल बडे विद्वान अपनी रची पुस्तक स्टोरी के पत्र ५४७ में लिखते हैं कि सूर्य परिवार सहित लिरा की तरफ प्राकृतिक जा रहा है और दूसरा विद्वान उसी पुस्तक के पत्र ४३३ में सूर्यों की संख्या असंख्यात लिख रहा है ऐसी व्यवस्था में यदि लिखने वाले का वाक्य असत्यार्थ माना जाय तो मूल ही भ्रष्ट होता है क्योंकि उसने सूर्य बहुत माने हैं और वह एक दिशा को प्राकृतिक स्वभाव से जा रहे हैं इस वार्त्ता को उनके बडे २ सिद्धांत कह रहे हैं जिस ने न देखा हो वह देख ले ।

यदि उस को सत्यार्थ माना जाय तो यही बोध होता है कि जिस पृथिवी पर लिखने वाला लिख रहा है वह स्थिर है और असंख्यात गुणित असंख्यात मील की है जो जैन सिद्धांत वालों ने मानी है:

बिना बड़ी पृथिवी के माने असंख्य सूर्यों का मानना असंभव है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० ६६ का विवेचन

मंगल के सिद्धांत में शंका।

मङ्गल तारे का व्यास ४२३० मील पृथिवी का व्यास ८००० मील इस कारण पृथिवी में मङ्गल से बहुत टुकडे होंयगे। भावार्थ पृथिवी से मङ्गल बहुत छोटा है तब उस के दक्षिणी उत्तरी पोल भी इसी हिसाब से छोटे हैं फिर उस मङ्गल के पोलों में थोड़ा बरफ जो कि सूर्य के प्रकाश से पिघल कर वहां जल से ३०० नहर का बहना कहना वह भी नहर २० बीस मील चौड़ी है इसको निश्चय करके लिखना कि यूमिनिडीज अर्कस सब से लम्बी नहर ३५४० मील लम्बी है। जब दक्षिणी पोलों में थोड़ी सी जगह बरफ है उस में से ३०० नहर का निकसना और बड़ी बड़ी चौड़ाई का होना किसी की समझ में आ सक्ता है? केवल मन घड़न्त सकल्प असंभव है और उस तारे पर यह कहना कि हिन्दुओं को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि एक नहर का नाम गंगा रखा गया है यह उपहास हिन्दुओं के गंगा के पुजारियों को कहना, क्या उपहास का ठिकाना नहीं है? किन्तु है ही, क्योंकि प्रथम तो पुस्तक रचियता स्वयं हिन्दू है तिस पर यह कहना कि हिन्दू बड़े प्रसन्न होंगे यह केवल हिन्दुओं की वार्ता का उप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हास करना है और अपने को सत्यवादी बनाने का साहस है। जो मन घड़न्त संकल्पों से वादी सत्य वादी नहीं हो सकता और एक विचार की वार्ता है कि जब एक नहर का नाम वहां के पुरुषों ने गंगा रख दिया तो उतनी दूर की वार्ता कैसे सुनी गई जो कि ४६०००००० मील दूरी पर है कोई टैली-फून या टेलीग्राफ तो वहां से लगा नहीं जिस के द्वारा ज्ञात कर लिया कि एक नहर का नाम गंगा है यह केवल मनघड़न्त संकल्प असंभव है और नहरों की बडी बडी लम्बाई चौड़ाई लिखना असंभव है क्योंकि छोटे से पोलों में इतना बरफ नहीं हो सक्ता जिस से इतना पानी बह सके जिस पर कि यह शङ्का खडी होती है कि बडी पृथिवी की बडी पोलों का बरफ सूर्य से पिघल कर कोई नदी रूप होकर नआ सकेगी क्योंकि पोल नीची है और पृथिवी ऊंची है वह पानी ऊपर देशों में नदी वा नहर रूप होकर नहीं आ सक्ता परन्तु न मालूम मङ्गल की पोलों का बरफ पिलग कर ऊपर देशों में कैसे चढ़ आया जो बड़ी बडी ३०० नहरों ने मङ्गल भर के देशों में खेती की तृप्ति कर दी। यह विवेचन करने से मालूम होती है कि केवल मनघड़न्त संकल्प असंभवता का प्रसार है सार रहित महाशङ्का का स्थान है और यह लिखना कि वहां के आदमी आवश्यकतानुसार नहर खोदते जाते हैं जब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गरमी में बरफ गलती है तो वे उससे बने हुए जल को उन जगहों में ले जाते हैं जहां अभी खेती हो सकती है यह कहना बाधित है क्योंकि वहां के मनुष्यों की काया पेड़ों से छोटी है जब वहां के पेड़ों की बड़ी बड़ी काया का ठीक पता नहीं जाना गया तब वहां के मनुष्यों की और नहर खोदने की वार्ता लिखना केवल मन घड़न्त संकल्प महा शङ्का के स्थान क्यों नहीं हैं किंतुहैं ही।

नं ७६ का विवेचन

चन्द्रमा हमको सदैव अपना एक भाग ही दिखलाता है।

शङ्का—यह कहना शङ्का का स्थान है क्योंकि सब सितारों को घूमता माना है और चन्द्रमा भी एक सितारा है इसलिये इसको घूमता मानने से एक तरफ के भाग का दीखना विरोध रूप है और चन्द्रमा के चित्र में सदैव एक सी दशा न रहना यह भी ठीक नहीं है एक भाग दीखने में एक ही सी फोटू आनी चाहिये सो चन्द्र के फोटुओं में हर साल धारियों की तबदीली देखी जाती है इस कारण वादी ही घूमने की पक्ष स्पष्ट करता है तब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक भाग दीखना कहना असम्भव है स्वीकृत वार्ता को खंडन करना है इस कारण स्ववचन घातक है !

किञ्च—चन्द्रमा का एक तरफ का भाग सदैव दीखता है यदि यह बात सत्यार्थ है तो पृथ्वी पर सदैव अंधेरी रात्रि होनी चाहिये क्योंकि जो अर्द्ध भाग पृथ्वी की तरफ है उधर चन्द्रमा क्रांति वाला नहीं है क्रांति वाला दूसरे भाग पर है जो सूरज की तरफ है क्योंकि उसी भाग पर तो सूरज से रोशनी लेकर चमकदार हो रहा है इधर के भाग पर तो सूरज की चमक पड़ती नहीं तब पृथ्वी की तरफ चांदने का क्या काम यह वार्ता सत्यता की हद पर तब मानी जाती जब चांदनी रात न होती और चांदनी रात होती ही है ता शङ्का का स्थान है ।

नं० ६८ का विवेचन ।

चन्द्रमा का व्यास २१६० मील है और पृथ्वी से $\frac{१}{५०}$ वां हिस्सा है । तोल में $\frac{१}{८०}$ भाग है ।

शङ्का—चन्द्रमा को छोटा कह कर पृथ्वी के पास बताना और सूर्य को बड़ा बता कर दूर कहना प्रत्यक्ष वाधित है क्यों कि सूर्य चन्द्र का उदय अस्त दक्षिणायन उत्तरायन होना सदृश है अन्तर केवल दक्षिणायन उत्तरायण में न्यूनाधिक है ऐसी व्यवस्था में सूर्य की प्रदक्षिणा में पृथ्वी को और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृथ्वी की प्रदक्षिणा में चन्द्रमा को बताना शङ्का का स्थान है। क्यों कि चन्द्र सूर्य का उदय अस्त में बड़ा दीखना पूर्व दिशा में वा दक्षिणायन उत्तरायन में सदृशता प्रतिविम्ब के आकार दृष्टि में भी समानता चाल में भी पूर्वोदय पश्चिमास्त होना समान ऐसे समान अवस्था दृष्टि गोचर होते भी सङ्कल्प कर घूमने की असमान दो अवस्था कहना यह तो दूरी का बताना समकोण की नाप से घूमती दौड़ती पृथ्वी पर से बताना असम्भव है क्यों कि घूमती दौड़ती पृथ्वी पर जिस कोण के गणित से दूरी बताई जाती है उस का बताना असम्भव है तब दूरी का और दूरी गिना छोटे बड़े का कहना फिर उस के व्यास का कहना असम्भव है देखो चित्र में सूर्य पृथ्वी चन्द्र की व्यवस्था और आकाश में चन्द्र सूर्य की समान व्यवस्था और चन्द्रमा का गमन पश्चिम में पृथ्वी का गमन पूर्व में ऐसा विपरीति सङ्कल्प प्रत्यक्ष दृष्टि वाधित होने से व्यास २१६० मील नहीं बन सक्ता।

किञ्च—चन्द्रमा पृथिवी के $\frac{१}{५०}$ वां भाग है यह कहना प्रत्यक्ष वाधित है क्यों कि इतना छोटा होते उस का विम्ब सूर्य के विम्ब के समान न दीखता गणित से वाधित है बिना गणित के मन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माना लिखना प्रमाण पद्धति में नहीं है जब सूर्य पृथ्वी से १५ लाख गुना और चन्द्र $\frac{1}{50}$ भाग है इस लिये चन्द्रमा से सूर्य ७५००००० गुणा हुआ इस कारण एक विन्दु समान दीखना चाहिये। यदि कहै सूर्य ८३०००००० मील दूर है और चन्द्र २४०००० मील, अब दूरी के भाग का भाग भी यदि दिया जाय तो दूरी सूर्य की ८३०००००० ÷ चन्द्र की दूरी २४०००० = ३८७॥ लब्धि का भाग सूर्य के बडे पने ७५००००० में देने से लब्धि १९००००० करीबवें भाग सूर्य से चन्द्र दृष्टि पड़ना चाहिये तब भी एक विंदु के आकार ही पडेगा और दृष्टि पड़ता है सूर्य के बराबरतातै चन्द्र को $\frac{1}{50}$ वां भाग कहना और सूर्य को १५ लाख गुना कहना दोनों में से एक असत्य होगा इस लिये स्वबचन घातक होने से चन्द्र को $\frac{1}{50}$ भाग बताना असम्भव है।

किञ्च—यदि चन्द्रमा $\frac{1}{50}$ भाग है तो आकर्षण शक्ति निकट में गुणा रूप बढ़ती है और दूरी पर वर्ग रूप घटती है तो दूरी २४०००० मील इस से यह हुआ कि गणित के मूजिब $\frac{1}{50}$ वें भाग बढ़ी और $\frac{1}{60}$ वां भाग घटी क्यों कि ४००० मील पृथ्वी के केन्द्र से पृथ्वी तक जिस से २४०००० मील ६० गुना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है तब यह सिद्धांत हुआ कि चन्द्रमा को पृथ्वी अपनी बड़ी शक्ति से अपनी ओर खींच लेगी और यह नं० २६ में स्वीकार भी किया है कि एक मिनट में १५ फीट चन्द्रमा को अपनी ओर खींचती है परन्तु इस का विरोधी लेख नं० ४० में लिखा है कि चन्द्रमा पृथिवी के संलग्न घूमता था अब दूर होता जाता है और २४०००० मील दूर हो गया है और बहुत दूर हो जायगा। चन्द्रमा को कहीं आकर्षण से पृथिवी खींचती है कहीं दूर होता जाता है ऐसा विरोधी रूप कथन जिस मत के अनुयायी कर रहे हैं वहाँ कैसे प्रमाण किया जाय कि चन्द्रमा $\frac{1}{50}$ वें भाग है या ५० गुणा है किसी बात का बल नहीं है इस कारण संशय रूप पदार्थ को विद्वान स्वीकार नहीं करते पक्ष धारी भलेई करो ।

नम्बर ६९ का विवेचन ।

दुर्बीन के धरने के मकान को देखते हैं तब शङ्का होती है मकान एक गोल टपदार घूमता हुआ जिस के ऊपरले भाग में एक खिड़की है जो कि दुर्बीन के सुख सन्मुख कर कर उस के द्वारा तारे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सितारों को देखते हैं जिस से दुर्बीन वा नेत्र की पुतली चल न जाय।

भावार्थ स्थिर रहै यह मकान दुर्बीन वा नेत्र की पुतली को स्थिर करने में अतीव सहायक है इस कारण प्रशंसनीय है परंतु वादियों के निष्फल है क्योंकि बिना स्थिर हुए तारे सितारों का दृष्टि होकर दूरी का नापना वा फोटू का लेना असम्भव है क्योंकि उन्होंने पृथ्वी का घूमना १ सिकंड में १४८६ फीट और दौड़ना १ मिनट में १११० मील माना है तब ऐसी अवस्था में तारे सितारे कैसे दीखे वा दूरी अथवा उन की व्यवस्था कैसे जानी जाय

भावार्थ—पृथ्वी के घूमने में नेत्र रूप केन्द्र जब तिल भर भी घूम जायगा तब तारे की दूरी आदि का ज्ञान होना असम्भव है तब पृथ्वी एक सिकंड में १४८६ फीट घूम जाती है तब कैसे घूमती दौडती पृथ्वी पर औज़ार काम दे सकते हैं? कदापि नहीं। इस कारण दुर्बीन के स्थिर करने को मकान बनाना वादियों के व्यर्थ है। क्योंकि दुर्बीन के ऊपरले शीशे पर जिस तारे की किरण पड़ती हैं वह स्थिर है और देखने वाले के नेत्र की पुतली स्थिर और दुर्बीन स्थिर होने पर तारे को देखा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाता है और उस का कुछ हाल लिखा जा सकता है यदि ये सब स्थिर होय और जिस स्थान पर से देखते हैं वह स्थान स्थिर न होय घूमता होय तो दुर्बीन से तारे का हाल नहीं दीख सकता है यदि पृथ्वी को पूर्व की तरफ घूमती मानना और तारे को पश्चिम की ओर तो दुर्बीन नहीं देख सकती है इस लिये दुर्बीन को देख कर हम निश्चित करते हैं कि पृथ्वी अचला है ।

इसी प्रकार हेतु फोटोग्राफ का जो कि अधिकतर दुर्बीन से सम्बन्ध रखता है क्योंकि दोनों ही शीशे के द्वारा कार्य करते हैं हम जब देखते हैं तब उस के कमरे के शीशे पर पदार्थ स्थिर ही होता है तब उस की तसवीर उतरती है और अनिस्थिर पदार्थ होगा तो उस की तसवीर भी ठीक न उतरेगी इसी कारण फोटो लेने वाले जिस की तसवीर लेते हैं उस को स्थिर कर लेते हैं तब तसवीर ठीक आती है ऐसे ही फोटू का स्थान भी स्थिर होने पर ही तसवीर आवेगी ।

भावार्थ—फोटू का स्वभाव ही ये है कि स्थिर स्थान पर से स्थिर पदार्थ होने पर ही तसवीर ठीक ले सकते हैं । यदि इस में शङ्का करे कि उडते जानवरों की और चलते जहाज पर फोटू की तसवीर कैसे ली जाती है वा बाईसकोप में कैसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तसवीर चलती ली जाती है तातै उक्त आप का कहना शङ्का का स्थान है। ऐसी शङ्का इस के विचार करने से नहीं होती हैं क्यों कि फोटू के तसवीर लेने का काल बहुत सूक्ष्म है एक सैकिंड काल जो टमकार मात्र है उस से भी हज़ारों हिस्से कम है इस कारण पदार्थ का फोटू उड़ती चलती वस्तु का उस काल में जो पदार्थ जहां जिस स्थान में स्थिर में जो व्यवस्था होती है वह उसी समय उस के अक्स पड़ने से उसी काल की फोटू की तसवीर उड़ते जानवरों की उसी माफिक आ जाती है इसी कारण बाइसकोप में अनेक अंश रूप तसवीर एकत्र होकर एक चलती तसवीर दीखने लगती है और चलते जहाज़ पर भी फोटू का शीशा जो केन्द्र पर है उस की परिधि वह जो कि शीशे से सम्बंध रखती है उस के ऊपर जो पदार्थ जहां स्थिर रूप होगा उस की तसवीर उसी समय की उसी रूप आ जायगी इस सर्व कथन से यही सिद्धाँत होता है कि स्थान स्थिर, फोटू स्थिर होने पर ही फोटू की तसवीर उतरती है उस का स्थान जो पृथ्वी, यदि घूमती होगी तो केन्द्र स्थानी फोटू की परिधि, ज्यों ज्यों पदार्थ दूरी पर होगा त्यों २ बढ़ती चली जायगी यदि फोटू स्थानी पृथ्वी केन्द्र तिल मात्र भी घूम जाय तो पदार्थ जो तारे लाखों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करोड़ों मीलों पर हैं उन की परिधि लाखों करोड़ों मील की होने पर तसवीर ठीक नहीं आ सक्ती। जिस पर तो पृथ्वी जो फोटू का स्थान है वह कितने ही फीट घूम जायगी तब तारे की तसवीर कैसे आ सकती है। यदि इस में कोई कहै कि तुम ने प्रथम दुर्बीन के देखने वाले के नेत्र को केन्द्र बनाया जिस से पृथिवी के घूमने वा चलने से दोष दिखाया। यह दोष नहीं आता है क्यों कि नेत्र को केन्द्र बना कर तारे को परिधि पर चलने से दोष आया परन्तु नहीं तारे को केन्द्र बना कर धरती की ओर परिधि बनाई जाय तो चाहे जैसी धरती दौड़ो वा घूमो तारे लाखों मील दूरी के कारण सर्व धरती पर लाखों मील तक परिधि होने से दुर्बीन के देखने में बाधा न पडेगी तथा उस के सम्बंध से तसवीर का फोटू होने में बाधा न होगी सब जगह से फोटू की तसवीर ली जायगी इसी कारण चलते जहाज़ वा नाव पर भी फोटू की तसवीर खैंची जाती है ऐसे कहने वाले की वार्ता विचार करने से प्रमाण से बाधित होती है। यदि तारे को केन्द्र माना जाय तो दुर्बीन के मकान बनाने की वा मकान के टप्प में छिद्र बनाने की क्या आवश्यकता थी वह तो परिधि पर थे सब तरफ फोटू की तसवीर खिच जाती।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और जहाज़ पर से फोटू लियाजाय गा तो भी तारा केन्द्र पर नहीं रह सकता फोटू ही केन्द्र पर रहने से निर्वाह होगा और फोटू केन्द्र पर होगा तो धरती को अवश्य स्थिर मानना पडेगा।

यदि यही न होना मान लिया जाय तो भी तसवीर सर्व एक माफिक नहीं आ सकती जैसे किसी मकान की तसवीर सन्मुख से ली जाय, और यदि कमरा दूर हो जाय वा मकान दूर हो जाय तो दोनों तसवीर समान नहीं आयगीफिर फोटूकी तसवीरों पर क्या नियम रहे इस कारण निश्चित हुआ कि फोटो की तसवीर स्थिर स्थान से ही ली जाती है तातै इसका स्थान पृथ्वी वा रेल वा जहाज, फोटू के तसवीर काल में जो कि बहुत थोड़ा है उस काल में सर्व ही स्थिर है यदि उनमें घूमने का संकल्प किया जाय तो फिर पदार्थों का अक्स उस दुर्बीन के शीशे पर पड़ना असम्भव है और स्थान को स्थिर मानने से ही सर्व फोटू का कार्य नियम पूर्वक हो सक्ता है इस कारण पृथ्वी सर्वतो भाव से अचला है। अचल (स्थिर) पृथ्वी के होने पर ही हेतु दोनों दुर्बीन तथा फोटू के अपना कार्य करने की सफलता कर सक्ते हैं पृथ्वी घूमने वा दौड़ने पर इनके कार्य में सैकड़ों दोष विचार करने से उत्पन्न होते हैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस कारण पृथ्वी अचला है।

जब पृथ्वी अचला सिद्ध होती है तब सूर्य चलता स्वयं सिद्ध है इस पर:—

मि० हार्सल का लेख

मि० हार्सल (Herschel) साहब ने एक बड़ी भारी दुर्बीन अधिक दूरी के देखने की बनाई, जिस का हाल एक समाचार पत्र से सुना कि एक सिकंड में १८६००० मील की चाल रोशनी की है। ऐसी दो वर्ष में पहुंचे इतनी दूर के देखने की थी। मि० सर रौबर्ट ऐसवाल अपनी रची पुस्तक दी स्टोरी० में लिखते हैं कि मि० हार्सल साहब एक दिन तारों की जांच करने को दुर्बीन लगा कर नीचे बैठ देख रहे थे और उनका हाल कहते जाते थे और उनकी बहिन कैरोलिन (Carolin) एक कुर्सी पर बैठी एक कमरे में लिखती जाती थी एक घड़ी भी सामने रक्खी थी जिस में समय (Time) देखती जाती थी।

हार्सल साहब कहते थे दुर्बीन में एक तारा नजर आया और वह आगे को बढ़ कर चला उसके बाद दूसरा तीसरा आते हुए चले जाते हैं उसका हाल उन्होंने कहा और उनकी बहिन ने बड़ी बुद्धिमानी से लिखा। गरज यह है कि उन्होंने यह समझलिया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कि तारे अपने प्रकृतानुसार किसी दिशा को जा रहे हैं। तब उन्होंने इसी को प्रगट किया कि पहले ज्योतिषी समझते थे कि तारे कुछ स्थिर हैं कुछ चलते हैं यह बात नहीं है सर्व तारे घूमते हैं और प्रकृतानुसार किसी दिशा को जा रहे हैं। अब इस में यहां विचारने का स्थल है कि पहले ज्योतिषी पश्चिम विद्वानों ने तारों को स्थिर बनाने से ही तो पृथ्वी को घूमती बनाया था जिस स्थिर तारे के हेतु से पृथ्वी को चर बनाया था उस के विशेष ज्ञान होने पर जब तारों को घूमता वा चर बनाया और पहले तारे स्थिर को विशेष ज्ञान वा बडी शक्तिवान दूरबीनों से यह निरधार किया कि तारे चर और घूमते हुए हैं तब हेतु के विरुद्ध होने पर साध्य जो पृथ्वी घूमती और चर थी वह उस के विरुद्ध स्थिर क्यों न हुई ? इस कारण सत्य के खोज करने वाले मि० हार्शल जो कि पश्चिमी विद्वानों में बडे विद्वान ज्योतिषियों में गणना जिन की, ऐसा कौनसा वादी है जो उन के नाम को नहीं जानता हो और उन का विश्वास नहीं करता हो जब वह बडे विश्वास के पात्र हैं तो हम भी उन की वार्त्ता पर ध्यान करते हैं तो पृथ्वी सर्वतो भाव से अचला है यही प्रमाण होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं० ७० का विवेचन

पृथ्वी की दूसरी ओर में ज्वार भाटा चन्द्रमा पृथ्वी को खींचता है तब होते हैं।

भावार्थ—अपनी आकर्षण शक्ति से चन्द्रमा सर्व वस्तुओं को पृथ्वी वा समुद्र के जल को भी अपनी तरफ खींचता है जिस से ज्वार भाटा होते हैं।

शङ्का—चन्द्रमा में आकर्षण शक्ति थोड़ी है और पृथ्वी में अधिक है। क्योंकि पृथ्वी पिंड में ५० गुनी और तोल में ८० गुनी मानी है तब पृथ्वी की आकर्षण शक्ति चन्द्रमा को अपनी तरफ खींच सकती है क्योंकि बलवान शक्ति को धारे है और मानी भी गई है देखो नं० २६ में एक मिनट में १५ फीट चन्द्रमा को वा उस के बराबर के पिंड को पृथ्वी अपनी ओर खींचती है तब यह कहना कि चन्द्रमा अपनी आकर्षण शक्ति से पृथिवी को खींचता है असंभव है और समुद्र के जल को खींचना तो महा असंभव है क्योंकि जो थोडे जल वाली वेला नदी गढे आदिकों के को न खींचे और बडे समुद्र के जल को खींच ले और वर्षा के बादलों की बूंदें जो उस के निकटवर्ती तिन को न खींचे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और समुद्र के जल को खींच ले—कितना असंभव है ? तिस पर भी एक बड़े आश्चर्य कारक वार्ता इसी न० में देखो कि पृथिवी के समुद्र के जल को चन्द्रमा अपनी आकर्षण शक्ति से ऊपर को खींचता है तब समुद्र में ज्वार भाटा होता है। जो ऐसा होता है तब प्रश्न होता है कि पृथ्वी की जिस ओर चंद्रमा होता है वहां के समुद्रों में तो ज्वार भाटा चंद्रमा से होते हैं परन्तु उसके पिछले भाग पर कहीं २ समुद्र में ५०—५० फीट ऊंचे ज्वार भाटे होते हैं वह काहे से होते हैं क्यों कि समुद्र में तो ज्वार भाटा सर्व जगह होते हैं तब उस का उत्तर देखो न० ७० में कि चन्द्रमा पृथिवी को अपनी तरफ खींच लेता है तब पृथिवी ऊंचे को उठती है तो समुद्र का पानी पृथिवी को छोड़ कर अलहदा होता है और नीचे को लटक आता है वही ज्वार भाटा होता है भला यह वार्ता किसी की समझ में आ सकती है—गप्प है। चंद्रमा जो हीन आकर्षण शक्ति का धरने वाला तो पृथिवी को ५० फीट तक खींच ले और महा आकर्षण शक्ति का धरने वाली पृथिवी चंद्रमा को न खींच सके और समुद्र का पानी नीचा हो जाय उसे भी पृथिवी ना खींच सके और ज्वार भाटा होने दे-क्या यह वार्ता मध्यस्थ पुरुषों की समझ में आ सकती है ? कदापि नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नम्बर ७१ का विवेचन ।

भूगोल भ्रमण वादियोंके ग्रहण पड़ना असंभव है। थाली (रकाबी) की छाया पृथ्वी पर थाली के बराबर पड़ती है और वह (थाली) ज्यों २ सूर्य की तरफ जाती है त्यों २ छाया घटती जाती है और अति दूर पहुंचने पर (छाया) नष्ट हो जाती है यह प्रत्यक्ष देखा जाता है।

शङ्का—ऐसा होता ही है परन्तु यह वार्ता तुम्हारे (वादियों के) सिद्धांतों को नष्ट भ्रष्ट करती है क्यों कि पृथिवी से चन्द्र २४०००० मील दूर होने से उस की छाया सूर्य तक जाने में नष्ट हो जाती है तब सूर्य ग्रहण होना असम्भव है तिस पर चिर-स्थायी वा सर्वग्रासी कहना तो महा अतिशय रूप असम्भव है अथवा पृथ्वी की छाया चन्द्रमा तक पहुंचने से पहले ही नष्ट हो जाती है वा एक बिंदु प्रमाण रह भी जाय तो चन्द्र ग्रहण चिरस्थायी वा सर्वग्रासी का होना असम्भव है। फिर चन्द्र ग्रहण में पृथ्वी की छाया गोल पड़ती है ऐसा कह कर पृथ्वी को गोल बताना महा शङ्का का स्थान है और भी इस से वादियों के अनेक सिद्धांतों में बाधा आती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नम्बर ७२ का विवेचन

सूर्य एक साल में १८० फीट सिकुड़ता जाता है और अंत में ठंडा हो जायगा ।

विद्वानों के कथन की विचित्रता

एक महती सभा में यज्ञदत्त ने देवदत्त से पूछा कि तुम को यह बड़ा भारी लम्बा चौड़ा पहाड़ दीख पड़ता है ?

देव०—कहने लगा मेरे नेत्र की ज्योति ठीक नहीं है मुझे ठीक नहीं दीख पड़ता ।

यज्ञ०—भला तो तुम को क्या दीखता ? तुम ग्रास रोज खाते हो उसको कैसे देखके खाते होगे ?

देव०—भाई देखने का हाल मेरा कुछ न पूछो नाज के कण का करोड़वां अंश दीखता है मेरी आंख इतनी सूक्ष्म वस्तु को देख सकती है यह तो ग्रास जिस में अनेक कणों का सम्बंध है इसको तो भली भाँति देख के खा सकता हूं ।

यज्ञ०—वाह जी वाह ! आप के देखने की और मुख से कहने की बड़ी विचित्रता है कि पहाड़ तो न दीखे और नाज के कण का करोड़वां हिस्सा दीखता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देव०—हां यदि ऐसी विचित्रता न हो तो मेरे वचनों के लेखों को कोई नेत्र खोल कर देखने वाला है ! कोई भी नहीं मेरी लेखनी विचित्र रङ्ग की भरी हुई और जिस पर भी विचित्र चमत्कारी को लिये हुये मेरा लेख, भाई तब ही तो संसार भर सर्वज्ञ वाक्य की सी दृष्टि डाल के इस को देखता रहता है।

देवदत्त की इस वार्ता को सुन कर सभा के सब लोग बिस्मय रूप हो कर, खिल खिला कर हंस पडे। और कोई सभ्य कहने लगे कि:—

सभ्यजन ! देवदत्त के कहने पर क्या हंसते हो हमने वादियों के सिद्धांतों में इस से भी करोड़ों गुनी पहले ही से ऐसी वार्त्ता सुन रक्खी हैं जिस को वर्तमान के युवक बड़ी बड़ी पदवी (डिगिरी) धारक भी परमात्मा की बानी के समान जान कर देखते हैं और उस के विश्वास में मग्न हो रहे हैं वह क्या है ? वह यह है कि सूर्यका व्यास ८६७००० मील है और एक पहाड़ से भी बड़ा है परन्तु उस के बडेपने का निरधार निश्चित न जानते हुए उस की गणित को ठीक न कर सके।

कोई विद्वान तो सूर्य को पृथ्वी से १५००००० गुणा बताते हैं (देखो नं० ५४ में) और कोई१३००००० गुणा बताते हैं (देखो नं० ५३ में)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यदि सूर्य का बड़ापना निरधार रूप होता तो गणित से २००००० गुने का फर्क न पड़ता क्योंकि गणित एक ऐसा अकाट्य सिद्धांत है कि निश्चय रूप पदार्थ में एक अंश का भी फर्क नहीं पड़ सकता। तब तो सूर्य की गणित से २ लाख गुणे का फर्क पड़ने से यही निरधार होता है कि उनको सूर्य का बड़ापना निश्चित नहीं हुआ। (भावार्थ) उनकी बुद्धि में सूर्य का बड़ा विस्तार न आ सका।

अब उसी सूर्य के जानने के विषय में एक बात (देखो नं० ७२) वादी साहब लिखते हैं कि सूर्य एक साल में १८० फीट सिकुड़ता जाता है। भला इस नेत्र के विषय की वा इन नेत्रों से देखने के यन्त्रों की क्या विचित्रता कह सकते हैं कि जिस सूर्यके बडेपन को तो न देख सके जिसके क्षेत्रफल में अरबों मील का फ़र्क और एक साल पीछे १८० फीट के सिकुड़ने को जिसकी बुद्धि वा यन्त्रों ने निश्चित कर लिया जो कि सूर्य की मुटाई से २ करोड़ ५१ लाख करीब भाग है उसका बोध जिनकी बुद्धि कर सकी और उस सिकुड़न से २ करोड़ ५१ लाख गुणे सूर्य की मुटाई में जिनकी बुद्धि काम न कर सकी।

भला जिस देवदत्त की वार्ता पर सभागण हंसते थे उससे कहीं अधिक विस्मयकारी वार्ता जिस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर हास्य न करना और उसको श्रद्धा की पक्ष से सत्य सम्भावना करना—क्या यह पक्षपात नहीं है क्या यह बुद्धिमानों को विचित्रता दिखाने वाली वार्ता महाशङ्का का स्थान नहीं ? है ही। इस से भी अधिक शङ्का नं० ६० में है।

वादी—चन्द्रमा में स्वयं क्रांति नहीं है किंतु सूर्य से क्रांति होती है।

प्रति०—जब चन्द्रमा में क्रांति सूर्य से होती है तब रात्रि को चन्द्रमा सदैव एकसा दीखना चाहिये सो नहीं क्रांति घटती बढ़ती है।

वादी—चन्द्रमा पृथ्वी की प्रदक्षिणा देता है इस कारण जब पृथ्वी बीच में आती है तब सर्व श्याम अंधेरी पक्ष में दीखता है और पृथ्वी की प्रदक्षिणा में ज्यों ज्यों आड़ में आता है त्यों त्यों दिन दिन प्रति १ कला बढ़ती बढ़ती दिन १५ में सर्व प्रकाशवान उजेली पक्ष में दीख पड़ता है।

प्रति०—यह बात रात्रि में चन्द्रमा में तो सम्भव दीख पड़ती है परन्तु दिवस में चन्द्रमा के देखने से अत्यन्त असम्भव है क्योंकि रात्रि में तो सूर्य के सन्मुख से पृथ्वी घूम कर हटना चन्द्रमा पर क्रांति का क्रम से बढ़ना सम्भव होता है परन्तु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब दिवस में पृथ्वी पर मनुष्य खड़ा हुआ एक तरफ चन्द्रमा को देखता है और उसके सन्मुख सूर्य को देखता है तब सूर्य की क्रांति चन्द्रमा पर सारे दिन एक ही तरह की पड़ती है तब चन्द्रमा दिवस में सदैव १ पक्ष १५ दिन लाई समान क्रांति वाला दीखना चाहिये सो जैसे रात्रि में अपनी क्रांति चन्द्रमा दिखाता है तैसे ही दिन में भी दिखाता है इस कारण मालूम होता है कि चन्द्रमा सूर्य से क्रांति वान नहीं होता दिवस में यह प्रत्यक्ष वाधित है यदि सूर्य से चन्द्रमा क्रांतिवान होता तो दिन में सूर्य के सन्मुख देखते हैं वह सदैव एकाकार दीखता उसके घटने बढ़ने का कारण जो पृथ्वी की आड़ वह दिन में नहीं रहती पृथ्वी का स्थान जुदा है न उसकी कोई आड़ है तब दिन में चन्द्रमा की कलाओं का घटना बढ़ना सूर्य से सम्भव नहीं है तातै भ्रांति रूप वादी की उक्त वार्ता है।

यह चन्द्रमा स्वयं क्रांतिवान संभवित होता है।

इस चन्द्रमा की क्रांति के घटने बढ़ने में और ही कारण है जो शास्त्रांतरों से देखने योग्य है।

नं ७३ का विवेचन

आकर्षण को मानने वालों की असम्भवता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकर्षण से तारों का कोई सम्बंध नहीं-बुद्ध और चन्द्रमा की चाल से त्रुटि पाई जाती है-ऐसा सैसिल जी डौलमेज, ऐम, ए, ऐल, ऐल, डी, डी, सी, ऐल (Cecil G. Dolmage. M. A L .L. D.D.C.L.) ऐस्ट्रोनोमी आफ टूडे (Astronomy of today) किताब में लिखा है, फिर हम कैसे प्रतीत कर सक्ते हैं कि आकर्षण शक्ति सम्भव है-बुद्ध जो कि सूर्य से ३०३० मील की दुरी पर कहने वाले और चंद्रमा को भी नज़दीक बताने वाले आकर्षण में त्रुटि बताते हैं तो बहुत दूरी पर ठहरने वाले यूरेनिस व नेपचून २७८२०००००० मील सूर्य से तारे दूरी पर हैं उनके जानने से आकर्षण की सम्भवता कैसे हो सकती है। इस कारण आकर्षण शक्ति पर यकीन करना आकाश के फूल के समान असंभव है-

और भी आकर्षण के मानने में त्रुटि देखो परस्पर नं० २१, २२, २३, २४, २६ में इस कारण से आकर्षण की शक्ति से पृथिवी चन्द्रादि का बंधन मानना भ्रांति है।

भावार्थ-आकर्षण का संकल्प करना ही व्यर्थ है

नम्बर ७४ का विवेचन।

कलकत्ते के समुद्र की सतह से पृथिवी की दूरी तथा ऊंचाई का ब्योरा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शङ्का—समुद्र की सतह से पृथिवी के शहरों की ऊंचाई देखने से यह ज्ञात होता है कि करीब एक मील में ८ इञ्च की ऊंचाई है सो यह प्रत्यक्ष सपुष्ट है क्योंकि पानी नीची तरफ को ढलता है (चलता है) सम चाल से तब एक मील में ८ इञ्च का ढाल होय परन्तु यह सर्व चाल सम स्थल भूमि पर सत्यार्थता प्रकाशती है और जिन्होंने पृथिवी का व्यास ७८२६ मील माना है उनके गोलाकार पृथिवी पर उतना ढाल संभवतः नहीं है। उस के ढाल में बड़ा अन्तर है जैसे हरद्वार से गङ्गा चली और कलकत्ते के समुद्र में ८०० मील पर जा कर मिली उस पृथ्वी का ढाल ५० मील का होने से गङ्गा का वेग अत्यन्त होना चाहिये यह असम्भव है ऐसे ही सिन्धु का बहाव किरांची के समुद्र में मिलना असम्भव है दोनों का कथन समान है तिस पर पृथ्वी का घूमना जिस से ऊंचे स्थान नीचे होते हैं इस में महा शङ्का है जिस को न० १ में दिखा चुके हैं तातै गोल घूमती दौड़ती मानने वालों के उक्त लेख महा शङ्का के कारण हैं।

न० ७५ का विवेचन।

भूगोल भ्रमण वादियों ने टाइमटेबिल में दो समय माने हैं दुपहर से पीछे पी० एम० और अर्ध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रात्रि से पीछे ए० एम० और ए० एम० के पश्चात् तारीख वा बार सर्व जगह सर्व पृथ्वी पर पलटना माना है तब २४ घंटे पीछे सर्व जगह तारीख वा बार पलटना चाहिये सो है नहीं जब १ तारीख हिन्दुस्तान में रविवार है तब अमरीका में २ तारीख सोमवार माना गया है जब जहां तारीख पृथ्वी के दो भाग में पलटी जाती है तब २४ घन्टे में तारीख पलटना सम्भव नहीं है १ दिन का फरक तारीखों में एक पृथ्वी गोलाकार में मानना यह कार्य कौन सी बुद्धिमत्ता का है यदि यह कहै कि सर्व पृथ्वी पर सर्व जगह एक ही तारीख और एक ही बार होता है यह बिना समझे वह कहते हैं जिन्हों ने सर्व देश की तिथि और बार नहीं देखे हैं। इसको बडे २ विद्वान भू० भ्र० वादी मानते हैं कि तारीख गोल पृथ्वी पर सर्वत्र पलटी जाती है जो जेबघड़ी पास रख कर यात्रा करते हैं उन को घड़ी की तारीख अवश्य पलटनी पड़ती है इस में बडे २ दोष उपस्थित होते हैं हिन्दुस्तान में १ तारीख रविवार तब अमरीका में २ तरीख सोमवार होने से तार की खबर से सोना, चांदी, रुई वगैरह के व्यवहार में बड़ी गड़बड़ी होती है किसी तारीख का सौदा दूसरी तारीख में होने से व्यवहार ठीक नहीं होता और जिस ने अमरीका से तार दिया २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तारीख को और हिन्दुस्तान में १ तारीख मानी गई तो यह कौन स्वीकार करसक्ता है कि २ तारीख का तार दिया १ को पहुंचे ऐसे संकल्प असत्य ठहरते हैं और पृथ्वी तो घूम कर १२ घन्टे में एक समय ही में जहां दिन था वहां रात्रि और जहां रात्रि थी वहां दिन कर लेती है तब ए० एम० जो अर्ध रात्रि के पीछे सर्व जगह तारीख का पलटना २४ घन्टे में बाधित ठहरता है इस कारण टाइमटेबिल का संकल्प भ्रांति रूप है।

किञ्च—टाइमटेबिल सर्व जगह रात्रि के १ बजे से तारीख पलटी जाती है जिस में दोष दिखा चुके हैं प्रथम दोष १२ घंटे में सर्वत्र पृथिवी पर दिन रात्रि हो जाती है पृथ्वी के घूम से जहाँ रात्रि थी वहां दिन और जहां दिन था वहां रात्रि क्यों कि दोनों का समय १२ घन्टे अभिन्न है जब रात्रि के १ बजे से तारीख २४ घंटे में पलटी जाती है तब २४ घंटे में २ दिन २ रात्रि सर्व पृथ्वी पर होते हैं इसी कारण भू० भ्र० वादी कहीं पहली कहीं दूसरी तारीख पृथ्वी पर बताते हैं यह द्वितीय दोष ऐसे बडे २ दोष तब ही उपस्थित होते हैं जब पृथिवी को घूमती मानते हैं और २४ घंटे में तारीख पलटी ही जाती है इस पर भू० भ्र० वादी अधिक भ्रमजाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का जाल बिछा कर अनेक विकल्प कर भोले पुरुषों को भ्रम जाल के चक्कर में लाकर पृथिवी को घूमती बताते हैं इस से यही निरधारित होता है कि पृथिवी अचला है स्थिर है जब ही २४ घण्टे में १ दिन की संभावनाऔर तारीख न पलटना साथ होता है तात्पर्य यह है कि चाहे जैसा भ्रमजाल से कहो परन्तु सत्यार्थ वार्ता की सदैव जय होती है। इस कारण टाइमटेबिल की टाइम घडी देख कर विचार शील पुरुषों को टाइम को देख कर धोखे के जाल से निकस कर पृथिवी के घुमाने के लिये भू० भ्र० वादियों को कितना भ्रम जाल का बिछौना बिछाना पड़ा है १२ घंटे का दिन जिस से २४ घंटे में सर्व पृथिवी पर अभिन्न समय होने से दो बार दिन में पृथिवी पर दिन रात्रि को होना सब देशों में तारीख का फेर फार करना पड़ा है। ऐसे करने से तो इस पृथिवी को अचला कहना ही सत्यवाद है।

किंच—ग्रीनच देश से जब पी० एम० का समय अर्ध रात पीछे शुरू होता है तब तारीख पलटी जाती है।

भावार्थ—चौबीस घंटे बाद १ तारीख की जगह २ होती है रविवार की जगह सोमवार होता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है यह भूगोल भ्र० वादियों का सिद्धांत है इस से यह निश्चित होता है कि पृथिवी स्थिर है घूमती नहीं है क्योंकि पृथिवी पर जितने देश हैं वह सब २४ घंटे में पूरण हो जाते हैं तब तारीख ग्रीनच में पलटी जाती है यदि पृथिवी को घूमती मानो तो भू० भ्र० वादी जो तारीख २४ घंटे के पहले ही पलटने का साहस करते हैं यह नितान्त भ्रम जाल का जाल है यदि तारीख २४ घंटे में पलटी जाती है तो पृथिवी स्थिर होती है और घड़ी लगा कर विदेश में गमन करने वालों को बीच में घड़ी वा टाइम पलटना पड़ता है तो यही भ्राँति का धोखा है इस कारण धोखे में न आ कर पृथिवी को अचला (स्थिर) ही मानना सत्य की खोज करना है।

नं० ७६ का विवेचन

मैन सुरेशन सफ़ा २५ बिना पार जाये नदी का फाट बताने का हिसाब जो दिया है उस हिसाबके देखनेसे प्रतीत होता है कि पृथिवी गोल नहीं है समधरातल है गोलाकार में त्रिभुज नहीं बन सकता समधरातल पर ही बन सकता है। क्योंकि गणित स्वयंसिद्धि अकाट्य है, इस में कोई संदेह नहीं है, जो कि स्कूलों में विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है वह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ठीक नहीं—गोल पर त्रिभुज नहीं बन सकता और बिना त्रिभुज नदी का फाट नहीं नापा जा सकता गोल पृथिवी पर त्रिभुज की रेखा सीधी नहीं बनती सीधे त्रिभुज बिना फाट नहीं नापा जा सकता, इस कारण पृथिवी को गोलाकार मानना असंभव है, गोलाकार में दो रेखा तो सीधी सम्भव हो सकती हैं परन्तु तीसरी रेखा जो परिधि में गोल है उस का सीधा मानना असम्भव है, इसी कारण बिना जाने नदी के फाट का नापना गणितज्ञों ने समस्थल पर स्वीकार किया है।

वादी—नदी का फाट थोड़ी दूरी में होता है इस कारण गुलाई में थोडा सा फर्क गणित में छोड दिया है। वादी ने थोडें फाट में गुलाई का फर्क छोड दिया परन्तु जहाँ गणित से पृथियी पर जल की लम्बाई हज़ारों मील की है उस की लम्बाई में तो बहुत फर्क पडेगा तब गणित बाधित समझी जायगी नदी के फाट में जो थोडा सा फर्क समझ कर छोडते हो वही फर्क तो जितनी पृथ्वी बडी है उस में पडता है इस कारण पृथिवी को गोल बना कर नदी के फाट की थोडी गुलाई के फर्क को क्यों छोडते हो ? गणित तो फाट के गुलाई की और पृथिवी की समान है तातै गणित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की भूल से ठीक होता है कि पृथिवी गोलाकार नहीं, किन्तु समधरातल है। क्यों कि नदी का फाट त्रिभुज से ही नापा जाता है।

नं० ७७ का विवेचन

जो नं० ७६ में पृथ्वी पर नदी के बिना जाने फाट के फाट जानने को त्रिभुज बना कर गणित से फाट निकासा है और पानी नदी वा समुद्र का गोल सतह में माना है और त्रिभुज गोल में बनता नहीं वह समधरातल पर बनता है इस कारण गणित बाधित है वही नं० ७७ में पानी के समुद्र की गुलाई मानने को सम्पात रेखा की गणित को काम में लिया है और वह सम्पात रेखा समधरातल में काम देती नहीं वह गोल में काम देती है इस कारण निष्फल है इस से गणित बाधित है भावार्थ पानी की सतह गोल और पानी नदी वा समुद्र का साध्य दोनों जगह एक तब नदी में त्रिभुज की गणित से कार्य साधन करना और समुद्र में सम्पात रेखा से साधन करना जब एक साध्य की दो प्रकार की गणित से साधन करना तब भ्रांति रूप क्यों नहीं है ऐसे विरुद्ध साधन से साध्य का सत्यार्थ मानना इस से अधिक असंभवता (भ्रांति) क्या होगी ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस कारण गणितज्ञों को ऐसी वार्ताओं से सन्तोष नहीं होता किंतु असंतोष ही होता है।

या तो साध्य नदी समुद्र का पानी समस्थल रूप मानना था या गोल रूप मानना था दोनों साधन में कहीं गणित कहीं दृष्टि गोचर करानी थी दो गणित से एक साध्य का साधन करना अत्यन्त भ्रम जनक है इसी गणित से सपुष्ट होता है कि पृथ्वी गोल और घूमती नहीं है पृथ्वी समधरातल और अचला है जो नदी के बिना जाने फाट के त्रिभुज की गणित से अकाट्य से बता रही है।

और सम्पात रेखा की गणित दिखा कर पृथ्वी को गोलकार दिखा रही है क्यों कि एक साध्य को दो साधनों से साधन कर सिवाय भ्रम जाल के दूसरा जाल नहीं है इस को विद्वान स्वयं अनुभव कर पक्षपात छोड़ देंगे।

नं० ७८ का विवेचन।

आकर्षन शक्ति में पदार्थ ऊपर नीचे दोनों तरफ हलका हो जाता है इस लेख से साफ जाहिर होता है कि केन्द्र के पास भी हलका हो जाता है यह लेख स्ववचन वाधित है देखो नं० ३२ में विरोध पास जाने से बढ़ जाता है दोनों परस्पर विरोध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होने से सत्यार्थ पद को नहीं पा सकते तातै भ्राँति है ।

नं० ७९ का विवेचन

गोलाकार पिंड पर दूरी देखने की रीति उस की गणित सुगम है देखो मैन्सूरेशन पृष्ट ३५ में उस उक्त वार्ता को बार बार लिख कर आप पृथ्वी को गोलाकार बनाना चाहते हैं सो पृथ्वी गोलाकार नहीं है पृथ्वी समधरातल है कहीं ऊंची कहीं नीची प्रत्यक्ष दृष्टि गोचर है गोलाकार बनाने में अनेक दूषन दिखा चुके हैं देखो न० २ न० ७६ गणित विरुद्ध उन के देखने से भूगोल भ्रमण वादियों की भ्रांति रूप पोल निकल जायगी उस पोल को कहीं जगह न मिलेगी तो अनंत आकास में जगह अवश्य मिलेगी फिर क्या है चाहिये जैसी पोल रचना करते जाइये सर्व ओर से ७२०००० बहत्तर लाख विद्यार्थी जो वर्तमान काल से स्कूल और कालिजों में पढ़ रहे हैं और उन के पढ़ाने वाले टीचर (मास्टर) २८०००० अट्ठाइस लाख उनमान १ करोड़ पुरुषो की ध्वनि एक ही काल श्रवन गोचर होगी वहां कौन सुनता है नकारे में ये तूती की आवाज़ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नम्बर ८० का विवेचन

कई तारे ऐसे हैं जो वायु मंडल में आकर नष्ट हो जाते हैं नष्ट होने वाले तारे तारे नहीं हैं वह एक उल्कापात है अग्नि आदिके संयोग में चमत्कार रूप दीखते हैं इन को तारे समझना भ्रांति है क्यों कि तारे स्थिर वा घूमने वाले अनादि के हैं वा अनंत काल तक रहते हैं जैसे सूर्य चंद्रग्रह नक्षत्र आदिक भी नष्ट नहीं होते यदि अनाद्यनंत पदार्थ भी नष्ट हो जाय तो भूजल आदि पंचभूति भी नष्ट हो जाय तदिसून्यता का प्रसंग हो ऐसे फल सून्य पदार्थों को कौनसा बुद्धिमान् है जो स्वीकार करै बुद्धिमान तोफल विचार हो कर स्वीकार करते हैं यहां संक्षेप मात्र से यह ८० वार्ता भूगोल भ्रमण वादियों की मानी हुई का दिग् मात्र दिखाने के लिये विवेचन किया है इन के अनंतर और भी ऐसी वार्ता बहुत पाई जाती हैं जिन के कथन में भ्रांति ही भ्रांति दीख पड़ती है इस कारण यहां ग्रंथ के अधिक बढ़ने के भय से उपरामता की जाती है यदि कोई साहिब इन भ्रांतों के देखने की इक्छा रखते होंय तो वह लिख कर भेजें उनकी अगले भागों में भ्रांति दूर करी जायगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi